शृंखला: मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़ के उपदेशों से 3

ईमान के स्तम्भ

मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

लेखक

डॉक्टर अब्दुल-मुहसिन बिन मुहम्मद अल-क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

مترجم بالهندية

ईमान के स्तम्भ

मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

किताब डाउनलोड करने हेतु कोड को स्कैन करें

a-alqasim.com

ईमान के स्तम्भ

मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

लेखक

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मुहम्मद अल-क़ासिम

इमाम व ख़तीब: मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो बड़ा दयावान अत्यंत कृपालु है।

प्रस्तावना

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो जो सारे ब्रह्मांड का प्रभु है, रहमत और शांति हो हमारे प्रिय पैग़ंबर मुहम्मद पर, तथा आपके परिवार और सभी साथियों पर।

अम्मा बा'द:[1]

ईमान की छह बुनियादें हैं जिन से ईमान बनता है, कोई भी व्यक्ति उन सभी पर ईमान लाए बिना मुस्लिम नहीं हो सकता, यदि उनमें से एक भी बुनियाद नष्ट हो जाती है; तो व्यक्ति धर्म से निकल जाता है।

ईमान की वास्तविकता: दिल की स्वीकृति, जीभ का उच्चारण और अंगों का कर्म है, और यह प्रभु की आज्ञाकारिता से बढ़ता है और अवज्ञा से घटता है।

आदेश -वाजिब (अनिवार्य) हो या मुस्तहब (वांछनीय)- का अनुपालन करना और निषिद्ध -मकरूह (ना-पसंदीदा) हो या हराम (वर्जित)- को छोड़ना ईमान का हिस्सा है।

ईमान के स्तम्भों के महत्व के कारण ही मैंने मस्जिद-ए-नबवी[2]में प्रत्येक स्तम्भ पर ख़ुतबे (उपदेश) दिए, फिर उन्हें इस पुस्तक में व्यवस्थित करके इसे: "**ईमान के स्तम्भ; मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से**" का नाम दे दिया, इन ख़ुतबों की संख्या सत्रह (17) तक पहुँचती है।

मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि इसके माध्यम से लाभ पहुँचाए और इसे अपनी प्रसन्नता हेतु शुद्ध बना दे।

हमारे नबी मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर अल्लाह का आशीर्वाद और शांति हो।

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद अल-क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद-ए-नबवी शरीफ़

---

(1) इस वाक्य को अल्लाह की प्रशंसा और नबी पाक पर सलाम के बाद मुद्दे की बात पर आने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

(2) पवित्र शहर मदीने में स्थित पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ की मस्जिद।

अल्लाह पर ईमान

बंदे का अपने रब को पहचानना[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:[2]

ऐ अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे की उससे डरने का हक है, क्योंकि सुख मार्गदर्शन के पीछे चलने में है और दुख ख्वाहिश का साथ देने में है।

अय्युहल मुस्लिमून![3]

अल्लाह ने सृष्टि की रचना की ताकि उसके प्रति आज्ञाकारिता और समर्पण हो, पूर्ण प्रसन्नता अल्लाह को जानने और उस पर विश्वास करने में है, बंदे का अपने प्रभु को पहचानना; वह पहला सिद्धांत है जिसका ज्ञान मनुष्य के लिए अनिवार्य है, क़ब्र में सबसे पहले इसी के बारे में प्रशन किया जाएगा। अल्लाह ने संसार की रचना गैर-अस्तित्व से की, मनुष्यों के (जीवन को) अपनी कृपा से भर दिया और उनकी आजीविका का दायित्व लिया:

﴿وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزۡقُهَا﴾

धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। (हूद: 6)

संसारों को अस्तित्व दिया जबकि इससे पूर्व वो कुछ भी नहीं थे:

---

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 15/02/1426 हिजरी को दिया गया।

(2) इस वाक्य को अल्लाह की प्रशंसा और नबी पाक पर सलाम के बाद मुद्दे की बात पर आने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

(3) अर्थात: हे मुस्लिमो!

﴿هَلۡ أَتَىٰ عَلَى ٱلۡإِنسَٰنِ حِينٞ مِّنَ ٱلدَّهۡرِ لَمۡ يَكُن شَيۡـٔٗا مَّذۡكُورًا﴾

मनुष्य पर काल-खंड का ऐसा समय भी बीता है कि वह कोई ऐसी चीज़ न था जिसका उल्लेख किया जाता। (अल-इंसान: 1)

वह ऐसा रब है जो रचना में, आजीविका देने में और योजना बनाने में अकेला है:

﴿أَلَا لَهُ ٱلۡخَلۡقُ وَٱلۡأَمۡرُۗ تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

सुनो, उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है। अल्लाह सारे संसार का रब, बड़ी बरकतवाला है। (अल-आराफ़: 54)

वो एकता में अद्वितीय, महानता और शक्ति के साथ संपन्न है, सभी मामलों की बागडोर उसके हाथों में है, वह मज़बूत और शक्तिशाली है, अपने बंदों का प्रभु है, वह इस बात पर असहमत है कि उसे छोड़ कर किसी और के लिए पूजा की जाए:

﴿إِن تَكۡفُرُواْ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمۡۖ وَلَا يَرۡضَىٰ لِعِبَادِهِ ٱلۡكُفۡرَۖ وَإِن تَشۡكُرُواْ يَرۡضَهُ لَكُمۡۗ﴾

यदि तुम इंकार करोगे तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है। यद्यपि वह अपने बन्दों के लिए इंकार को पसन्द नहीं करता, किन्तु यदि तुम कृतज्ञता दिखाओगे, तो वह उसे तुम्हारे लिए पसंद करता है। (अल-ज़ुमर: 7)

अल्लाह ने प्रत्येक प्राणी में अपनी एकता का संकेत देने वाला प्रमाण खड़ा किया है, ताकि अपने प्रभु के प्रति हृदय का लगाव बढ़े, दो लगातार प्रमाण हमें ईश्वर की एकता की याद दिलाते रहते हैं, एक रात जो ढकती है और एक दिन जो (प्रकाशित) प्रकट होता है, प्रत्येक दूसरे को तेज़ी से पकड़ना चाहता है:

﴿يُغۡشِي ٱلَّيۡلَ ٱلنَّهَارَ يَطۡلُبُهُۥ حَثِيثٗا﴾

वह रात को दिन पर ढांकता है जो तेजी से उसका पीछा करने में सक्रिय है। (अल-आराफ़: 54)

सूर्य और चंद्रमा बुद्धिमानों को चकाचौंध करने वाले एक निर्धारित व निश्चित मार्ग में दौड़ते हैं, एक चमकता है तो दूसरा अस्त हो जाता है, बिल्कुल सटीक चाल है, कोई आगे या पीछे नहीं होता:

﴿لَا ٱلشَّمۡسُ يَنۢبَغِي لَهَآ أَن تُدۡرِكَ ٱلۡقَمَرَ وَلَا ٱلَّيۡلُ سَابِقُ ٱلنَّهَارِۚ وَكُلّٞ فِي فَلَكٖ يَسۡبَحُونَ﴾

न सूर्य ही से हो सकता है कि चाँद को जा पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ सकती है। सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं। (यासीन: 40)

हमें ढोती भूमि और हमें छाया देता आकाश, दोनों ही हमारे लिए अपरिहार्य हैं, (यह सब) शक्तिशाली परिपूर्ण निर्माण, और बिना पूर्व उदाहरण के रचना करने वाले अल्लाह का प्रबंधन है:

﴿هَٰذَا خَلۡقُ ٱللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ ٱلَّذِينَ مِن دُونِهِۦۚ﴾

यह तो अल्लाह की संरचना है। अब तनिक मुझे दिखाओं कि उससे हटकर जो दूसरे (तुम्हारे ठहराए हुए प्रभु) हैं उन्होंने क्या पैदा किया है? (लुक़मान: 11)

एक मुस्लिम इस महान ब्रह्माण्ड के शासक का दास होने पर गौरवान्वित होता है:

﴿قُلۡ إِنَّنِي هَدَىٰنِي رَبِّيٓ إِلَىٰ صِرَٰطٖ مُّسۡتَقِيمٖ﴾

कहो कि मेरे रब ने मुझे सीधा मार्ग दिखा दिया है। (अल-अनआम: 161)

वह केवल इस ब्रह्माण्ड के महामहिम रब की पूजा करता है, उसे छोड़ कर दूसरे के लिए किसी भी प्रकार की इबादत नहीं करता, संकट के समय उसी की शरण लेता है और प्रत्यक्ष और गुप्त में केवल उसी से डरता है:

﴿وَإِن يَمۡسَسۡكَ ٱللَّهُ بِضُرّٖ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَۖ﴾

यदि अल्लाह तुम्हें कोई हानि पहुँचाए, तो उसके सिवा उसे दूर करनेवाला कोई नहीं। (यूनुस: 107)

इसलिए एक मुस्लिम इस बात से नहीं डरता कि मरे हुए उसे हानि पहुँचाएंगे, न उनसे भलाई की आशा रखता है।

केवल उसी से डरने से बुद्धि में वृद्धि होती है, मन को शांति और आत्मा को सुकून मिलता है, जो अपने रब से डरता है वह किसी से नहीं डरता, बल्कि वह हृदय का दृढ़, अंगों का शालीन और एक ऐसी आत्मा से धन्य हो जाता है जो ईश्वर के अलावा किसी से मानूस (परिचित) नहीं होती:

﴿فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾

अतः तुम उनसे न डरो बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो। (आल इमरान: 175)

श्री अबू-सुलैमान दारानी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "मन से जब भी अल्लाह का डर निकल जाता है वो खराब हो जाता है।"

ईश्वर का सबसे करीबी बंदा वह है जो उससे सबसे अधिक डरता है, नबी ﷺ कहते हैं: "वास्तव में, मैं अल्लाह का सबसे अधिक जानकार और उससे सबसे अधिक डरने वाला हूँ" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) यह ईमान के दायित्वों व आवश्यकताओं में से एक है। और जो केवल अपने प्रभु से ही डरता है उसके लिए स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते हैं:

﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ جَنَّتَانِ﴾

और जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरता है, उसके लिए दो स्वर्ग हैं। (अल-रहमान: 46)

विद्वान कहते हैं: "अल्लाह अपने बंदे के साथ दो भय नहीं जोड़ता; जो दुनिया में उससे डरता है, क़यामत के दिन वो अमन में रहेगा और जो दुनिया में उसके डर के बिना रहेगा (अर्थात: ग़लत काम करेगा) उसे आख़िरत में भय में घिरना पड़ेगा।" तो याद रखो कि रब तुम्हें देख रहा है और अपने निर्माता से डरते रहो, तुम अल्लाह के निकट सृष्टि में सबसे धन्य हो जाओगे।

वांछित की पूर्ति या अनैच्छिक से सुरक्षा के लिए अल्लाह के अलावा किसी और से आशा न करो, अर्थात किसी कमी को दूर करने, किसी बीमारी से उबरने, आजीविका माँगने, या कल्याण लाने के लिए अल्लाह से ही उम्मीद रखो, किसी ओर से नहीं; क्योंकि सृष्टि स्वभाविक रूप से दुर्बल है, वो स्वयं के लिए लाभ लाने और खुद से नुकसान दूर करने में असमर्थ हैं, तो फिर दूसरों के लिए तो अधिक असमर्थ होंगे, कोई भी प्राणी यदि किसी सृष्टि से आशा बाँधता है तो उसे निराशा के सिवा कुछ हाथ नहीं आएगा, इसलिए अपनी आशाओं और उम्मीदों को अल्लाह के अलावा अन्य के साथ ना बाँधो; क्यूंकि इससे केवल शून्य ही मिलेगा और भिक्षा वाला अपमान अलग होगा। अल्लाह की कृपा, एहसान और दान की आशा करो; क्यूंकि जो अल्लाह के पास है उसकी आशा करना इबादत (पूजा) है, अल्लाह के लिए दिल को झुका देना आत्म-सम्मान है, इसी में मर्तबा बढ़ता है और उम्मीद की प्राप्ति होती है।

अपने मामले निर्माता को सौंपने में प्राण को आराम मिलता है, निर्माता से बंदे का रिश्ता तब मज़बूत हो जाता है जब वो ये याद रखता है कि अल्लाह प्राण की स्थिति के बारे में सब

कुछ जानने वाला, इसके प्रति दयालु और इसकी परेशानी हटाने में सक्षम है। तो फिर क्यूँ ऐसी सृष्टि से बँधना जो हानि को दूर करने में बेबस है और कुछ भी देने में कंजूस है? जबकि रब ही सब कामों के लिए काफ़ी है; यदि आवश्यकताओं को उसके हवाले कर दो और अपने मामलों की बागडोर उसे सौंप दो तो वह उनके लिए जिम्मेदार बन जाता है।

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ﴾

जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उसके लिए काफ़ी हो जाता है। (अल-तलाक़: 3)

धन्य है वो व्यक्ति जो अल्लाह की दया की इच्छा रखता है, उसकी सजा से भयभीत होता है और अपने स्वामी की पूजा में विनम्र और झुका होता है, इन्ही आलोकित स्तुतियों से नबियों के घर सुसज्जित होते थे, महामहिम अल्लाह ने ज़कारिय्या (उन पर शांति हो) और उनके परिवार के बारे में बताया:

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا۟ يُسَـٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا خَـٰشِعِينَ﴾

निश्चय ही वे नेकी के कामों में एक-दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते थे, हमें ईप्सा (चाह) और भय के साथ पुकारते थे और हमारे आगे दबे रहते थे। (अल-अंबिया: 90)

सारे नबी अल्लाह के पास जो है उसकी चाह में पहल करने वाले होते थे; महामहिम ईश्वर ने अपने नबी मुहम्मद ﷺ से कहा:

﴿وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَٱرْغَب﴾

और अपने रब से लौ लगाओ। (अल-शर्ह: 8)

यह चाहत बंदे के प्रति पापों की मात्रा अनुसार घट जाती है और विश्वास में वृद्धि के समय बढ़ जाती है। श्री इब्नुल-कय्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "यदि अल्लाह अपने बंदे के लिए अच्छा चाहता है तो उसे शक्ति देता है कि वह अपने रब के प्रति इच्छा और विस्मय में अपनी पूरी क्षमता और पूरी कोशिश झोंक दे; वे दोनों (इच्छा और विस्मय) सफलता की सामग्री हैं, क्यूंकि दिल में इच्छा और भय जितना स्थापित होता है उतनी ही सफलता मिलती है।"

सृष्टि का डर अपमान और निरादर है, जो भी अपने निर्माता से डरता है वह प्रिय बन कर

जीता है, अपने जीवन में खुश रहता है और अपनी अंतर्दृष्टि को प्रबुद्ध करके सीख प्राप्त करता है, महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿سَيَذَّكَّرُ مَن يَخۡشَىٰ﴾

जो डरता है वह बहुत जल्द सीख प्राप्त कर लेगा। (अल-आला: 10)

ऐसा व्यक्ति उपदेशों और पाठों से सीख प्राप्त करता है, महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبۡرَةٗ لِّمَن يَخۡشَىٰٓ﴾

निश्चित रूप से इसमें डरने वाले के लिए एक सीख है। (अल-नाज़िआत: 26)

अल्लाह की पुस्तक उस व्यक्ति के लिए सुख का माध्यम और अनुस्मृति बन जाती है:

﴿مَآ أَنزَلۡنَا عَلَيۡكَ ٱلۡقُرۡءَانَ لِتَشۡقَىٰٓ ۞ إِلَّا تَذۡكِرَةٗ لِّمَن يَخۡشَىٰ﴾

हमने यह कुरान तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम दुख में पड़ जाओ यह तो बस डरने वाले के लिए अनुस्मृति ही है। (ताहा: 2-3)

यह उसके लिए अल्लाह की ओर से क्षमा और प्रचुर अनुदान का कारण बनता है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُم بِٱلۡغَيۡبِ لَهُم مَّغۡفِرَةٞ وَأَجۡرٞ كَبِيرٞ﴾

जो लोग परोक्ष में रहते हुए अपने रब से डरते हैं उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है। (अल -मुल्क: 12)

अतः अपने रब को अपनी दृष्टि के सामने रखो, उसकी योजना और दंड से स्वयं को सुरक्षित ना समझो, जीविका के रुक जाने, उपचार में देरी या दुख के समाधान के विषय में अल्लाह के सिवा किसी से मत डरो, महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿فَلَا تَخۡشَوۡهُمۡ وَٱخۡشَوۡنِي وَلِأُتِمَّ نِعۡمَتِي عَلَيۡكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُونَ﴾

तुम उन से ना डरो मुझसे डरो, ताकि मैं तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दूँ और तुम सीधे रास्ते पर चलने लगो। (अल-बक़रह: 150)

बंदा अपने आप में कमज़ोर और अपने ईश्वर सर्वशक्तिमान अल्लाह की मदद का मोहताज होता है, अत: वो उस सर्वश्रेष्ठ अल्लाह से मदद माँगकर ही स्वयं को सृष्टि के आगे

हाथ फेलाने से मुक्त कर सकता है। जो अपनी आवश्यकता प्राप्त करने की कोशिश करता है और उस की प्राप्ति में वो अल्लाह से मोहताज बनकर मदद नहीं माँगता तो उसके सामने रास्ते बंद कर दिए जाते हैं, और कमाई के सारे रास्ते कठिन हो जाते हैं। नबी ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से कहा था: "हे लड़के! मैं तुम्हें वचन सिखा रहा हूँ; तुम अल्लाह (के आदेशों) की रक्षा करो अल्लाह तुम्हारी रक्षा करेगा, अल्लाह (के आदेशों) की रक्षा करो तुम उसे अपने सामने पाओगे, यदि मांगो तो अल्लाह से मांगो, यदि मदद चाहो तो अल्लाह से मदद चाहो।" (सुनन तिर्मिज़ी)

अल्लाह से मदद माँगने पर ही धर्म की निर्भरता है:

﴿إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِينُ﴾

हम केवल तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं। (अल-फातिहा: 4)

नबियों ने अपनी कौमों को इसी का आदेश दिया:

﴿قَالَ مُوسَىٰ لِقَوۡمِهِ ٱسۡتَعِينُواْ بِٱللَّهِ وَٱصۡبِرُوٓاْ﴾

मूसा ने अपनी कोम से कहा: अल्लाह से मदद मांगो और धैर्य रखो। (अल-आराफ़: 128)

महान इस्लामी विद्वान इब्ने-तैमियह कहते हैं: "केवल अल्लाह की पूजा करना और उसी से मदद माँगना ही धर्म है।"

बंदे की निस्पृहता रब से रिश्ता मज़बूत करने में है, ये अपने बंदों पर ईश्वर की कृपा ही है कि जो उससे जुड़ा रहता है वह उसकी सहायता करता है, अल्लाह की आज्ञा पालन करने और उससे सहायता माँगने से जीविका आसान हो जाती है और उस पर भरोसे और निर्भरता के द्वारा वो बढ़ती जाती है, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَن يَتَّقِ ٱللَّهَ يَجۡعَل لَّهُۥ مَخۡرَجٗا ۝ وَيَرۡزُقۡهُ مِنۡ حَيۡثُ لَا يَحۡتَسِبُۚ﴾

जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए रास्ते निकाल देता है और उसे ऐसी जगह से जीविका प्रदान करता है जहाँ से उसका अनुमान भी नहीं होता। (अल-तलाक़: 3)

जीवन संकट और अनैच्छिक चीजों से भरा हुआ है, महामहिम ईश्वर कहता है:

﴿لَقَدۡ خَلَقۡنَا ٱلۡإِنسَٰنَ فِي كَبَدٍ﴾

निस्संदेह हमने मनुष्य को कष्ट के साथ पैदा किया है। (अल-बलद: 4)

जिन और इंसान में हर मनुष्य का एक दुश्मन होता है, और इन दुश्मनों में सबसे प्रमुख इबलीस है (उस पर अल्लाह की लानत हो), महामहिम अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّ ٱلشَّيۡطَٰنَ لَكُمۡ عَدُوّٞ فَٱتَّخِذُوهُ عَدُوًّاۚ﴾

वास्तव में, शैतान तुम्हारा दुश्मन है, इसलिए तुम भी उसे दुश्मन के रूप में ही देखो। (फ़ातिर: 6)

बुराई से बचाव के लिए इंसान को अल्लाह की पनाह और उसकी सीमाओं में शरण लेनी ही पड़ेगी, क्योंकि अल्लाह के अंदर शक्ति और पराक्रम की विशेषता है; अत: जो उसकी पनाह में रहेगा उसे कभी कोई आहत नहीं कर सकेगा और कारण होते हुए भी नुकसान उस से दूर रहेगा। नबी ﷺ ने कहा: "जो किसी स्थान में उतरता है फिर कहता है: मैं अल्लाह की मखलूक़ की बुराइयों से उसके पूर्ण शब्दों की शरण चाहता हूँ, तो जब तक वह उस स्थान को नहीं छोड़ेगा तब तक उसे कुछ भी नुकसान नहीं होगा।" (सही मुस्लिम) श्री कुर्तुबी (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "जब से मैंने यह खबर सुनी है, मैंने इस पर अमल किया है; जब तक मैंने इसे छोड़ न दिया तब तक किसी चीज़ ने मुझे नुकसान नहीं पहुँचाया, फिर यूँ हुआ कि रात के समय महदियह स्थान पर एक बिच्छू ने मुझे डंक मार दिया, तब मुझे आभास हुआ कि मैं इन शब्दों के द्वारा रब की शरण लेना भूल गया था।"

प्राणी हानि का सामना करती रहती है, उसका जीवन तब तक सुखी नहीं हो सकता जब तक कि वो अल्लाह को मज़बूती से न पकड़ ले और उसकी शरण न लेले, इसलिए कि नफा-नुकसान अल्लाह के हाथ में है, जो भी तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहता है अल्लाह की मर्ज़ी के बिना उसकी आरज़ू पूरी नहीं हो सकती; नबी ﷺ ने कहा: "और जान लो कि सारा समुदाय तुम्हें कुछ नुकसान पहुंचाने हेतु इकट्ठा हो जाए तो वो तुम्हें उतना ही नुकसान पहुंचा सकता है जितना अल्लाह ने तुम्हारे विरुद्ध लिखा होगा।" (सुनन तिरमिज़ी)

अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को आदेश दिया है कि वह समस्त सृष्टि, अंधेरे और ईर्ष्यालु की बुराई से सुबह के रचेता अल्लाह की शरण लें, क्यूंकि जो अल्लाह ब्रह्माण्ड से रात के अंधेरे को दूर करने में सक्षम है; वह शरणार्थी से वह सब भी दूर करने में सक्षम होगा जिससे शरणार्थी भयभीत होता और डरता है। जो हर मामले में अल्लाह की शरण लेता है वह दुष्ट लोगों और षडयंत्रकारियों से एक मज़बूत किले में (सुरक्षित) हो जाता है।

विपत्ति में हमारे रब के सिवा कोई पनाह नहीं है, उसके सिवा हमारे लिए कोई शरण नहीं है, अल्लाह की पनाह और शरण माँगने वाला सबसे विशिष्ट प्रकार की दुआ का सहारा लेता है, विपत्ति और साज़िशों में घिरने पर महान रब की मदद माँगना नबियों की पद्धति है। महामहिम ईश्वर ने कहा:

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَٱسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّى مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ مُرْدِفِينَ﴾

"जब तुमने अपने प्रभु से मदद मांगी और उसने तुम्हें उत्तर दिया: "मैं एक दूसरे के पीछे एक हज़ार फ़रिश्तों के साथ तुम्हारी सहायता करूँगा।" (अल-अनफाल: 9)

महामहिम ने यह भी कहा:

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ﴾

"संकट में घिरे व्यक्ति (की पुकार) का, जब वह पुकारता है, कौन जवाब देता है?" (अल नम्ल: 62)

जो मरे हुओं को पुकारता है, उसकी पुकार नहीं सुनी जाती, उसकी ज़रूरतें उठाई नहीं जातीं, महामहिम अल्लाह ने कहा:

﴿وَٱلَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ ۞
إِن تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا۟ دُعَآءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا۟ مَا ٱسْتَجَابُوا۟ لَكُمْ﴾

अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पुकारते हो वह खजूर की गुठली की झिल्ली के भी मालिक नहीं हैं, अगर तुम उन्हें पुकारोगे तो वह तुम्हारी याचना नहीं सुन सकते, अगर सुन भी लें तो तुम्हारी याचना का जवाब नहीं दे सकते। (फ़ातिर: 13-14)

यदि तुम पर कोई विपत्ति आ पड़े और संकट बहुत बढ़ जाए तो परोक्ष के ज्ञाता अल्लाह से सहायता मांगो:

﴿إِنَّمَآ أَمْرُهُۥٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْـًٔا أَن يَقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ﴾

उसका मामला तो यह है कि जब वह किसी चीज़ की इच्छा करता है तो वह कहता है: "हो जा" तो वह चीज़ हो जाती है। (यासीन: 82)

बंदों के कार्यों (इबादत) द्वारा ईश्वर की एकता को मानना विश्वास की पवित्रता, समाज

की व्याप्त खुशी और आत्मा की शांति का कारण है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ۞ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ﴾

ऐ लोगो! तुम अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया है; ताकि तुम परायणता अपना सको, वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श और आकाश को छत बनाया, और आकाश से पानी उतारा, फिर उसके द्वारा हर प्रकार के फल तुम्हारी रोजी के लिए पैदा किए, अतः जब तुम जानते हो तो अल्लाह के समकक्ष न ठहराओ। (अल-बक़रह: 21-22)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा (उपदेश)

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अल्लाह की प्रशंसा और नबी पर दरूद के बाद:

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के साथ मन को जोड़े रखने से खुशी और अच्छाई के द्वार खुलते हैं, और तौबा और क्षमा माँगने से बुराई के द्वार बंद हो जाते हैं। पापों को छोड़ने में ही मन की [1](पश्चाताप) भलाई है। प्रेम, भय और कृपा के साथ अल्लाह की ओर हृदय के आकर्षण में ही दुनिया का आनंद है; क्यूंकि भय तुम्हें अल्लाह की अवज्ञा से दूर रखता है, आशा उसके आज्ञापालन की ओर ले जाती है और प्रेम उसकी ओर खींच लाता है। अत: अपने सभी कर्मों को पूरी तरह से अल्लाह के लिए ही अंजाम दो, ये कर्म बाहरी और आंतरिक रूप से परिपूर्ण होने चाहियें, इस निश्चितता के साथ कि अल्लाह रहस्यों, इरादों और छिपी हुई हर चीज़ से अवगत है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने प्यारे नबी पर रहमत और सलाम भेजने का हुक्म दिया है…

(1) तौबा: गुनाह हो जाने के बाद अल्लाह की और पलटना, पश्चाताप करना और भविष्य में उस गुनाह को दोबारा ना करने का वादा करना।

अल्लाह से डरना[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह (ईश्वर) के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वो जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साथी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, अत्याधिक सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसा कि डरना चाहिए, और इस्लाम के सशक्त कड़े को थामे रखो।

हे मुस्लिमो!

वासनात्मक इच्छा कोताही और अवज्ञा पर उभारती है, शैतान इंसान को पाप और मूर्तियों की ओर उत्तेजित करता है और नफ़्स (प्राण) को आलस्य और आनंद प्रिय है, उसकी लगाम को अल्लाह और उसके दण्ड के प्रति भय के अलावा कोई नहीं थाम सकता।

पवित्र प्रभु का भय इबादत का महान स्तम्भ है, जिसके बिना अल्लाह के लिए धर्म की शुद्धता ठीक नहीं हो सकती और यह प्रत्येक मुकल्लफ (दायित्व-शील व्यक्ति) के लिए अनिवार्य है और दिल से जुड़ी महान इबादतों में से एक है। महान अल्लाह ने अपने पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ से कहा:

﴿قُلۡ إِنِّيٓ أَخَافُ إِنۡ عَصَيۡتُ رَبِّي عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ﴾

कहो: "यदि मैं अपने रब की अवज्ञा करूँ तो मुझे एक बड़े दिन की यातना का भय है।" (अल-ज़ुमर: 13)

फ़रिश्ते अपने प्रभु से भय रखते हैं और डरते हैं:

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 21/04/1427 हिजरी को दिया गया।

﴿وَلِلَّهِ يَسۡجُدُ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلۡأَرۡضِ مِن دَآبَّةٖ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَهُمۡ لَا يَسۡتَكۡبِرُونَ * يَخَافُونَ رَبَّهُم مِّن فَوۡقِهِمۡ وَيَفۡعَلُونَ مَا يُؤۡمَرُونَ﴾

और आकाशों और धरती में जितने भी जीवधारी हैं वे सब अल्लाह ही को सजदा करते हैं और फ़रिश्ते भी और वे घमंड बिलकुल नहीं करते। अपने ऊपर से अपने रब का डर रखते हैं और जो उन्हें आदेश होता है, वही करते हैं। (अल-नह्ल: 49-50)

पैग़ंबर गण अपनी क़ौम के प्रति अल्लाह के प्रकोप से डरते रहे, पैग़ंबर नूह (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ﴾

निश्चय ही मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है।" (अल-शुअरा: 135)

पैग़ंबर शुऐब (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿إِنِّيٓ أَرَىٰكُم بِخَيۡرٖ وَإِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٖ مُّحِيطٖ﴾

मैं तो तुम्हें अच्छी दशा में देख रहा हूँ, किन्तु मुझे तुम्हारे विषय में एक घेर लेने वाले दिन की यातना का भय है। (हूद: 84)

पैग़ंबर हूद (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيمٖ﴾

निश्चय ही मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन की यातना का भय है। (अल-अहक़ाफ़: 21)

पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿يَٰٓأَبَتِ إِنِّيٓ أَخَافُ أَن يَمَسَّكَ عَذَابٞ مِّنَ ٱلرَّحۡمَٰنِ فَتَكُونَ لِلشَّيۡطَٰنِ وَلِيّٗا﴾

ऐ मेरे बाप! मैं डरता हूँ कि कहीं आपको रहमान की कोई यातना न आ पकड़े और आप शैतान के साथी होकर रह जाएं। (मरयम: 45)

अच्छे लोग दुनिया में अपनी क़ौम पर प्रभु के प्रकोप के अवतरण से डरते थे

﴿وَقَالَ ٱلَّذِيٓ ءَامَنَ يَٰقَوۡمِ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُم مِّثۡلَ يَوۡمِ ٱلۡأَحۡزَابِ﴾

उस व्यक्ति ने, जो ईमान ला चुका था, कहा: "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझे भय है कि तुम पर (विनाश का) ऐसा दिन न आ पड़े, जैसा दूसरे विगत समुदायों पर आ पड़ा था। (ग़ाफिर: 30)

वे अपने क़ौम के प्रति प्रलय की यातना से भी डरते थे

﴿وَيَٰقَوۡمِ إِنِّيٓ أَخَافُ عَلَيۡكُمۡ يَوۡمَ ٱلتَّنَادِ﴾

और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तुम्हारे बारे में चीख़-पुकार के दिन का भय है। (ग़ाफिर: 32)

चेतावनियों से वही सीखता है; जिसके दिल को अल्लाह ने अपने भय द्वारा जीवित रखा होता है

﴿وَتَرَكۡنَا فِيهَآ ءَايَةٗ لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ ٱلۡعَذَابَ ٱلۡأَلِيمَ﴾

इसके पश्चात हमने वहाँ उन लोगों के लिए एक निशानी छोड़ दी, जो दुखद यातना से डरते हैं। (अल-ज़ारियात: 37)

अपने रब से डरने वाले को, आयतों में अंतर्दृष्टि और उन से सीखने की क्षमता प्रदान की जाती है:

﴿إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَةٗ لِّمَنۡ خَافَ عَذَابَ ٱلۡأٓخِرَةِۚ﴾

निश्चय ही इसमें उस व्यक्ति के लिए एक निशानी है जो आख़िरत की यातना से डरता हो। (हूद: 103)

वह क़ुरआन के उपदेशों और उसकी स्मृति से लाभ उठाता है

﴿فَذَكِّرۡ بِٱلۡقُرۡءَانِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ﴾

अतः तुम क़ुरआन के द्वारा उसे नसीहत करो जो हमारी चेतावनी से डरता है। (क़ाफ़: 45)

अल्लाह चेतावनियों और निशानियों को तुम्हारी ओर लता है, ताकि दिल घबराकर उसकी ओर निर्देशित हो जाएं:

﴿وَمَا نُرۡسِلُ بِٱلۡأٓيَٰتِ إِلَّا تَخۡوِيفٗا﴾

हम निशानियाँ तो डराने ही के लिए भेजते है। (अल-इसरा: 59)

भय की मात्रा को स्पष्ट करने के लिए ही कार्यभार में कष्ट रखा गया है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَيَبۡلُوَنَّكُمُ ٱللَّهُ بِشَيۡءٖ مِّنَ ٱلصَّيۡدِ تَنَالُهُۥٓ أَيۡدِيكُمۡ وَرِمَاحُكُمۡ لِيَعۡلَمَ ٱللَّهُ مَن يَخَافُهُۥ بِٱلۡغَيۡبِۚ فَمَنِ ٱعۡتَدَىٰ بَعۡدَ ذَٰلِكَ فَلَهُۥ عَذَابٌ أَلِيمٞ﴾

ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह उस शिकार के द्वारा तुम्हारी अवश्य परीक्षा लेगा जिस तक तुम्हारे हाथ और नेज़े पहुँच सकते हैं, ताकि अल्लाह यह जान ले कि उससे बिन देखे कौन डरता है? फिर इसके पश्चात जिसने ज़्यादती की, उसके लिए दुखद यातना है। (अल-माइदा: 94)

भय का गुण भक्तों की महान विशेषताओं और कथनी व करनी में सटीकता के कारणों में से एक है:

﴿قَالَ رَجُلَانِ مِنَ ٱلَّذِينَ يَخَافُونَ أَنۡعَمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِمَا ٱدۡخُلُواْ عَلَيۡهِمُ ٱلۡبَابَ فَإِذَا دَخَلۡتُمُوهُ فَإِنَّكُمۡ غَٰلِبُونَۚ﴾

डरने वालों में से ही दो व्यक्ति ऐसे भी थे जिनपर अल्लाह का अनुग्रह था। उन्होंने कहा: "उन लोगों के मुक़ाबले में दरवाज़े से प्रविष्ट हो जाओ। जब तुम उसमें प्रविष्टि हो जाओगे, तो तुम ही प्रभावी होगे।" (अल-माइदा: 23)

जबकि काफिरों (अविश्वासियों) के अंदर इस विशेषता के ना होने के कारण ही उनकी निंदा की गई है:

﴿كَلَّاۖ بَل لَّا يَخَافُونَ ٱلۡأٓخِرَةَ﴾

कदापि नहीं, बल्कि ये आख़िरत से डरते नहीं। (अल-मुद्दस्सिर: 53)

जो अपने रब से भय रखता है; मौत के समय सुरक्षित होता है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُواْ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسۡتَقَٰمُواْ تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُواْ وَلَا تَحۡزَنُواْ﴾

जिन लोगों ने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है।" फिर इस पर दृढ़तापूर्वक जमे रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि "न डरो और न शोकाकुल हो।" (फ़ुस्सिलत: 30)

प्रलय के कष्ट से मुक्ति मिलती है

﴿إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوۡمًا عَبُوسٗا قَمۡطَرِيرٗا * فَوَقَىٰهُمُ ٱللَّهُ شَرَّ ذَٰلِكَ ٱلۡيَوۡمِ وَلَقَّىٰهُمۡ نَضۡرَةٗ وَسُرُورٗا﴾

"हमें तो अपने रब की ओर से एक ऐसे दिन का भय है जो त्योरी पर बल डालते हुए अत्यन्त क्रूर होगा, अतः अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और ख़ुशी प्रदान की। (अल-इंसान: 11)

जन्नत उसकी आराम-गाह बनती है:

﴿وَلِمَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ جَنَّتَانِ﴾

किन्तु जो अपने रब के सामने खड़े होने का डर रखता होगा, उसके लिए दो जन्नतें (बाग़) हैं। (अल-रहमान: 46)

अल्लाह के प्रति ज्ञान की मात्रा के अनुसार ही भय और डर भी होता है, पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में सबसे अधिक अल्लाह के बारे में जानने वाला मैं हूँ और उस से अत्याधिक भय रखने वाला भी मैं ही हूँ।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ जब बादल या हवा देखते तो आपका रंग बदल जाता, आप बाहर निकलते और अंदर जाते, आगे पीछे होते, डरते कि कहीं प्रभु का प्रकोप न आ जाए।

जब भय दिल में घर कर जाता है; तो उसे पापों से दूर कर देता है:

﴿لَئِنۢ بَسَطتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقۡتُلَنِي مَآ أَنَا۠ بِبَاسِطٖ يَدِيَ إِلَيۡكَ لِأَقۡتُلَكَۖ إِنِّيٓ أَخَافُ ٱللَّهَ رَبَّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

"यदि तू मेरी हत्या करने के लिए मेरी ओर हाथ बढ़ाएगा तो मैं तेरी हत्या करने के लिए तेरी ओर अपना हाथ नहीं बढ़ाऊँगा। मैं तो अल्लाह से डरता हूँ, जो सारे संसार का रब है।" (अल-माइदा: 28)

डर एक उच्च और बुलंद रुतबा है, यह धर्म की ठोस नींवों में से एक है जो मुस्लिमों को नींव पर ऐसा दृढ़ बनाता है कि मन की इच्छाएं उसे फेर नहीं सकतीं और लालच उसे बदल नहीं पाते, वह पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ के आदेश "तुम जहाँ भी रहो, अल्लाह से डरते रहो" (सुनन तिर्मिज़ी) के अनुपालन में अल्लाह के मार्ग पर चलता है। कुछ लोग हैं जिन्होंने यह स्थान खो दिया है; इस प्रकार वे इबादत के आनन्द से वंचित रह गए, उनकी जीवन शैली लड़खड़ा गई, उन्ही के विषय में पवित्र प्रभु ने कहा है:

﴿مُّذَبۡذَبِينَ بَيۡنَ ذَٰلِكَ لَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ﴾

इसी के बीच डाँवाडोल हो रहे हैं, न इन (ईमान वालों) की तरफ़ के हैं, न उन (इंकार करने वालों) की तरफ़ के। (अल-निसा: 143)

ईश्वर का भय लुप्त होने से स्थिति भ्रष्ट हो जाती है, जीवन में दुख और दिल में अंधकार आ जाता है, जिसके कारण संदेह और वासनात्मक इच्छाएं दिल को चारों ओर से घेर लेती हैं। श्री अबू-सुलैमान दारानी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "जब जब ईश-भय दिल से अलग होता है दिल नष्ट हो जाता है।" अल्लाह का कथन है:

﴿كَلَّا بَل لَّا يَخَافُونَ ٱلۡأٓخِرَةَ﴾

कदापि नहीं, बल्कि ये आख़िरत से डरते नहीं। (अल-मुद्दस्सिर: 53)

दिल में अल्लाह की निगरानी के गायब होने के कारण ही मुनाफिक़ लोग अल्लाह के धर्म और उसके नियमों का उपहास करते हैं:

﴿وَإِذَا لَقُواْ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قَالُوٓاْ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوۡاْ إِلَىٰ شَيَٰطِينِهِمۡ قَالُوٓاْ إِنَّا مَعَكُمۡ إِنَّمَا نَحۡنُ مُسۡتَهۡزِءُونَ﴾

और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं: "हम भी ईमान लाए हैं," और जब एकान्त में अपने शैतानों के पास पहुँचते हैं, तो कहते हैं, "हम तो तुम्हारे साथ हैं और यह तो हम केवल परिहास कर रहे हैं।" (अल-बक़रह: 14)

जितने भी पापी पथभ्रष्ट हैं; ईश-भय के रुतबे में कौताही के कारण ही ऐसे हैं, तथा जितने भी नेक लोग अपने मन को वर्जित वास्नात्मक इच्छाओं से रोकते हैं; ईश-भय के दिलों में घर जाने के कारण ही ऐसा हो पाता है।

﴿ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ ۞ وَتَقَلُّبَكَ فِى ٱلسَّٰجِدِينَ﴾

अल्लाह तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम खड़े होते हो, और सजदा करने वालों में तुम्हारी चलत-फिरत को भी वह देखता है। (अल- शुअरा: 218)

जो व्यक्ति एकांत में अल्लाह से डरेगा, उसका रब उसे अपने अर्श (सिंहासन) के नीचे

छाया देगा: "और ऐसा पुरूष (अर्श की छाया पाएगा) जिसे जब एक प्रतिष्ठित और सुन्दर स्त्री ने निमंत्रित किया; तो उसने कहा: मैं अल्लाह से डरता हूँ।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

जो भक्त एकांत में अल्लाह से डरता है, सच्चे मन से आँसू बहाता है; उससे भी ऐसा ही वादा किया गया है। जो अल्लाह के भय से जाग कर रात के अंधेरों में नमाज़ पढ़ता है; तो अल्लाह उसकी माँगों का प्रतिफल देता है:

﴿تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ ٱلْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ۞ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِىَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ﴾

उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं, फिर कोई प्राणी नहीं जानता आँखों की जो ठंडक उसके लिए छिपा रखी गई है, उस कर्म के बदले के रूप में जो वे करते रहे होंगे। (अल-सजदह: 16-17)

एक ईमान वाला भलाई और (अल्लाह के) भय को साथ लेकर चलता, जबकि एक मुनाफिक़ बुराई और (अल्लाह की यातना से) सुरक्षा के भाव को एकत्रित करता है।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह की पकड़ सख्त है, उसकी चेतावनी निश्चित है, अल्लाह की पकड़ से स्वयं को सुरक्षित समझना और उसके दृष्टि नियंत्रण का आभास न करना समाज और व्यक्ति के लिए दुर्भाग्य का कारण है, बहुत सी कौमें अल्लाह के डर से दूर हो गईं, तो अवज्ञा में दूर तक जा पहुँचीं; फिर अल्लाह ने उन पर अपना अज़ाब और सज़ा उतारी, अत: उसने पैग़ंबर नूह (उन पर शांति हो) की क़ौम को डूबोकर, समूद को वज्र से, आद को तेज़ आँधी से और पैग़ंबर शूएब (उन पर शांति हो) की क़ौम को थरथराहट, चीख और बादल से नष्ट कर दिया, तथा पैग़ंबर लूत (उन पर शांति हो) की क़ौम की बस्ती को निवासियों सहित फ़रिश्ते के पंख की नोक से उठाकर पृथ्वी पर पटक दिया, इस्राईलियों के सिरों के ऊपर एक बड़ा पहाड़ खड़ा कर दिया, उन्हें आँधी से दण्डित किया, उन पर टिड्डियाँ, खून और जूँ भेजीं, कुछ को उनके पापों के कारण बंदर और सूअर में बदल दिया और बड़े फलदार बाग़ को उसके मालिकों के अपराध के कारण जला कर रख दिया, -जैसा कि सूरह अल-क़लम में है- :

﴿وَكَذَٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ ٱلْقُرَىٰ وَهِىَ ظَٰلِمَةٌ ۚ إِنَّ أَخْذَهُۥٓ أَلِيمٌ شَدِيدٌ﴾

तेरे रब की पकड़ ऐसी ही होती है, जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है। निस्संदेह उसकी पकड़ बड़ी दुखद, अत्यन्त कठोर होती है। (हूद: 102)

पवित्र प्रभु ने हर काल में चेतावनी दी है कि बस्ती वालों में से जो भी ईश-भय से स्वयं को सुरक्षित समझेगा उसे अपमानजनक दंड दिया जाएगा:

﴿أَفَأَمِنَ أَهۡلُ ٱلۡقُرَىٰٓ أَن يَأۡتِيَهُم بَأۡسُنَا بَيَٰتٗا وَهُمۡ نَآئِمُونَ ۞ أَوَأَمِنَ أَهۡلُ ٱلۡقُرَىٰٓ أَن يَأۡتِيَهُم بَأۡسُنَا ضُحٗى وَهُمۡ يَلۡعَبُونَ﴾

और क्या बस्तियों के लोगों को इस ओर से निश्चिन्त रहने का अवसर मिल सका कि रात को उनपर हमारी यातना आ जाए, जबकि वे सो रहे हों? और क्या बस्तियों के लोगों को इस ओर से निश्चिन्त रहने का अवसर मिल सका कि दिन चढ़े उनपर हमारी यातना आ जाए, जबकि वे खेल रहे हों? (अल-आराफ: 97-98)

उसने उन लोगों पर अपना प्रकोप उतारा जो उससे नहीं डरते थे, सो उसने अतिवादी अत्याचारी शासक - फिरऔन - को लहरों के बीच एक ठंडी लाश बना दिया, उसने प्रचुर धन वाले अत्याचारी क़ारून को उसके शरीर और घर के साथ ज़मीन में धंसा दिया और उस आदमी को भी ज़मीन में धंसा दिया जो घमंड में अपने तहबंद को ज़मीन से घसीट कर चल रहा था और इसके अलावा अम्र बिन लुहय (की हालत ऐसी बनाई कि वह) अपनी आंतों को जहन्नम में खींच रहा है।

अल्लाह अवज्ञाकारी को ढील तो देता है; परंतु उसे छोड़ता नहीं है, फिर जब उसकी पकड़ करने पर आता है तो निकलने का अवसर नहीं देता।

﴿وَيُحَذِّرُكُمُ ٱللَّهُ نَفۡسَهُۥۗ﴾

और अल्लाह तुम्हें अपना भय दिलाता है। (आल इमरान: 30)

उसने अपने भक्तों को आज्ञा मानने हेतु आमंत्रित किया और अपनी अवज्ञा और प्रतिशोध के प्रति चेतावनी दी। वह सज़ा में कठोर है और अपने बंदों के लिए अविश्वास को पसंद नहीं करता:

﴿إِن تَكۡفُرُواْ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَنِيٌّ عَنكُمۡۖ وَلَا يَرۡضَىٰ لِعِبَادِهِ ٱلۡكُفۡرَۖ﴾

यदि तुम इनकार करोगे तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है। यद्यपि वह अपने बन्दों के लिए

इनकार को पसन्द नहीं करता। (अजल-ज़ूमर: 7)

नमाज़ छोड़ने वाले को नर्क की चेतावनी दी है

﴿مَا سَلَكَكُمۡ فِي سَقَرَ ۝ قَالُواْ لَمۡ نَكُ مِنَ ٱلۡمُصَلِّينَ﴾

तुम्हे क्या चीज़ सकर (जहन्नम) में ले आई?" कहेंगे, "हम नमाज़ अदा करने वालों में से न थे। (अल-मुद्दस्सिर: 42-43)

माता-पिता की अवज्ञा और उनसे दुराचार करने वाले को दुख और दुर्भाग्य से घेर दिया:

﴿وَبَرَّۢا بِوَٰلِدَتِي وَلَمۡ يَجۡعَلۡنِي جَبَّارٗا شَقِيّٗا﴾

और अल्लाह ने मुझे अपनी माँ का हक़ अदा करनेवाला बनाया है। और उसने मुझे सरकश और दुरभागी नहीं बनाया। (मरयम: 32)

यदि लोग अच्छाई का आदेश देना और बुराई से मना करना छोड़ दें तो बहुत संभव है कि अल्लाह हर किसी को प्रकोप में लपेट दे, पवित्र प्रभु को पवित्रता और सम्मान के उल्लंघन पर ग़ैरत (ईर्ष्या) आती है, "अल्लाह से अधिक ग़ैरत वाला (ईर्ष्यालु) कोई नहीं है कि उसका भक्त या उसकी दासी व्यभिचार करे।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

हराम (वर्जित) धन खाने से कर्म रद्द हो जाता है: "निस्संदेह अल्लाह पवित्र है, वह पवित्र के अलावा कुछ भी स्वीकार नहीं करता।" (सही मुस्लिम)

प्रभु, निषिद्ध चीज़ों कि ओर नज़र को बे-लगाम छोड़ देने पर भक्त के मन को शुद्धि और पवित्रता से वंचित करके दंडित करता है:

﴿قُل لِّلۡمُؤۡمِنِينَ يَغُضُّواْ مِنۡ أَبۡصَٰرِهِمۡ وَيَحۡفَظُواْ فُرُوجَهُمۡۚ ذَٰلِكَ أَزۡكَىٰ لَهُمۡۗ﴾

ईमान वाले पुरुषों से कह दो कि अपनी निगाहें झुका कर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें; यही उनके लिए अधिक पवित्रता की बात है। (अल-नूर: 30)

प्रभु ने छोटे पापों से भी चेतावनी दी है, पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "हे आइशा! उन (बुरे) कामों से सावधान रहो जो महत्वहीन समझे जाते हैं, क्योंकि अल्लाह की ओर से उनका पीछा करने वाला एक (फ़रिश्ता) होता है।" (मुस्नद अहमद)

भक्त की अल्लाह के प्रति भय की सत्यता के चिन्हों में से है कि वह एकांत और बाहर

एक समान रहे, जब वह लोगों की दृष्टि से छिप जाए तब भी बुराई से रहित हो:

﴿وَهُوَ مَعَكُمۡ أَيۡنَ مَا كُنتُمۡۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعۡمَلُونَ بَصِيرٞ﴾

और तुम जहाँ कहीं भी हो, वह तुम्हारे साथ है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देख रहा है। (अल-हदीद: 4)

गुप्त पापों से सावधान रहो क्योंकि वे घातक होते हैं; श्री अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "तुम लोग ऐसे काम करते हो जो तुम्हारी नज़र में बाल से भी अधिक बारीक हैं, जबकि हम उन्हें पैग़ंबर ﷺ के जमाने में घातक अपराधों में शुमार करते थे।" (सही बुख़ारी)

अल्लाह के दंड से स्वयं को सुरक्षित समझने वाला; घाटा उठाने वाला है:

﴿أَفَأَمِنُواْ مَكۡرَ ٱللَّهِۚ فَلَا يَأۡمَنُ مَكۡرَ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡقَوۡمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ﴾

आख़िर क्या वे अल्लाह की चाल से निश्चिन्त हो गए थे? तो समझ लो अल्लाह की चाल से तो वही लोग निश्चिंत होते हैं, जो घाटे में पड़नेवाले होते हैं। (अल-आराफ: 99)

पापों पर डटे रहने के बावजूद भक्त पर आशीषों का लगातार जारी रहना उसके लिए अल्लाह की ओर से एक ढील मात्र है; उसे प्रभु की सज़ा और यातना से डरना चाहिए।

जो पापों को नहीं छोड़ता; उसे रब से डरने वाला नहीं माना जाएगा, ईश्वर का हर अवज्ञाकारी उससे अज्ञानी है और उससे डरने वाला हर व्यक्ति ज्ञानी है, भक्त जितना अधिक अल्लाह को जानने वाला होगा उतना ही अधिक वह उससे डरने वाला भी होगा; श्री इब्ने-मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "अल्लाह से डरना ज्ञान के लिए पर्याप्त है और अल्लाह के प्रति धोखा अज्ञानता के लिए पर्याप्त है।" अल्लाह से डर में कमी अल्लाह के प्रति भक्त के ज्ञान में कमी के कारण होती है, परिणाम को ध्यान में में रखने से मन के अंदर अल्लाह की उपस्थिति में वृद्धि होती है।

अल्लाह की कृपा है कि वह अपने भक्तों पर एक साथ दो भय एकत्रित नहीं करता; सो जो व्यक्ति दुनिया में उससे भय रखता है आखिरत में वह सुरक्षित होगा और जो दुनिया में उसकी चाल से स्वयं को सुरक्षित समझता है क़यामत के दिन अल्लाह उसे घबराहट में डाल देगा, जो व्यक्ति अपने प्रभु से भय रखेगा वह लोगों के बीच महान तथा अपने जीवन में सम्मानित बनकर जिएगा, एक प्राणी का दूसरे प्राणी से डरना कमज़ोरी और अपमान है।

﴿إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ ٱلشَّيۡطَٰنُ يُخَوِّفُ أَوۡلِيَآءَهُۥ فَلَا تَخَافُوهُمۡ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ﴾

वह तो शैतान है जो अपने मित्रों को डराता है। अतः तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझी से डरो, यदि तुम ईमानवाले हो। (आल-इमरान: 175)

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह में आता हूँ

﴿وَأَنِيبُوٓاْ إِلَىٰ رَبِّكُمۡ وَأَسۡلِمُواْ لَهُۥ مِن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَكُمُ ٱلۡعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۞ وَٱتَّبِعُوٓاْ أَحۡسَنَ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكُم مِّن رَّبِّكُم مِّن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَكُمُ ٱلۡعَذَابُ بَغۡتَةٗ وَأَنتُمۡ لَا تَشۡعُرُونَ﴾

अपने रब की ओर पलट आओ और उसके आज्ञाकारी बन जाओ, इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाए। फिर तुम्हारी सहायता न की जाएगी और अनुसर्ण करो उस सर्वोत्तम चीज़ का जो तुम्हारे रब की ओर से अवतरित हुई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाए और तुम्हें पता भी न चले।" (अल-ज़ुमर: 54-55)

अल्लाह मुझे और आप को महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उसकी तोफ़ीक़[1] और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अम्मा बा'द, हे मुस्लिमो!

अल्लाह की सीमाओं और सम्मानताओं की सुरक्षा में और लोगों को अल्लाह तक पहुँचाने में भय, आशा और प्रेम का जितना योगदान है उतना किसी अन्य वस्तु का नहीं, जब हृदय इन तीनों से खाली हो जाता है तो भ्रष्ट हो जाता है, जब कोई इन तीनों में से किसी एक में कमज़ोर होता है तो उसी के अनुसार उसका ईमान भी कमज़ोर हो जाता है, अल्लाह की ओर अपनी यात्रा में हृदय एक पक्षी की तरह है प्रेम इसका सिर है, -भय और आशा इसके पंख हैं।-

डर ईश-भय को अनिवार्य करता है और ईश-भय आज्ञाकारिता को अनिवार्य करता है, आशा भक्त को ईश्वर के मार्ग पर निर्देशित करती है और उसके लिए यात्रा को सुखद बनाती है, उसे प्रेरित करती है और उसे मार्ग पर बने रहने को प्रिय बनाती है, जो व्यक्ति अपने हृदय में अल्लाह को महान समझेगा अल्लाह उसे सृष्टि के हृदय में सम्मान देगा फिर वे उसे अपमानित नहीं करेंगे। श्री फ़ुज़ैल (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "जो अल्लाह से डरेगा कोई भी उसे हानि नहीं पहुँचा सकता और जो अल्लाह के अलावा किसी और से डरेगा उसे कोई, लाभ नहीं पहुँचा सकता।"

ईश्वर के आगे आत्म-समर्पण करने और मामलों को उसके हवाले करने से दिल से इंसान का भय दूर हो जाता है, जो अपने प्रभु से डरता है वह किसी से नहीं डरेगा; बल्कि उसका दिल शांत और उसके अंग आश्वस्त रहेंगे, इसलिए अल्लाह के भय पर कायम रहो, अपने रब को सम्मान दो जैसा वह हकदार है; लोक परलोक में सुखी रहोगे।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

---

(1) तोफ़ीक़: अर्थात नेकी करने के लिए मिलने वाली अल्लाह की विशेष सहायता।

फ़रिश्तों पर ईमान

फ़रिश्तों पर ईमान[1]

प्राणियों के निर्माता अल्लाह के लिए ही समस्त प्रशंसा है जो गुप्त चीज़ों का ज्ञाता तथा छिपी बातों और गुप्त इरादों से अवगत है, मैं उसके लगातार आशीर्वाद के लिए उसकी स्तुति करता हूँ।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है, उसका कोई साझी नहीं है जो पृथ्वी और आकाश का प्रभु है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद अल्लाह के भक्त और रसूल हैं, सीधे रास्ते के मार्गदर्शक और सही धर्म के आह्वान-कर्ता हैं, अल्लाह का आशीर्वाद हो उन पर, उनके परिवार पर, उनके साथियों पर और न्याय (क़यामत) के दिन तक जो भी उनकी सुन्नत पर कायम रहे उन पर।

अम्मा बा'द:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए, क्योंकि अल्लाह का डर (धर्मपरायणता) सभी अच्छाइयों की जड़ और सभी सद्गुणों का मुखिया है, इसलिए सार्वजनिक और गुप्त रूप से इसका पालन करो; प्रस्तुति और बदले के दिन तुम सफल हो जाओगे।

हे मुस्लिमो!

फ़रिश्तों पर ईमान धार्मिक सिद्धांतों में से एक सिद्धांत है, जिसके बिना ईमान परिपूर्ण नहीं होता, वे उन अदृश्य संसारों में से एक संसार हैं जिन पर ईमान लाना अनिवार्य है। उन पर ईमान लाने का तक़ाज़ा है कि पवित्र पुस्तक (क़ुरआन) और सुन्नत (हदीस) के उल्लेख के अनुसार, उनके विषय में संक्षिप्त की जगह संक्षिप्त, विस्तार की जगह विस्तृत और विशिष्ट की जगह विशिष्ट रूप से विश्वास किया जाए।

सर्वशक्तिमान प्रभु ने उन्हें सुंदर और सम्मानित आकृति में, महान रूप पर और कई रूप धारण करने की क्षमता के साथ, नूर (प्रकाश) से बनाया है, वे कुछ खाते पीते नहीं हैं, उनके व्यवहार और कर्म पूर्ण रूप से पवित्र हैं, अल्लाह ने उनके स्वभाव में हया (शर्म/शिष्टता) रखी

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 13/02/1420 हिजरी को दिया गया।

है। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं उस आदमी से शर्म न करूँ जिससे फ़रिश्ते भी शर्म करते हैं?" -अर्थात श्री उस्मान (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो)" (सही मुस्लिम)

अपने प्रभु के पास उनकी पंक्तियां व्यवस्थित हैं, निस्संदेह वे ईश्वर की एक महान रचना हैं, प्यारे नबी ﷺ कहते हैं: "मुझे महान अल्लाह के सिंहासन उठाने वाले फ़रिश्तों में से एक के बारे में वर्णन करने की अनुमति दी गई है, उसके कान की लौ से कंधे तक की दूरी सात सौ वर्ष की यात्रा के बराबर है।" (सुनन अबू-दाऊद)

फरिश्तों में उच्चतम जिब्रील (उन पर शांति हो) हैं, उनके छह सौ पंख हैं, प्रत्येक दो पंखों के बीच की दूरी पूर्व और पश्चिम के बीच की दूरी के बराबर है, जिनमें से प्रत्येक पंख ने आसमान के किनारों को घेर रखा है, प्यारे नबी ﷺ कहते हैं: "मैंने जिब्रील (उन पर शांति हो) को सिद्रतुल-मुंतहा[1] के पास देखा था, उनके छह सौ पंख थे, उनके परों से विभिन्न रंगों के मोती और माणिक झड़ रहे थे।" (मुस्नद अहमद) महान अल्लाह ने उनके विषय में फ़रमाया है:

﴿عَلَّمَهُۥ شَدِيدُ ٱلْقُوَىٰ ۞ ذُو مِرَّةٍ فَٱسْتَوَىٰ﴾

उसे बड़ी शक्तियों वाले और स्थिर रीतिवाले ने सिखाया है अतः वह भरपूर हुआ। (अल-नज्म: 5-6)

जिब्रील (उन पर शांति हो) सुंदर रचना, वैभव और चमक वाले हैं, उनके पास ताकत और महान शक्ति है, अल्लाह के निकट उनका ऊंचा स्थान और पद है, वो सच्ची खबर और न्यायपूर्ण कानूनों के साथ पैगंबरों पर उतरते रहे हैं, उन्होंने बद्र और खंदक के युद्ध में प्यारे नबी मुहम्मद ﷺ के साथ मिलकर युद्ध किया, मेराज की यात्रा में आपके साथ रहे, "जब अल्लाह किसी भक्त से प्रेम करता है तो जिब्रील (उन पर शांति हो) को पुकारता है: "मैं अमुक से प्रेम करता हूँ सो तुम भी उस से प्रेम करो; तो जिब्रील उस से प्रेम करने लगते हैं, फिर वह आसमान में पुकारते हैं: निश्चित ही अल्लाह अमुक व्यक्ति से प्रेम करता है इसलिए तुम सब भी उससे प्रेम करो, तो आसमान वाले भी उससे प्रेम करने लगते हैं, फिर इसी प्रकार पृथ्वी पर उसके लिए स्वीकृति स्थापित कर दी जाती है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

वे विभिन्न प्रकार की इबादतों में व्यस्त रहते हैं, उनमें से कुछ हैं जो सदैव अल्लाह के समक्ष खड़े रहते हैं, कुछ हैं जो सदैव उसके सामने झुके रहते हैं, कुछ हैं जो सदैव सजदे में रहते हैं

(1) यह अल्लाह के सिंहासन से पहले का एक मक़ाम है जिस से आगे जाने कि किसी को भी अनुमति नहीं होती।

और कुछ हैं जो अन्य प्रकार की आज्ञाकारिताओं में रहते हैं, जिनके बारे में तुम्हारा प्रभु ही जानता है:

﴿وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٌ مَّعۡلُومٞ﴾

और हम में से प्रत्येक के लिए अनिवार्यतः एक ज्ञात और नियत स्थान है। (अल-साफ़्फ़ात: 164)

प्यारे नबी कहते हैं: "आकाश चरमरा गया है और उसका चरमराना वाजिब है। उसमें चार उंगली के बराबर भी कोई ऐसी जगह नहीं है, जहाँ कोई फ़रिश्ता सजदा न कर रहा हो।" (मुस्नद अहमद)

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने मनुष्य को रक्षा व सुरक्षा दी है, उसे सम्मानित किया है और उसे अपनी उत्तम रचना; फरिश्तों के हवाले किया है; कुछ फ़रिश्ते उसके पास बारी बारी आते जाते हैं, कुछ रात में उसके रक्षक होते हैं और कुछ दिन के दौरान, फ़रिश्ते अल्लाह की अनुमति अनुसार अल्लाह के आदेश से (होने वाली घटनाओं से) उसकी रक्षा करते हैं, कर्मों को सुरक्षित करने के लिए कुछ दूसरे फ़रिश्ते बारी बारी आवागमन करते हैं, इंसान किसी भी शब्द का उच्चारण करता है तो उस पर निगाह रखने वाला फ़रिश्ता मौजूद होता है जो इसी के लिए नियुक्त है, वो उसे लिख लेता है; किसी भी शब्द या क्रिया को बिना लिखे नहीं छोड़ता। इंसान दिन में चार और रात में दूसरे चार फ़रिश्तों के बीच रहता है। साथ ही एक फ़रिश्ता है जिसे वीर्य के प्रति दायित्व सौंपा गया है और उसके मार्गदर्शन और रहनुमाई के लिए एक साथी है। एक मौत का फ़रिश्ता है जो आत्मा को शरीर से निकालने का काम करता है। इन सब कामों के दौरान फ़रिश्ते, अल्लाह कि ओर से छमता मिलने के कारण, मनुष्य की ग्रीवा शिरा (गले की नस) से भी ज़्यादा उसके क़रीब होते हैं।

उनकी संख्या अत्यधिक है, वे एक बड़ी रचना हैं, जिसे केवल वही गिन सकता है जिसने उन्हें बनाया है, महान अल्लाह ने कहा:

﴿وَمَا يَعۡلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَۚ﴾

और तुम्हारे प्रभु की सेनाओं को उसके अलावा कोई नहीं जानता। (अल-मुद्दस्सिर: 31)

प्यारे नबी ﷺ सातवें आसमान पर स्तिथ बैतूल-मामूर के बारे में कहते हैं: "वह ऐसा स्थान है जिसमें सत्तर हज़ार फ़रिश्ते रोज़ाना प्रवेश करते हैं, फिर उन्हें दोबारा उसमें प्रवेश करने

का अवसर कभी नहीं मिल पाता।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

अल्लाह ने उनमें से कुछ को चुना है जो उसका सिंहासन उठाते हैं, कुछ प्रभु के निकटवर्ती फ़रिश्ते हैं और कुछ हैं जो सातों आसमानों में रहते हैं और उनको निरंतर इबादत द्वारा आबाद रखते हैं, उनमें से सबसे अच्छे वे हैं जिन्होंने बद्र के युद्ध में भाग लिया।

हे मुस्लिमो!

फ़रिश्ते नेक लोगों और उनके कर्मों से प्रेम करते हैं, वे लोगों को भलाई सिखाने वाले व्यक्ति के लिए दुआ करते हैं, नमाज़ में पहली क़तार वालों के लिए दुआ करते हैं और भक्तों को अच्छे कर्म करने पर उत्तेजित करते हैं: "प्रत्येक दिन जब भी बंदे सुबह करते हैं, तो दो फ़रिश्ते उतरते हैं; एक कहता है: ऐ अल्लाह ख़र्च करने वाले को उत्तम प्रतिफल प्रदान कर, जबकि दूसरा कहता है: ऐ अल्लाह, रोकने वाले का विनाश कर।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) फ़रिश्ते ईमान वालों के लिए दुआ और क्षमा-याचना करते हैं, बल्कि सिंहासन को उठाने वाले और सिंहासन के आसपास रहने वाले, पश्चाताप करने वाले मोमिन के लिए विशेष रूप से छमा-याचना करते हैं, उसके लिए जहन्नम से मुक्ति, जन्नत में प्रवेश और गुनाहों तथा पापों से सुरक्षा हेतु दुआ करते हैं और ईमान वाले की अपने भाई के लिए पीठ पीछे कि गई दुआ पर 'आमीन' कहते हैं और कहते हैं कि: "तुम्हें भी वही मिले।"

वे आशीर्वाद और दया के अवतरण के साथ उतरते हैं, व क़द्र (सम्मान) की रात में उतरते हैं, वे तब भी उतरते हैं जब क़ुरआन पढ़ा जाता है, वे ज़िक्र की मजलिस को घेर लेते हैं और उन्हें अपने पंखों से करीबी आसमान तक ढाँप लेते हैं और वे धार्मिक विद्यार्थी के कार्य के प्रति संतुष्टि व्यक्त करने हेतु, उसके आगे विनम्रतापूर्वक अपने पंख बिछा देते हैं।

हमारे साथ उनकी निकटता में अच्छाई और सरदारी है, प्यारे नबी ﷺ लोगों में सबसे अधिक उदार थे, और रमज़ान में जब उनसे जिब्रील (उन पर शांति हो) मिलते तो और भी अधिक उदार हो जाते थे। अच्छे लोगों की मृत्यु के समय फ़रिश्ते उन्हें दृढ़ बनाते और जन्नतों की शुभ सूचना देते हैं, उनकी आत्मा को नरमी के साथ शरीर से बाहर निकालते हैं, जन्नतों में प्रवेश पर मुबारकबादी के लिए हर द्वार से आते हैं, फ़रिश्ते बारी बारी दल बनाकर उन्हें सलाम करने और उस अनुग्रह की बधाई देने के लिए आते हैं जो अल्लाह की तरफ से उन्हें निकटता, उपहार और 'शांति के घर' (जन्नत) में नबियों और सम्मानित पैगंबरों के साथ रहने के रूप में मिला है।

फ़रिश्ते जहाँ एक ओर अच्छे लोगों से प्रेम करते हैं; वहीं दूसरी ओर अवज्ञाकारियों व

अवज्ञाकारिता से घृणा भी करते हैं, सो वे उस घर में प्रवेश नहीं करते जिसमें कोई चित्र, कुत्ता या मूर्ति होती है, जिन चीज़ों से आदम के पुत्रों को कष्ट होता है -जैसे दुर्गंध आदि- फ़रिश्तों को भी उनसे कष्ट होता है और वे अविश्वासियों को शाप देते हैं; महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ وَمَاتُواْ وَهُمۡ كُفَّارٌ أُوْلَٰٓئِكَ عَلَيۡهِمۡ لَعۡنَةُ ٱللَّهِ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلنَّاسِ أَجۡمَعِينَ﴾

जिन लोगों ने कुफ़्र किया और काफ़िर ही रहकर मरे, वही हैं जिनपर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और सारे मनुष्यों की, सबकी फिटकार है। (अल-बक़रह: 161)

जब अविश्वासियों की अवधि निकट आ जाती है, तो फ़रिश्ते उन्हें यातना, पीड़ा, नरक और गर्म खोलते पानी की शुभसूचना देते हैं, फिर उनकी आत्माएं उनके शरीर में इधर उधर भटकने लगती हैं और बाहर निकलने से इनकार करती हैं; तो फ़रिश्ते उनके चेहरों और पीठ पर मारते हैं और उनसे कहते हैं:

﴿أَخۡرِجُوٓاْ أَنفُسَكُمُۖ ٱلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ عَذَابَ ٱلۡهُونِ بِمَا كُنتُمۡ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ غَيۡرَ ٱلۡحَقِّ وَكُنتُمۡ عَنۡ ءَايَٰتِهِۦ تَسۡتَكۡبِرُونَ﴾

"निकालो अपने प्राण! आज तुम्हें अपमानजनक यातना दी जाएगी, क्योंकि तुम अल्लाह के प्रति झूठ बका करते थे और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते थे।" (अल-अनआम: 93)

हे मुस्लिमो!

फ़रिश्ते ऊंचे स्थानों और ऊंचे पदों पर प्रतिष्ठित भक्त हैं, वे शब्द और कर्म में अपने प्रभु के प्रति अत्यंत आज्ञाकारी हैं:

﴿لَا يَسۡبِقُونَهُۥ بِٱلۡقَوۡلِ وَهُم بِأَمۡرِهِۦ يَعۡمَلُونَ﴾

उससे आगे बढ़कर नहीं बोलते और उसके आदेश का पालन करते हैं। (अल-अंबिया: 27)

वे न तो किसी मामले में उससे आगे बढ़ते हैं, न किसी मामले में उससे असहमत होते हैं, न उसकी उपासना करने से जी चुराते हैं और न थकन ही मानते हैं:

﴿يُسَبِّحُونَ ٱلَّيۡلَ وَٱلنَّهَارَ لَا يَفۡتُرُونَ﴾

रात और दिन उसकी पाकी का जाप करते रहते हैं, दम नहीं लेते। (अल-अंबिया: 20)

दिन-रात काम में लगन से लगे रहते हैं, इच्छा और कर्म से आज्ञाकारी रहते हैं और "जब आसमान में अल्लाह कोई निर्णय लेता है तो फ़रिश्ते उसके कथन के समक्ष समर्पित होते हुए अपने पंखों को मारते हैं जैसे कोई ज़ंजीर चिकने पत्थर पर मारी जाती है, ये आवाज़ उनके अंदर तक घुसी चली जाती है।" और "जब शक्तिशाली अल्लाह आदेश भेजना चाहता है, तो वह्य (ईश-वाणी) द्वारा बात करता है, जिसके बाद अल्लाह से भय के कारण आकाश को तेज़ कंपन पकड़ लेता है -या उन्होंने "तेज़ कड़क" कहा- जब आसमान उसे वाले सुनते हैं, वे स्तब्ध रह जाते हैं और अल्लाह के सामने सजदे में गिर जाते हैं, अपना सिर उठाने वाले पहले व्यक्ति जिब्रील (उनपर शांति हो) होते हैं, फिर अल्लाह उनसे ईश-वाणी से अपनी इच्छा की बात करता है।" अल्लाह उनके विषय में उन्ही की बात का वर्णन करते हुए कहा है:

﴿وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهُۥ مَقَامٞ مَّعۡلُومٞ ۞ وَإِنَّا لَنَحۡنُ ٱلصَّآفُّونَ ۞ وَإِنَّا لَنَحۡنُ ٱلۡمُسَبِّحُونَ﴾

और हम में से प्रत्येक के लिए अनिवार्यतः एक ज्ञात और नियत स्थान है और हम ही पंक्तिबद्ध करते हैं और हम ही पाकी बयान करते है। (अल-साफ़्फ़ात: 164-166)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशिर्वाद दे।...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की प्रशंसा है उसके उपकार पर और उसका धन्यवाद है उसकी विशेष सहायता व कृतज्ञता पर। मैं अल्लाह को सम्मान अर्पित करने हेतु गवाही देता हूँ कि कोई पूजनीय नहीं है सिवाय उसी के, जिसका कोई साझी नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और रसूल हैं, अधिकाधिक अल्लाह की शांति हो उन पर और उनके परिवार और साथियों पर।

अम्मा बा'द, हे मुस्लिमो!

वास्तव में, अल्लाह की महान रचना होने के बावजूद, उनका भाग्य इससे अधिक कुछ नहीं है कि वे अल्लाह के सामने आज्ञाकारी भक्त हैं, जो प्रभु के राज में भागीदार नहीं हैं, न ही ब्रह्मांड में उनहें स्वेच्छा से कुछ करने की अनुमति है, उनमें से कोई अगर पूजनीय बनने का दावा करेगा तो ईश्वर ने उसको नरक की चेतावनी दी है। सर्वोच्च प्रभु का कथन है:

﴿وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّيٓ إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِۦ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

और जो उनमें से यह कहेगा कि "अल्लाह के अलावा मैं भी एक भगवान हूँ" तो हम उसे बदले में जहन्नम देंगे। ज़ालिमों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (अल-अंबिया: 29)

यदि फ़रिश्ते -जबकि उनमें इतनी शक्ति है- अल्लाह का वचन सुनकर भय, घबराहट और विस्मय के कारण कांपते और स्तब्ध हो जाते हैं, तो अल्लाह को छोड़कर उनमें से किसी को कैसे पुकारा जा सकता है?! बल्कि, उनके अलावा दूसरे मुर्दे और मूर्तियाँ जिनके पास किसी चीज़ की क्षमता नहीं होती, उन्हें पुकारना या पूजना तो और भी ज़्यादा अनुचित होगा; क्योंकि सभी मामले एक बलशाली प्रभु के हाथों में हैं, उसके अलावा हर कोई निर्मित और पाला हुआ है; न तो वो किसी लाभ का मालिक है और न किसी नुकसान का।

यह तो एक बात थी, (दूसरी बात यह है कि) कुछ लोगों ने अपनी रचना के उद्देश्य को नहीं समझा, उन्होंने अपने मूल्य के अनुसार खुद को महत्व नहीं दिया, उन्होंने अल्लाह की ओर से अपने संरक्षण, रक्षा और समर्थन हेतु उत्तम रचना (फ़रिश्तों) के चुनाव द्वारा स्वयं के सम्मान और आदर को महसूस नहीं किया, और उन्होंने इस वरदान का जवाब अविश्वास, अनैतिकता

और इंकार से दिया। जो लोग अपने प्रभु की इबादत से अहंकार दिखाते हैं और शिर्क [1] और अवज्ञा किये बिना नहीं मानते तो क्या हुआ? तुम्हारे प्रभु के पास जो हैं वे थके बिना दिन-रात उसकी महिमा करते हैं, जबकि अल्लाह दुनिया भर से निस्पृह है, आज्ञाकारी की आज्ञाकारिता उसे लाभ नहीं पहुँचाती, न अवज्ञाकारी की अवज्ञा ही उसे नुकसान पहुँचा सकती है।

सो हे अल्लाह के भक्तो! अपने प्रभु के आज्ञापालन में कड़ी मेहनत करो और उसके फ़रिश्तों पर ईमान लाओ, याद रखो कि उनमें से कुछ बंदे ऐसे भी हैं जो तुम्हारी रक्षा करते हैं, तुम्हारे कार्यों और शब्दों को सुरक्षित करते हैं और उन्हें तुम्हारे कर्म-पत्र में लिख लेते हैं जो तुम्हें क़यामत के दिन दिया जाएगा, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ۞ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۞ وَيَنقَلِبُ إِلَىٰٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ۞ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ۞ فَسَوْفَ يَدْعُواْ ثُبُورًا ۞ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا﴾

फिर जिस किसी को उसका कर्म-पत्र उसके दाएं हाथ में दिया गया, तो उससे आसान, सरसरी हिसाब लिया जाएगा और वह अपने लोगों की ओर ख़ुश-ख़ुश पलटेगा और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (बाएं हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया गया, तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा, और दहकती आग में जा पड़ेगा। (अल-इंशिक़ाक़: 7-12)

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत व सलाम भेजने का आदेश दिया है।...

(1) अल्लाह के गुण को किसी अन्य में मानना या पूजा का थोड़ा सा भी हिस्सा किसी अन्य के लिए प्रस्तुत करना इस्लाम में शिर्क कहलाता है, शिर्क् महापाप है जिसकी अल्लाह के यहाँ कोई माफी नहीं है।

किताबों पर ईमान

महान क़ुरआन[1]

समस्त प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो अपने आज्ञाकारियों और डरने वालों को सम्मानित करता है और अपने आदेश व्यर्थ करने वालों और पापियों को अपमानित करता है, मैं उस प्रभु के लिए प्रचुर, पवित्र और धन्य प्रशंसा प्रस्तुत करता हूँ जो हमारे प्रभु को पसंद है और जिससे वह प्रसन्न होता है।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, उसके अलावा कोई हमारा प्रभु नहीं, उसे छोड़ कर हम किसी अन्य की इबादत नहीं करते।

और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद अल्लाह के भक्त और रसूल हैं, जो अल्लाह की ओर बुलाने वाले सबसे सत्य व्यक्ति और अल्लाह के बंदों के लिए सबसे बड़े शुभचिंतक हैं, हे अल्लाह! उन पर, उनके परिवार पर, उनके सहाबा (साथियों) पर और उनके रास्ते पर चलने वालों तथा उनके मार्गदर्शन पालन करने वालों पर रहमत और शांति अवतीर्ण कर।

अम्मा बा'द:

हे अल्लाह के भक्तो! अल्लाह से उसी तरह डरो जैसे डरना चाहिए, अपने रहस्य और सार्वजनिक को उसके लिए शुद्ध रखो, अपने रब को प्रसन्न करने में जल्दी करो और अपने उत्तम महीने से लाभ उठाओ।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने अपने नबी मुहम्मद ﷺ को स्पष्ट अरबी क़ुरआन देकर भेजा, जिसने वाक्पटु अरबों के दिमाग़ को हैरान कर दिया और उनके खिलाफ तर्क स्थापित कर दिया, अत: उन्होंने उसके स्पष्टीकरण की श्रेष्ठता और उसके भाषण की सुंदरता को स्वीकार किया, वलीद बिन मुग़ीरह ने कहा: "अल्लाह की क़सम! उस (क़ुरआन) में एक मिठास है, उस पर बड़ा वैभव चढ़ा है, उसकी शाखाएँ फलदार हैं, उसकी जड़ें मज़बूत हैं और यह किसी इंसान का शब्द नहीं हो सकता।"

---

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 16/09/1420 हिजरी को दिया गया।

अल्लाह ने इसे अँधेरों की गहराइयों के बीच एक चमकता प्रकाश बनाया है, आयतों के बाद आयतें हैं:

﴿يَهۡدِي بِهِ ٱللَّهُ مَنِ ٱتَّبَعَ رِضۡوَٰنَهُۥ سُبُلَ ٱلسَّلَٰمِ﴾

जिसके द्वारा अल्लाह उस व्यक्ति को जो उसकी प्रसन्नता का अनुगामी है, शांति की राहें दिखाता है। (अल-माइदा: 16)

यह आत्माओं के उपचार, स्थितियों के सुधार और दिलों को जागृत करने का साधन है। बेशक यह ईश्वर की मज़बूत रस्सी और स्पष्ट प्रकाश है, अपने थामने वालों के लिए सुरक्षा है और पालन करने वालों के लिए मोक्ष है। जो इसके द्वारा बात करता है वह सच्चा है, जो इसके द्वारा निर्णय लेता है न्यायी होता है, जो इसके अनुसार कर्म करता है पुण्य कमाता है और जिन्न भी इसके चमत्कारों पर चकित हैं:

﴿قُلۡ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ ٱسۡتَمَعَ نَفَرٞ مِّنَ ٱلۡجِنِّ فَقَالُوٓاْ إِنَّا سَمِعۡنَا قُرۡءَانًا عَجَبٗا ۞ يَهۡدِيٓ إِلَى ٱلرُّشۡدِ فَـَٔامَنَّا بِهِۦۖ وَلَن نُّشۡرِكَ بِرَبِّنَآ أَحَدٗا﴾

कह दो: मेरी ओर प्रकाशना की गई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने (क़ुरआन) सुना, फिर उन्होंने कहा कि हमने एक मनभाता क़ुरआन सुना है, जो भलाई और सूझ-बूझ का मार्ग दिखाता है, अतः हम उसपर ईमान ले आए, और अब हम कदापि किसी को अपने रब का साझी नहीं ठहराएंगे। (अल-जिन्न: 1-2)

हे मुस्लिमो!

क़ुरआन के पाठन और उसके अनुसरण से शान बुलंद होती है और प्रतिष्ठा चमक उठती है, श्री अबूज़र (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "मैंने पूछा: हे अल्लाह के पैग़ंबर! मुझे मार्गदर्शन कीजिए, नबी ﷺ ने फ़रमाया: क़ुरआन के पाठ और अल्लाह के ज़िक्र को ज़रूरी बना लो; क्योंकि यह तुम्हारे लिए धरती में प्रकाश और आसमान में सुरक्षित ख़ज़ाना है।" (सही इब्न-हिब्बान) लोगों में सबसे उत्तम वह है जो क़ुरआन को सीखता और सिखाता है, अबू-अब्दुल-रहमान सुलमी (अल्लाह उन पर दया करे) इसी श्रेष्ठता को प्राप्त करने हेतु चालीस वर्ष तक अल्लाह की किताब (क़ुरआन) की शिक्षा देते रहे।

शांति उतरती है, दया छा जाती है, और फरिश्ते उसके अध्ययन और पाठ को घेर लेते हैं, क़ुरआन का विशेषज्ञ; बहुत आदरणीय नेक फरिश्तों के साथ होगा। उसका पाठ करना प्रभु

से निकट करने वाले कामों में से सर्वोत्तम काम है, उसके हर अक्षर पर कई गुना पुण्य है, आखिरत में उसके पाठ करने वाले का स्थान अंतिम आयत तक होगा जिसे वह दुनिया में पाठ किया करता था, उसका सीखना धन दौलत इकट्ठा करने से अधिक उत्तम है। प्यारे नबी ﷺ कहते हैं: "तुम में से किसे पसंद है कि प्रति दिन सुबह वह बुतहान या अक़ीक़ की घाटी की ओर जाए और वहां किसी अपराध और रिश्ता तोड़े बिना दो बड़े-बड़े कूबड़ वाली ऊंटनियां प्राप्त करे? हमने कहा: हे अल्लाह के पैग़ंबर! हम सब को यह पसंद है, आपने फ़रमाया: फिर तुम में से कोई सुबह को मस्जिद में महान अल्लाह की किताब की दो आयतें पढ़ने या सीखने क्यों नहीं जाता! ये उसके लिए दो ऊँटों से भी बेहतर है, तीन आयतें तीन ऊँटों से बेहतर हैं, चार आयतें चार ऊँटों बेहतर हैं और जितनी आयतें होंगी उतने ही ऊँटों से बेहतर हैं।" (सही मुस्लिम)

हे मुस्लिमो!

क़ुरआन वाक्पटुता व वाग्मिता के अंतिम लक्ष्य तक पहुँचा हुआ है, वाक्पटु लोग इस पर आश्चर्य करते हैं, आम तथा साधारण लोग भी इसे समझते हैं। भला कौन सी किताब है जो क्रमिक युगों में समझ शैली, भाषा, और ज्ञान की विविधता के बावजूद सभी मानव जाति की समझ को समायोजित कर सकती है? जब उक़बा बिन रबीआ ने इसे सुना तो कहने लगा: "अल्लाह की क़सम! मैंने ऐसा शब्द कभी नहीं सुना है, अल्लाह की क़सम! यह कविता या अटकल नहीं है।" जब मुश्रिकों (बहुदेववादियों) ने अल्लाह के पैग़ंबर ﷺ से नदियाँ बहाने और आकाश गिराने जैसे भौतिक चमत्कारों की माँग की; तो उनके लिए यह आयात उतरी:

﴿أَوَلَمۡ يَكۡفِهِمۡ أَنَّآ أَنزَلۡنَا عَلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ يُتۡلَىٰ عَلَيۡهِمۡۚ﴾

क्या उनके लिए यह पर्याप्त नहीं कि हमने तुमपर किताब अवतरित की, जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? (अल-अंकबूत: 51)

यह सरल पुस्तक है

﴿وَلَقَدۡ يَسَّرۡنَا ٱلۡقُرۡءَانَ لِلذِّكۡرِ فَهَلۡ مِن مُّدَّكِرٖ﴾

और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए अनुकूल और सहज बना दिया है। फिर क्या है कोई नसीहत प्राप्त करने वाला? (अल-क़मर: 17)

इसके बावजूद, अगर यह पहाड़ों पर उतरता तो उन्हें तोड़ देता, या ज़मीन पर उतरता तो उसे टुकड़े टुकड़े कर डालता।

इसका पाठ; वासनात्मक इच्छाओं से मन का उपचार है, दिलों के सनक और संदेह की औषधि है और बीमारियों और संकटों से शरीर का इलाज है:

﴿وَنُنَزِّلُ مِنَ ٱلْقُرْءَانِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ﴾

हम क़ुरआन में से जो उतारते है वह मोमिनों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) और दयालुता है, किन्तु ज़ालिमों के लिए तो वह बस घाटे ही में अभिवृद्धि करता है। (अल-इसरा: 82)

हे मुस्लिमो!

सबसे उत्तम वाणी अल्लाह की पुस्तक है, सफ़ल है वो व्यक्ति जिसके हृदय में अल्लाह ने इसे सुशोभित किया है, श्री फ़ुज़ैल बिन इयाज़ (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "क़ुरआन का हाफिज़; इस्लामी ध्वज का वाहक होता है, उसे चहिये कि फ़ालतू लोगों के साथ फ़ालतू काम ना करे, न आलसी लोगों के साथ आलसी बने और ना ग़ाफ़िल लोगों के साथ ग़फ़लत में पड़े।" इसके पाठक को अपने पहलुओं में मौजूद (क़ुरआन) के प्रति ईमानदारी और अमानत का पालन करते हुए सत्यता, शुद्धता और रात की नमाज़ से सुसज्जित होना चाहिए।

तुम्हें सुख का स्वाद तब तक नहीं मिलेगा जब तक तुम अपने रब की किताब का पाठ करते हुए अपने रब के आज्ञाकारी न बन जाओगे, इसलिए तौबा से विरोध की बीमारी का इलाज करो और अल्लाह कि ओर पलट कर असावधानी का उपचार करो। विपत्तियों में क़ुरआन की रस्सी को पकड़े रहो, इसके अलावा हर रस्सी अपमानजनक है। अपने घर में क़ुरआन के कुछ हिस्से का पाठ निर्धारित करलो, प्यारे नबी कहते हैं: "जिस घर में अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है और जिस घर में अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया जाता, उसका उदाहरण जीवित और मृत व्यक्ति की तरह है।" (सही मुस्लिम)

अतः इसे पढ़ कर और इसके अर्थों पर विचार करके अपनी जीभ को सुवासित करो और इसके मार्गदर्शन और नियमों पर कायम रहो, इस से लोक-परलोक की शुभ सूचना के भागीदार बन जाओगे।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ إِلَيْكَ مُبَٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوٓاْ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُوْلُواْ ٱلْأَلْبَٰبِ﴾

यह एक बरकत वाली किताब है जिसको हमने उतारा है ताकि वे इसकी आयतों पर सोच-विचार करें और ताकि बुद्धि और समझ वाले इससे शिक्षा ग्रहण करें। (साद: 29)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशिर्वाद दे।...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की प्रशंसा है उसके उपकार पर और उसका धन्यवाद है उसकी विशेष सहायता व कृतज्ञता पर। मैं अल्लाह को सम्मान अर्पित करने हेतु गवाही देता हूँ कि कोई पूजनीय नहीं है सिवाय उसी के, जिसका कोई साझी नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और रसूल हैं, अधिकाधिक अल्लाह की शांति हो उन पर और उनके परिवार और साथियों पर।

अम्मा बा'द, हे मुस्लिमो!

अल्लाह की पुस्तक विभिन्न समुदायों और अलग अलग क़ौमों को इस्लाम के झंडे और सिद्धांत की शुद्धता के तहत एकजुट करती है, उन्हें ईमान के बंधन और धर्म की कड़ी से जोड़ती है, उन्हें ताकत में सुसंगत एक राष्ट्र बनाती है जो चारों ओर से एकजुट होता है और जिसकी सारी पंक्तियाँ एकीकृत होती हैं:

﴿إِنَّمَا ٱلۡمُؤۡمِنُونَ إِخۡوَةٞ﴾

मोमिन तो आपस में भाई-भाई ही हैं। (अल-हुजुरात: 10)

जब मुस्लिम अपने रब की किताब के अनुसार कर्म करने में लापरवाही करते हैं; तो कमज़ोरी उन पर हावी हो जाती है, वे अपमान के शिकार हो जाते हैं, कष्ट की परिक्षा उन्हें घेर लेती है, वे अपने दुश्मनों की मृगतृष्णा में चल पड़ते हैं, वे दोस्ती व दुश्मनी के इस्लामी सिद्धांत को बिगाड़ देते हैं, भ्रम और भविष्यवक्ताओं पर विश्वास करने लगते हैं, उन लोगों की बात सुनने लगते हैं जो अदृश्य को जानने और अतीत में आपदाओं और विपत्तियों के बारे में जानने का झूठा दावा करते हैं, खुद को साधनों से जोड़ लेते हैं और यह विश्वास करने की उपेक्षा करने लगते हैं कि अल्लाह ही प्रभुत्वशाली है और उसके राज्य में उसकी चाहत के बिना कुछ नहीं घटता, इसलिए एक मुस्लिम को अपने धर्म पर गर्व करने और अपने प्रभु की पुस्तक का पालन करने की आवश्यकता ह और उसे चाहिए कि अल्लाह के दिन के मामले में चापलूसी से काम ना ले और काफिरों के त्योहारों और पर्वों पर ध्यान न दे, क्योंकि वे झूठे धर्म के लोग हैं और स्पष्ट गुमराही में हैं। जिसे वे अपना त्योहार मानते हैं दिल और ज़बान से उसका इंकार करना एक मुस्लिम के लिए अनिवार्य है।

उनके त्योहारों के कार्यों पर संतुष्टि या उनको उत्सुकता के साथ देखने से बचते रहो; क्योंकि उनके धर्म की बुराइयों को देखने से ईमान में दोष, मन में पथभ्रष्टता और दिलों में संदेह पैदा होता है, जबकि अल्लाह का कथन है:

﴿وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ ٱلْكِتَٰبِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّنۢ بَعْدِ إِيمَٰنِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ ٱلْحَقُّ﴾

बहुत-से किताब वाले अपने भीतर की ईर्ष्या से चाहते है कि किसी प्रकार वे तुम्हारे ईमान लाने के बाद फेरकर तुम्हें इनकार करने वाला बना दें, यद्यपि सत्य उनपर प्रकट हो चुका है। (अल-बक़रह: 109)

हे मुस्लिमो! इस्लाम के अनुग्रह के लिए अल्लाह की प्रशंसा करो; क्योंकि यह मूल्य में सबसे बड़ा और प्रभाव में सबसे गहरा अनुग्रह है, अपने ईमान को इतना उज्ज्वल बनाओ कि उससे आपके जीवन की राहें रोशन हो जाएं, अपने धर्म के प्रति लापरवाही न करो और अपने दुश्मन की नक्काली न करो; पैग़ंबर मीहम्मद ﷺ कहते हैं: "मैंने तुम्हारे बीच दो चीज़ें छोड़ी हैं, जब तक तुम उनको मज़बूती से थामे रहोगे भटकोगे नहीं: अल्लाह की किताब और उसके पैग़ंबर की सुन्नत (पद्दति)।" (मुअत्ता मलिक)

मुस्लिमों के पास उनके रब की किताब है, जो सभी विकृतियों से सुरक्षित है, जो लोक-परलोक की भलाई को इकट्ठा करती है, जिसमें प्रकाश और मार्गदर्शन है और जो परीक्षाओं और विकट प्रलोभनों से बाहर निकालने वाली किताब है; महामहिम प्रभु कहता है:

﴿أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّآ أَنزَلْنَا عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ﴾

क्या उनके लिए यह पर्याप्त नहीं कि हमने तुम पर किताब अवतरित की, जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? निस्संदेह उसमें उन लोगों के लिए दयालुता है और अनुस्मृति है जो ईमान लाते हैं। (अल-अंकबूत: 51)

फिर जान लो कि अल्लाह ने मुहम्मद बिन अब्दुल्ला के रूप में प्रदान की गई दया और आशीर्वाद पर तुम्हें रहमत व शांति भेजने का आदेश दिया है ...

क़ुरआन की महानता[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसे कि डरना चाहिए और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हमारा पवित्र प्रभु अपनी हस्ती, अपने नाम और अपने गुणों में परिपूर्ण है, उसके बराबर या उसके जैसा कोई नहीं, उसके गुण सबसे पूर्ण और अतिसुंदर गुण हैं। उस पवित्र प्रभु के गुणों में से एक: बात करना है; वह अपनी चाहत अनुसार जिस समय चाहता है, जो चाहता है, बात करता है और उसकी बातों का कोई अंत नहीं है:

﴿قُل لَّوۡ كَانَ ٱلۡبَحۡرُ مِدَادٗا لِّكَلِمَٰتِ رَبِّي لَنَفِدَ ٱلۡبَحۡرُ قَبۡلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَٰتُ رَبِّي وَلَوۡ جِئۡنَا بِمِثۡلِهِۦ مَدَدٗا﴾

कहो: "यदि समुद्र मेरे रब के बोल लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो इससे पहले कि मेरे रब के बोल समाप्त हों, समुद्र ही समाप्त हो जाएगा। यद्यपि हम उसके सदृश्य एक और भी समुद्र उसके साथ ला मिलाएँ।" (अल-कह्फ: 109)

उसकी वाणी सर्वोत्तम वाणी है, जैसे सृष्टिकर्ता सृष्टि से श्रेष्ठ है उसी प्रकार उसकी वाणी भी सृष्टि की वाणी से श्रेष्ठ है, उस पवित्र प्रभु के अपने बंदों पर अनगिनत अनुग्रह हैं।

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 14/03/1437 हिजरी को दिया गया।

ये मात्र अल्लाह की बुद्धि और लोगों के साथ उसकी दया के कारण है कि उसने उन के बीच अपने पैग़ंबरों को भेजा, उन पर अपनी किताबें अवतीर्ण कीं, अतः तौरात, इंजील, ज़बूर और इब्राहीम और मूसा के ग्रंथों को अवतीर्ण किया, फिर इस सिलसिले को महान क़ुरआन के साथ समाप्त किया जो गुणवत्ता में इन सब से महान और सम्मान में सर्वश्रेष्ठ है, क़ुरआन के अवतीर्ण करने पर पवित्र प्रभु ने स्वयं की प्रशंसा की, उसने कहा:

﴿ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِيٓ أَنزَلَ عَلَىٰ عَبۡدِهِ ٱلۡكِتَٰبَ وَلَمۡ يَجۡعَل لَّهُۥ عِوَجَاۜ﴾

प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर किताब अवतरित की और उसमें कोई टेढ़ नहीं रखी। (अल-कह्फ:1)

उसके अवतरण द्वारा अपनी सर्वोच्च हस्ती को महान बताया:

﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱلۡفُرۡقَانَ عَلَىٰ عَبۡدِهِۦ لِيَكُونَ لِلۡعَٰلَمِينَ نَذِيرًا﴾

बड़ी बरकतवाला है वह जिसने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान (क़ुरआन) अवतरित किया, ताकि वह सारे संसार के लिए सावधान करनेवाला हो। (अल-फ़ुर्क़ान: 1)

प्रभु ने इस किताब की क़सम भी खाई है उसका कथन है:

﴿يسٓ ۞ وَٱلۡقُرۡءَانِ ٱلۡحَكِيمِ﴾

यासीन, क़सम है हिकमत वाले क़ुरआन की। (यासीन: 1-2)

यह किताब उन चीजों में से एक है जिनकी महानता को सिद्ध करने के लिए क़सम खाई गई है:

﴿فَلَآ أُقۡسِمُ بِمَوَٰقِعِ ٱلنُّجُومِ ۞ وَإِنَّهُۥ لَقَسَمٞ لَّوۡ تَعۡلَمُونَ عَظِيمٌ ۞ إِنَّهُۥ لَقُرۡءَانٞ كَرِيمٞ﴾

अतः नहीं! मैं क़समों खाता हूँ सितारों की स्थितियों की -और यह बहुत बड़ी क़सम है, यदि तुम जानो- निश्चय ही यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है। (अल-वाक़िआ: 75-77)

यह किताब पूर्व की किताबों की तसदीक़ करने वाली, उन पर प्रधानता रखने वाली, उन सब को अव्यावहारिक (रद्द) करार देने वाली और जो कुछ उनमें था उसके प्रति विश्वासपात्र है, इसके अवतीर्ण होने से पहले ही पैगंबरों ने इसकी शुभ सूचना दे दी थी:

﴿وَإِنَّهُۥ لَفِي زُبُرِ ٱلۡأَوَّلِينَ﴾

और निस्संदेह यह पिछले लोगों की किताबों में भी मौजूद है। (अल-शुअरा: 196)

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "इस क़ुरआन का उल्लेख और इसका ज़िक्र पैगंबरों से वर्णित पूर्वजों की किताबों में पाया जाता है।" पैग़ंबर इब्राहीम और इस्माईल (उन दोनों पर शांति हो) ने अल्लाह से दुआ की थी कि अल्लाह इसके पाठ और शिक्षा के लिए नबी को भेजे, अतः दोनों ने कहा:

﴿رَبَّنَا وَٱبۡعَثۡ فِيهِمۡ رَسُولٗا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ﴾

ऐ हमारे रब! उनमें उन्ही में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए और उनको किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा दे। (अल-बक़रह: 129)

क़ुरआन संसार के प्रभु का शब्द है, उसने सुनाई देने योग्य शब्द व ध्वनि के साथ इसे वास्तव में बोला है, उसी से यह शुरू हुआ है और उसी की ओर अंतिम काल में वापस जाएगा। ईश्वर के सर्वश्रेष्ठ फरिश्ते; श्री जिब्रील (उन पर शांति हो) ने इसे अल्लाह से सुना, और इसे महान्तम नबी के शरीर में सबसे सम्मानित भाग; हृदय पर अवतीर्ण किया; पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿نَزَلَ بِهِ ٱلرُّوحُ ٱلۡأَمِينُ ٭ عَلَىٰ قَلۡبِكَ لِتَكُونَ مِنَ ٱلۡمُنذِرِينَ﴾

एक विश्वसनीय आत्मा इसको लेकर तुम्हारे हृदय पर उतरी है। (अल-शुअरा: 193)

सबसे सम्मानजनक स्थान में, सबसे अच्छे महीने में, सबसे अच्छी रात -क़द्र की रात- में एक सर्वश्रेष्ठ उम्मत के लिए और सबसे अच्छी और सर्वसम्मत भाषा में।

एक ऐसी किताब जिसकी तुलना किसी किताब से नहीं की जा सकती:

﴿أَوَلَمۡ يَكۡفِهِمۡ أَنَّآ أَنزَلۡنَا عَلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ يُتۡلَىٰ عَلَيۡهِمۡۚ﴾

क्या उनके लिए यह पर्याप्त नहीं कि हमने तुमपर किताब अवतरित की, जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? (अल-अंकबूत: 51)

इसके द्वारा अल्लाह ने इस उम्मत पर एहसान जताया है और कहा है:

﴿لَقَدۡ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ إِذۡ بَعَثَ فِيهِمۡ رَسُولٗا مِّنۡ أَنفُسِهِمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمۡ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ﴾

निस्संदेह अल्लाह ने ईमानवालों पर बड़ा उपकार किया, जबकि स्वयं उन्हीं में से एक

ऐसा रसूल उठाया जो उन्हें आयतें सुनाता है, उन्हें निखारता है, और उन्हें किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है। (आल-इमरान: 164)

यह प्यारे नबी और आपकी उम्मत के लिए सम्मान की बात है:

﴿وَإِنَّهُۥ لَذِكۡرٞ لَّكَ وَلِقَوۡمِكَۖ وَسَوۡفَ تُسۡـَٔلُونَ﴾

निश्चय ही वह तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए एक अनुस्मृति है । (अल-ज़ुखरुफ: 44)

यही (किताब) इस उम्मत की आत्मा है क्योंकि वास्तविक जीवन इसी पर आधारित है, जब व्यक्ति इस से दूर होता है तो वो एक ज़िंदा लाश बन जाता है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَكَذَٰلِكَ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ رُوحٗا مِّنۡ أَمۡرِنَاۚ﴾

और इसी प्रकार हमने अपने आदेश से एक आत्मा (क़ुरआन) की प्रकाशना तुम्हारी ओर की है। (अल-शूरा: 52)

यदि ईश्वर ने इसे पहाड़ पर अवतीर्ण किया होता तो वह कांप उठता और ईश्वर की आज्ञाकारिता में लीन होकर बिखर जाता।

इसके सारांश व विस्तार पर पूर्ण विश्वास के बिना भक्त का ईमान मान्य नहीं है, पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ ءَامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلۡكِتَٰبِ ٱلَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह पर, उसके रसूल पर और उस किताब पर ईमान लाओ जो उसने अपने रसूल पर उतारी है। (अल-निसा: 136)

और यह किताब आसमान में:

﴿فِي صُحُفٖ مُّكَرَّمَةٖ * مَّرۡفُوعَةٖ مُّطَهَّرَةِۭ * بِأَيۡدِي سَفَرَةٖ * كِرَامِۭ بَرَرَةِۭ﴾

सम्मानित, उच्च व पवित्र पत्रों में अंकित है, जो प्रतिष्ठित और नेक लेखकों (फ़रिश्तों) के हाथों में हैं। (अबस: 13-16)

अल्लाह ने इसको अवतीर्ण करने से पहले ही इसे सुरक्षित कर दिया था:

﴿بَلۡ هُوَ قُرۡءَانٞ مَّجِيدٞ * فِي لَوۡحٖ مَّحۡفُوظِۭ﴾

नहीं, बल्कि वह तो गौरवशाली क़ुरआन है, जो एक सुरक्षित पट्टिका में अंकित है। (अल-बुरूज: 21-22)

और अवतीर्ण करने के समय शैतानों से इसकी रक्षा की:

﴿وَمَا تَنَزَّلَتۡ بِهِ ٱلشَّيَٰطِينُ * وَمَا يَنۢبَغِي لَهُمۡ وَمَا يَسۡتَطِيعُونَ﴾

इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं, और यह उन्हें शोभा भी नहीं देता है और न ये उनके बस का ही है। (अल-शुअरा: 210-211)

और अवतीर्ण करने के बाद भी इसकी सुरक्षा का दायित्व लिया:

﴿إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ﴾

यह अनुसरण निश्चय ही हमने अवतरित किया है और हम स्वयं इसके रक्षक हैं। (अल-हिज्र: 9)

अपने बहुत से अनुग्रहों का उल्लेख करते समय इसी को आगे रखा:

﴿ٱلرَّحۡمَٰنُ * عَلَّمَ ٱلۡقُرۡءَانَ﴾

रहमान ने क़ुरआन सिखाया। (अल-रहमान: 1-2)

ईश्वर ने अपने भक्तों को क़ुरआन सिखाया, उनके लिए इसे पढ़ने, इस पर अमल करने और इसे याद रखने को आसान बना दिया, इसे अरब और ग़ैर-अरब; युवा और बूढ़े, पुरुष और महिला, अमीर और गरीब सभी याद कर सकते हैं।

इस के नाम अनेक हैं, इस के विवरण भिन्न-भिन्न हैं, अल्लाह ने इसे दुनिया भर के लिए एक मार्गदर्शन और एक अनुस्मारक बनाया है, जैसे हमारे पैग़ंबर ﷺ की रिसालत (दूतत्व) सार्वजनिक थी उसी प्रकार ये किताब भी सभी मानव जाति के लिए सार्वजनिक है, इसलिए यह एक उम्मत को छोड़ कर दूसरी उम्मत के लिए विशिष्ट नहीं हैं, इस किताब के हिस्से आपस में एक दूसरे के समान हैं, इसकी आयतें आपस में एक दूसरे की पुष्टि करती हैं:

﴿كِتَٰبٗا مُّتَشَٰبِهٗا مَّثَانِيَ تَقۡشَعِرُّ مِنۡهُ جُلُودُ ٱلَّذِينَ يَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ﴾

एक ऐसी किताब जिसके सभी भाग परस्पर मिलते जुलते हैं। (अल-ज़ुमर: 23)

सीधी-सटीक है जिस में अल्लाह ने टेढ़ापन नहीं रखा, इसमें कोई मतभेद या विरोधाभास नहीं:

﴿وَلَوۡ كَانَ مِنۡ عِندِ غَيۡرِ ٱللَّهِ لَوَجَدُواْ فِيهِ ٱخۡتِلَٰفٗا كَثِيرٗا﴾

यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की ओर से होता, तो निश्चय ही वे इसमें बहुत-सी बेमेल बातें पाते। (अल-निसा: 82)

यह सबसे अच्छा और बेहतरीन कथन है:

﴿ٱللَّهُ نَزَّلَ أَحۡسَنَ ٱلۡحَدِيثِ﴾

अल्लाह ने सर्वोत्तम वाणी अवतरित की है। (अल-ज़ुमर: 23)

श्री नववी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "यह इंगित करता है कि यह ईश्वर की ओर से अवतीर्ण किए गए शब्दों और अन्य शब्दों में सब से उत्तम है।"

अल्लाह ने महानता के गुण के साथ इसका उल्लेख किया है:

﴿وَلَقَدۡ ءَاتَيۡنَٰكَ سَبۡعٗا مِّنَ ٱلۡمَثَانِي وَٱلۡقُرۡءَانَ ٱلۡعَظِيمَ﴾

हमने तुम्हें सात `मसानी` (बार बार पढ़ी जाने वाली आयतों का) समूह और महान क़ुरआन दिया है। (अल-हिज्र: 87)

अल्लाह ने इसके लिए व्यक्तिपरक व वर्णनात्मक ऊँचाई की निर्धारित कर दी है:

﴿وَإِنَّهُۥ فِيٓ أُمِّ ٱلۡكِتَٰبِ لَدَيۡنَا لَعَلِيٌّ حَكِيمٌ﴾

और निश्चय ही वह मूल किताब में अंकित है, हमारे यहाँ बहुत उच्च कोटि की, तत्वदर्शिता से परिपूर्ण है। (अल-ज़ुखरुफ: 4)

अपने शब्द और अर्थ में स्पष्ट है और चीजों का साफ़ स्पष्टीकरण है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿هَٰذَا بَيَانٞ لِّلنَّاسِ وَهُدٗى وَمَوۡعِظَةٞ لِّلۡمُتَّقِينَ﴾

यह लोगों के लिए स्पष्टीकरण और डर रखने वालों के लिए मार्गदर्शन और उपदेश है। (आल इमरान: 138)

श्री इब्ने-मसऊद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "उसने इस क़ुरआन में हमारे लिए सारा ज्ञान और सब कुछ स्पष्ट रूप से बयान कर दिया है।"

ये (किताब) बुद्धिमान है, समस्त बुद्धि उसी में है और उसी से है:

﴿تِلۡكَ ءَايَٰتُ ٱلۡكِتَٰبِ ٱلۡحَكِيمِ﴾

ये तत्वज्ञान से परिपूर्ण किताब की आयते हैं। (लुक़मान: 2)

अल्लाह के निकट प्रतिष्ठित है, इसमें सर्वोच्च सम्मान की बातें हैं, इसी से भक्त को अल्लाह और उसकी रचना की दृष्टि में सम्मानित और गौरवान्वित किया जाता है। महान अल्लाह ने कहा:

﴿إِنَّهُۥ لَقُرۡءَانٞ كَرِيمٞ﴾

निश्चय ही यह प्रतिष्ठित क़ुरआन है। (अल-वाक़िआ: 77)

इसमें सृष्टि के लिए मार्गदर्शन है और मार्गदर्शन के साथ-साथ दया भी है:

﴿هُدٗى وَرَحۡمَةٗ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ﴾

ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है। (अल-आराफ: 52)

ये अपना पालन करने वालों के लिए अचूकता है; प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "मैंने तुम्हारे बीच ऐसी चीज़ छोड़ दी है जिसके बाद यदि तुम उसे मज़बूती से पकड़े रहोगे तो अभी नहीं भटकोगे: वह है अल्लाह की पुस्तक।" (सही मुस्लिम)

यह किताब गौरवशाली है और सम्मान की चोटी पर पहुँची हुई है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿قٓۚ وَٱلۡقُرۡءَانِ ٱلۡمَجِيدِ﴾

क़ाफ़; कसम है गौरवशाली क़ुरआन की! (क़ाफ: 1)

महिमावान है, उसकी महिमा में कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता, जो उसके करीब आता है; उसे भी महिमा प्राप्त हो जाती है:

﴿وَإِنَّهُۥ لَكِتَٰبٌ عَزِيزٞ﴾

और वह एक महिमावान पुस्तक है। (फुस्सिलत: 41)

ऐसी सर्वोच्च है जिसकी ऊँचाई तक नहीं पहुँचा जा सकता, अच्छाइयों और लाभों से भरपूर है, और इसमें आशीर्वाद के कई पहलू हैं, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَهَٰذَا كِتَٰبٌ أَنزَلْنَٰهُ مُبَارَكٌ﴾

और यह किताब भी हमने उतारी है, जो बरकत वाली है। (अल-अंआम: 155)

जो इसे पढ़ता है, इसके अनुसार कर्म करता है और इसे क्षितिज में फैलाता है, वह प्रतिष्ठित हो जाता है, उसे सुरक्षा और समृद्धि प्राप्त होती है। श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "श्री उस्मान बिन अफ्फान (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) के खिलाफत-काल में इस्लामी साम्राज्य पूरब और पश्चिम के आखिरी किनारों तक फैल गया था, और ये सब उनके क़ुरआन पाठ, अध्ययन और क़ुरआन की रक्षा के लिए उम्मत को जोड़ने की बरकत के नतीजे में हुआ था।"

अल्लाह कि पुस्तक जीवन में एक प्रकाश है, जिस से लोक-परलोक का जीवन प्रकाशमय हो जाता है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿قَدْ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٌ وَكِتَٰبٌ مُّبِينٌ﴾

तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से एक प्रकाश और स्पष्ट किताब आ गई है। (अल-माइदा: 15)

इसके द्वारा आत्माएँ जीवित होती हैं, ये अपने मानने वालों के लिए जीवन है:

﴿ٱسْتَجِيبُوا۟ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ﴾

अल्लाह और रसूल की बात मानो, जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हें जीवन प्रदान करने वाली है। (अल-अंफ़ाल: 24)

यह आत्माओं का जीवन होने के साथ-साथ, शारीरिक रोगों का भी इलाज है: "प्यारे नबी ﷺ के ज़माने में एक बिच्छू ने आदमी को डंक मार दिया तो उस पर सूरह अल-फ़ातिहा का पाठ किया गया तो वह आदमी ठीक हो गया।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

ये प्रलोभन, विपत्तियों और कठिनाइयों के समय में, दिल के लिए सीख और दृढ़ता का समान है:

﴿كَذَٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِۦ فُؤَادَكَ ۖ﴾

ऐसा इसलिए किया गया ताकि हम इसके द्वारा तुम्हारे दिल को मज़बूत रखें। (अल-फ़ुर्क़ान: 32)

क़ुरआन द्वारा ही उम्मत की बात एकत्रित हो सकती है और उसके मतभेद समाप्त हो सकते हैं:

﴿وَٱعْتَصِمُوا۟ بِحَبْلِ ٱللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا۟﴾

और अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और पंथों में न बटो। (आल इमरान: 103)

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "वह रूप और अर्थ में परिपूर्ण है।" उसकी आयतें शब्दों में सटीक और अर्थ में विस्तृत हैं:

﴿كِتَٰبٌ أُحْكِمَتْ ءَايَٰتُهُۥ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِن لَّدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ﴾

यह एक किताब है जिसकी आयतें पक्की हैं, फिर सविस्तार बयान हुई हैं; उस हस्ती की ओर से जो अत्यन्त तत्वदर्शी, पूरी ख़बर रखनेवाला है। (हूद: 1)

अल्लाह ने इसी किताब द्वारा अगले पिछले मनुष्यों तथा जिन्नों को चुनौती दी है, सो कहा:

﴿قُل لَّئِنِ ٱجْتَمَعَتِ ٱلْإِنسُ وَٱلْجِنُّ عَلَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِمِثْلِ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِۦ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا﴾

कह दो: "यदि मनुष्य और जिन्न इसके लिए इकट्ठे हो जाएँ कि क़ुरआन जैसी कोई चीज़ ले आएँ, तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे, चाहे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न हों।" (अल-इस्रा: 88)

जिस समझदार व्यक्ति ने भी इसे सुना यही गवाही दी कि यह सत्य है, जिन्नों ने इसे सुना और एक दूसरे से कहा: शांत होकर सुनो, वे अपने लोगों के पास लौट आए और कहा:

﴿إِنَّا سَمِعْنَا قُرْءَانًا عَجَبًا﴾

हमने एक मनभाता क़ुरआन सुना है। (अल-जिन्न: 1)

सर्वोत्तम और सर्वश्रेष्ठ स्मरण जिसके पाठन से ईमान में बढ़ोतरी होती है:

﴿إِنَّمَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُهُۥ زَادَتْهُمْ إِيمَٰنًا﴾

ईमान वाले तो वही लोग है जिनके दिल उस समय काँप उठते हैं जब अल्लाह को याद किया जाता है। और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे उनके ईमान को और अधिक बढ़ा देती हैं। (अल-अंफ़ाल: 2)

इसकी आयतों ने महापुरुषों को रुलाया है; "श्री इब्ने-मसऊद (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) अल्लाह के पैग़ंबर को सूरा अल-निसा में से कुछ सुनाया, जब वह इस आयत पर पहुँचे:

﴿فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍۭ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰٓؤُلَآءِ شَهِيدًا﴾

फिर क्या हाल होगा जब हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह लाएंगे और स्वयं तुम्हें इन लोगों के मुक़ाबले में गवाह बनाकर पेश करेंगे? (अल-निसा: 41)

प्यारे नबी ﷺ ने उनसे कहा: बस करो, कहते हैं कि मैंने आप की ओर देखा, आप की दोनों आंखें अश्रुधारित थीं।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) "श्री अबू बक्र (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) जब क़ुरआन पढ़ते तो उनके रोने के कारण पीछे के लोगों को मुश्किल से सुनाई देता।" और "श्री जा'फर अल-तय्यार (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) ने राजा नजाशी के सामने सूरह मरयम की प्रारंभिक आयतें पढ़ीं तो वो इतना रोये कि उनकी दाढ़ी भीग गई और उनके बिशप भी इतना रोये कि उनकी प्रतियां भी भीग गईं।"

और अल्लाह ने शरण माँगने वाले काफ़िर को भी क़ुरआन सुनने तक शरण दे देने का आदेश दिया है; पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ٱسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّىٰ يَسْمَعَ كَلَٰمَ ٱللَّهِ﴾

और यदि मुशरिकों में से कोई तुमसे शरण माँगे, तो तुम उसे शरण दे दो, यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले। (अल-तौबा: 6)

इस पुस्तक ने सर्वव्यापक विद्या और सर्वाधिक लाभकारी ज्ञान को सम्मिलित किया

है, इसके अपने जो इसका अर्थ जानते हैं वही वास्तव में उल'मा (विद्वान) हैं। पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿بَلۡ هُوَ ءَايَٰتُۢ بَيِّنَٰتٞ فِي صُدُورِ ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡعِلۡمَۚ﴾

नहीं, बल्कि वह तो उन लोगों के सीनों में विद्यमान खुली निशानियाँ है, जिन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है। (अल-अंकबूत: 49)

क़ुरआन के शिक्षक और शिक्षार्थी सबसे अच्छे लोग हैं, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुममें सबसे अच्छा वह है जो क़ुरआन सीखता और सिखाता है।" (सही बुख़ारी)

इसमें सबसे सच्ची ख़बरें, सबसे स्पष्ट प्रमाण और साक्ष्य, सबसे अच्छे क़िस्से, सर्वाधिक जानकारीपूर्ण ज्ञान और अतिसुंदर वाक्पटुता और वाग्मिता है, इस्लाम के महान विद्वान इब्ने-तैमिया (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "यूँ तो स्वयं क़ुरआन की शब्द प्रणाली और उसकी भाषा शैली ही मनमोहक तथा अद्भुत है, ये भाषण की प्रसिद्ध शैलियों से हट कर है, कोई भी इस शैली के अनुरूप नहीं ला सका है; क्योंकि यह कविता, संगीत, भाषण या पत्रों की भांति नहीं है, न ही इसकी शब्द प्रणाली -अरब ग़ैर-अरब- लोगों की शब्द प्रणाली से मिलती-जुलती है, लेकिन इसके अर्थ का चमत्कार इसके उच्चारण के चमत्कार से भी महान और अधिक है।"

ईश्वर की पुस्तक अपने प्रावधानों में व्यापक है, न्याय में परिपूर्ण है, अपने आदेशों और निषेधों में बुद्धिमान है, उस पर प्रतिष्ठा और महिमा है, इसमें ताकत, प्रभाव और सुंदरता है, अपने कम से कम शब्दों द्वारा चमत्कारी है, अपने आसान से आसान प्रमाणों से मार्गदर्शन करती है, एक खुली निशानी है, एक प्रत्यक्ष चमत्कार है, जो इस पर अमल करेगा उसे पुण्य दिया जाएगा, जो इसके द्वारा फैसला करेगा वह न्याय करेगा, जो इसे मज़बूती से थामे रहेगा वह सुरक्षित होगा और जो इसका अनुसरण करेगा उस पर दया की जाएगी:

﴿فَٱتَّبِعُوهُ وَٱتَّقُواْ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُونَ﴾

तो तुम इसका अनुसरण करो और डर रखो, ताकि तुमपर दया की जाए। (अल-अंआम: 155)

यह सबसे उपयोगी और व्यापक ज़िक्र है, इसे पढ़ने वाले की अल्लाह ने प्रशंसा की है और इसके अनुसार अमल करने वालों की तारीफ की है, उनसे पूर्ण बदले और वृद्धि का वादा किया है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَتۡلُونَ كِتَٰبَ ٱللَّهِ وَأَقَامُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَأَنفَقُواْ مِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ سِرّٗا وَعَلَانِيَةٗ يَرۡجُونَ تِجَٰرَةٗ لَّن تَبُورَ ٭ لِيُوَفِّيَهُمۡ أُجُورَهُمۡ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضۡلِهِۦٓۚ﴾

निश्चय ही जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं, इस हाल मे कि नमाज़ के पाबन्द हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया हैं, उसमें से छिपे और खुले ख़र्च किया है, वे एक ऐसे व्यापार की आशा रखते हैं जो कभी तबाह न होगा, ताकि परिणामस्वरूप वह उन्हें उनके प्रतिदान पूरे-पूरे दे और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक भी प्रदान करे। (फ़ातिर: 29-30)

यह कई गुना लाभ का व्यापार है, जो इसका एक अक्षर पढ़ेगा, उसके लिए एक नेकी होगी और एक नेकी का मूल्य दस गुना अधिक है, इसे सीखना दुनिया के धन से अधिक अच्छा है। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से किसे पसंद है कि प्रति दिन सुबह वह बुतहान या अक़ीक़ की घाटी की ओर जाए और वहां किसी अपराध और रिश्ता तोड़े बिना दो बड़े-बड़े कूबड़ वाली ऊंटनियां प्राप्त करे? हमने कहा: हे अल्लाह के पैग़ंबर! हम सब को यह पसंद है, आपने फ़रमाया: फिर तुम में से कोई सुबह को मस्जिद में महान अल्लाह की किताब की दो आयतें पढ़ने या सीखने क्यों नहीं जाता! ये उसके लिए दो ऊँटों से भी बेहतर है, तीन आयतें तीन ऊँटों से बेहतर हैं, चार आयतें चार ऊँटों बेहतर हैं और जितनी आयतें होंगी उतने ही ऊँटों से बेहतर हैं।" (सही मुस्लिम) और "क़ुरआन का विशेषज्ञ व्यक्ति नेक सम्माननीय लेखकों के साथ होगा।" (सही बुख़ारी सही मुस्लिम)

क़ुरआन की बैठकें और इसके विद्या संस्थान, इसके शिक्षकों और शिक्षार्थियों के लिए शांति और कृपा के स्थान हैं, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब भी लोग अल्लाह के किसी घर में इकट्ठा होकर अल्लाह की पुस्तक का पाठ करते हैं, आपस में उसका अध्ययन करते हैं; तो उनपर शांति उतरती है, कृपा उन्हें ढँक लेती है, फरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह अपने साथ वालों के बीच उनका उल्लेख करता है।" (सही मुस्लिम)

इसको सुनने से कृपा प्राप्त होती है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَإِذَا قُرِئَ ٱلۡقُرۡءَانُ فَٱسۡتَمِعُواْ لَهُۥ وَأَنصِتُواْ لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُونَ﴾

जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो और चुप रहो, ताकि तुमपर दया की जाए। (अल-आ'राफ: 204)

इसको थामना और इसे पढ़ते रहना उम्मत के लिए पैग़ंबर ﷺ की वसिय्यत है,

श्री अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से अल्लाह के नबी ﷺ की वसिय्यत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा: प्यारे नबी ﷺ ने अल्लाह की पुस्तक के प्रति वसिय्यत की है।" (सही बूखारी व सही मुस्लिम) श्री इब्ने-हजर (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "अल्लाह की पुस्तक के प्रति वसिय्यत का अर्थ यह है कि बाहरी और आंतरिक रूप से इसकी रक्षा की जाए, अर्थात: इस किताब का सम्मान किया जाए, संरक्षण किया जाए, जो कुछ इसके अंदर है उसका अनुसरण किया जाए और लगातार इसका पाठ किया जाए, इसकी शिक्षा ली जाए और दी जाए।"

क़ुरआन के धारक को उसके जीवन के दौरान और मृत्यु के बाद भी सम्मानित किया जाता है, जीवन में: "नमाज़ में वही लोगों का इमाम होगा जो अल्लाह की पुस्तक का सबसे अधिक जानकार होगा" (सही मुस्लिम) और मृत्यु के बाद: प्यारे नबी ﷺ उहुद के युद्ध में शहीद होने वालों में से दो दो को एक ही कफ़न में डाल रहे थे और कहते थे: इन दोनों में से किसको क़ुरआन का अधिक ज्ञान है? फिर उन दोनों में से जिसकी ओर इशारा किया जाता; आप ﷺ उसे कब्र में आगे रखते।" (सही बुख़ारी) क़ुरआन वाले व्यक्ति के बेहतरीन साथी होते हैं; "क़ुरआन के पाठक ही श्री उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की मजलिसों और परामर्शों के साथी हुआ करते थे।" (सही बुख़ारी)

क़ुरआन न्याय के दिन अपने मानने वालों के लिए तर्क होगा, और एक ऐसा सिफारिशी होगा जिसकी सिफारिश संसार के प्रभु के निकट ग्रहण की जाएगी, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क़ुरआन पढ़ो; यह पुनरुत्थान के दिन अपने अनुयायियों के लिए सिफारिशी के रूप में आएगा।" (सही मुस्लिम) क़ुरआन का पाठक आनंद के उच्चतम शिखर पर होगा, "क़ुरआन पाठक से कहा जाएगा: पढ़ते जाओ और चढ़ते जाओ, उसी तरह ठहर ठहर कर पढ़ो जैसे तुम दुनिया में पढ़ा करते थे, क्योंकि तुम्हारा निवास स्थान वहीं है जहाँ तुम अंतिम आयत पढ़ोगे।" (सुनन अबू-दाऊद)

फिर हे मुस्लिमो!

महान क़ुरआन और उसकी शिक्षा में आनंद ईमान के उच्चतम शिखरों में से एक है, ईश्वर की पुस्तक के बिना किसी के लिए कोई चारा नहीं, क्योंकि हमारे प्यारे नबी मुहम्मद ﷺ लोगों में सबसे अधिक बुद्धिमान थे, उसके बावुजूद आपकी पूर्ण बुद्धिमत्ता ने आपको दुरुस्त रास्ता नहीं दिखाया; बल्कि क़ुरआन आपका मार्गदर्शन करता था; पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿قُلۡ إِن ضَلَلۡتُ فَإِنَّمَآ أَضِلُّ عَلَىٰ نَفۡسِيۖ وَإِنِ ٱهۡتَدَيۡتُ فَبِمَا يُوحِيٓ إِلَيَّ رَبِّيٓۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٞ قَرِيبٞ﴾

कहो, "यदि मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँ तो पथभ्रष्ट होकर मैं अपना ही बुरा करूँगा, और यदि मैं सीधे मार्ग पर हूँ, तो इसका कारण वह प्रकाशना है जो मेरा रब मेरी ओर करता है। निस्संदेह वह सब कुछ सुनता है, निकट है।" (सबा: 50)

लोगों में सबसे सुखी व्यक्ति वह है जो ईश्वर की किताब के सबसे करीब होता है, यह मुस्लिमों का सम्मान और सर्वोच्चता है, पीढ़ियों की प्रगति और गौरव है, यह समाज के लिए सुरक्षा है, उस पर आशीर्वाद है, इसमें अपनापन और उत्थान है और संसार के प्रभु की संतुष्टि है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدۡ جَآءَتۡكُم مَّوۡعِظَةٞ مِّن رَّبِّكُمۡ وَشِفَآءٞ لِّمَا فِي ٱلصُّدُورِ وَهُدٗى وَرَحۡمَةٞ لِّلۡمُؤۡمِنِينَ﴾

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से उपदेश, सीनों के रोगों का उपचार और मोमिनों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता आ चुकी है। (यूनुस: 57)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।...

दूसरा खुत्बा (उपदेश)

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

जो क़ुरआन का अनुसरण करेगा वह सत्य मार्ग पर रहेगा और जो उससे विमुख होगा वह विनाश की ओर भटक जाएगा, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿فَمَنِ ٱتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشۡقَىٰ ۞ وَمَنۡ أَعۡرَضَ عَن ذِكۡرِي فَإِنَّ لَهُۥ مَعِيشَةٗ ضَنكٗا وَنَحۡشُرُهُۥ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ أَعۡمَىٰ﴾

तो जिस किसी ने मेरे मार्गदर्शन का अनुपालन किया, वह न तो पथभ्रष्ट होगा और न तकलीफ़ में पड़ेगा, और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोडा़ तो उसका जीवन संकीर्ण होगा और क़यामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे।" (ताहा: 123-124)

इसके बिना मार्गदर्शन का कोई रास्ता नहीं है।

जिसका हृदय इससे लाभान्वित न हो सका, भला वह किसी दूसरे साधन से क्या मार्गदर्शित होगा?

﴿فَبِأَيِّ حَدِيثِۭ بَعۡدَ ٱللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ يُؤۡمِنُونَ﴾

अब अल्लाह और उसकी आयतों के पश्चात आख़िर और कौन-सी बात है जिसपर वे ईमान लाएंगे? (अल-जासिया: 6)

जैसे क़ुरआन अपने साथी को ऊँचा स्थान दिलाता है वैसे ही यह उन लोगों को नीचे भी गिराता है जो इससे शत्रुता करते हैं, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "वास्तव में इस पुस्तक के द्वारा, अल्लाह कुछ लोगों को ऊँचा करता है और कुछ लोगों को नीचे गिराता है।" (सही मुस्लिम)

अल्लाह का कलाम सम्माननीय और महान है, जो इसके एक अक्षर को भी अस्वीकार करता है या उसकी हंसी उड़ाता है वह काफ़िर हो जाता है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿قُلْ أَبِٱللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ۞ لَا تَعْتَذِرُوا۟ قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَٰنِكُمْ﴾

कहो, "क्या अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हंसी-मज़ाक़ कर रहे थे? बहाने न बनाओ, तुम अपने ईमान के पश्चात कुफ़्र कर चुके हो। (अल-तौबा: 66)

जिस ने भी अल्लाह की पुस्तक, उससे संबंधित लोगों, या उसकी शिक्षा का उपहास किया है, अल्लाह ने उसे अवश्य अपमानित किया है, एक मुसलमान को चाहिए कि उच्चतम क्रम प्राप्त करने हेतु अपने प्रभु की किताब का समर्थन और उस पर गर्व करे।

तो जान लो कि अल्लाह ने आपको अपने पैग़ंबर पर आशीर्वाद और शांति भेजने का आदेश दिया है।...

रसूलों पर ईमान

नबी और रसूल[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो महानता और ऐश्वर्य के साथ एक है, पूर्णता के गुणों से युक्त है और समानताओं और उदाहरणों से पाक है। मैं उसी पवित्र प्रभु की प्रशंसा करता हूँ और उसका ऐसा शुक्र अदा करता हूँ जो अनुग्रहों में बढ़ोतरी करता है और उन्हें समाप्ति से सुरक्षित रखता है।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है, उसका कोई साझी नहीं है, वो महान और सर्वोच्च है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद अल्लाह के भक्त और दूत हैं, जो उदार विशेषताओं वाले और सम्माननीय गुणों वाले हैं। अल्लाह का आशीर्वाद हो उन पर, उनके परिवार और साथियों पर जो सबसे अच्छा परिवार और सबसे अच्छे साथी हैं, और क़यामत के दिन तक श्रद्धा के साथ उनका पालन करने वालों पर।

अम्मा बा'द

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए, जो अपने प्रभु से भय रखेगा अल्लाह उसे बचाएगा, जो उसकी ओर ध्यान करेगा अल्लाह उस की सहायता करेगा और उसका मार्गदर्शन करेगा, जो उसका शुक्र अदा करेगा उसे और बढ़ा कर देगा और उसे संतुष्ट करदेगा।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने उस समय रसूलों को भेजा जब हर समुदाय ने अपने मतों के अंधेरों और अपनी पथभ्रष्टता के झूठों को आधार बना लिया था, फिर उन रसूलों के द्वारा सृष्टि को सत्य मार्ग दिखाया, उनके सामने तरीकों को स्पष्ट किया। सुख और सफलता उन्ही के हाथों पर मिल सकती है और उन्ही के अनुसरण से अल्लाह की संतुष्टि प्राप्त की जा सकती है।

नबियों पर ईमान लाना ईमान के सिद्धांतों में से एक है, हम उनके प्रति सारांश पर सारांशिक रूप से व विस्तार पर विस्तारित रूप से ईमान लाते हैं।

---

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 17/04/1420 हिजरी को दिया गया।

उन्होंने इंसाफ़ और न्याय का तराज़ू उठाया, अल्लाह ने अपनी पुस्तक में उनमें से पच्चीस नबियों और रसूलों का उल्लेख किया है, श्री अबू ज़र (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "मैंने कहा: हे अल्लाह के रसूल! रसूलों की संख्या कितनी है? आप ﷺ ने फ़रमाया: तीन सौ दस से कुछ अधिक की भारी संख्या।" (मुस्नद अहमद)

एक मार्गदर्शन और प्रकाश के साथ चलने वाले क़ाफ़िला था, जिनमें से पहले आने वाला बाद में आने वाले की शुभ सूचना देता और बाद में आने वाला पहले गुज़रने वाले की तस्दीक़ करता था, वे अपनी भाषा की वाक्पटुता, अपनी अभिव्यक्ति की उदात्तता, अपनी कौमों के प्रति करुणा, दयालुता और कृपा की पूर्णता से सुसज्जित थे, उनकी वंशावली महान और उनकी उत्पत्ति सम्मानजनक थी, अल्लाह ने उन्हें अत्यंत पूर्णता और सुंदरता के साथ बनाया था:

﴿ٱللَّهُ أَعۡلَمُ حَيۡثُ يَجۡعَلُ رِسَالَتَهُۥۗ﴾

अल्लाह भली-भाँति उस (के औचित्य) को जानता है, जिसमें वह अपनी पैग़म्बरी रखता है। (अल-अंआम: 124)

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के लिए अमल को शुद्ध बनाना तथा निय्यत की शुद्धि और सुधार; आज्ञाकारिता के स्वीकार होने में बुनियादी चीज़ है, पूज्य प्रभु के प्रति शुद्धता के उद्देश्य को पूरा करने में सबसे अधिक प्रयास पैग़ंबर ही किया करते थे।

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلۡ مِنَّآۖ إِنَّكَ أَنتَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡعَلِيمُ﴾

"ऐ हमारे रब! हमारी ओर से इसे स्वीकार कर ले, निस्संदेह तू सुनता-जानता है। (अल-बक़रह: 127)

हलाल धन अर्जित करना और उसे संदेह और वर्जनाओं से दूर रखना धर्मप्रचारक की स्वीकार्यता को बढ़ाता और दिलों में अधिक प्रभाव डालता है, इसलिए नबी अपनी कमाई के साधन को अच्छा रखने का प्रयास करते रहे; अतः पैग़ंबर दाऊद (उन पर शांति हो) अपने हाथ की कमाई से ही खाते थे, पैग़ंबर ज़कारिय्या (उन पर शांति हो) बढ़ई थे और कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने भेड़-बकरियाँ न चराई हों।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلرُّسُلُ كُلُواْ مِنَ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَٱعۡمَلُواْ صَٰلِحًاۖ﴾

"ऐ पैग़म्बरो! अच्छी पाक चीज़ें खाओ और अच्छा कर्म करो। (अल-मूमिनून: 51)

हे मुस्लिमो!

अच्छे कर्म, अच्छे बोल और नैतिकता नबियों का तरीक़ा रहा है, जो विधान उन्होंने बनाया है वही नैतिकता और कर्मों को तौलने का पैमाना है, वे लोग इंसानों में सबसे नेक-दिल, सबसे गहरे ज्ञानी और सबसे बढ़कर सहनशील थे, उनके गुण प्रशंसनीय और उनके व्यवहार गौरवशाली थे।

माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार: महान अल्लाह पैग़ंबर यह्या (उन पर शांति हो) के बारे में कहता है:

﴿وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُن جَبَّارًا عَصِيًّا﴾

वह अपने माँ-बाप का हक़ पहचानने वाला था। और वह सरकश अवज्ञाकारी न था। (मरयम: 14)

वे वादे की सच्चाई:

﴿وَٱذْكُرْ فِى ٱلْكِتَٰبِ إِسْمَٰعِيلَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ صَادِقَ ٱلْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا﴾

और इस किताब में इस्माईल की चर्चा करो। निस्संदेह वह वादे का सच्चा था, नबी और रसूल था। (मरयम: 54)

वे सहनशीलता और संयम:

﴿إِنَّ إِبْرَٰهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّٰهٌ مُّنِيبٌ﴾

निस्संदेह इब्राहीम बड़ा ही सहनशील, कोमल हृदय और हमारी ओर पलटने वाला था। (हूद: 75)

पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) के अंदर ये सब उदारता और दरियादिली से सूसोजित था; वह चुपके से अपने परिवार के पास गए और एक मोटा भुना हुआ बछड़ा ले आए और उसे तीन मेहमानों के सामने पेश कर दिया। एक आदमी ने अल्लाह के रसूल मुहम्मद ﷺ से धन माँगा तो आपने उसे दो पहाड़ों के बीच की जगह भरकर बकरियों का दल प्रदान कर दिया।

शुद्धता और पारदर्शिता: (ज़ुलेखा ने पैग़ंबर यूसुफ (उन पर शांति हो) के बारे में कहा था) :

﴿وَلَقَدۡ رَٰوَدتُّهُۥ عَن نَّفۡسِهِۦ فَٱسۡتَعۡصَمَۖ﴾

हाँ, मैंने ही इसे रिझाना चाहा था, किन्तु यह बचा रहा। (यूसुफ: 32)

दूसरों की भलाई को याद रखना और उनके एहसान का पास रखना: (ज़ुलेखा के बहकावे के जवाब में उन्होंने कहा था:)

﴿مَعَاذَ ٱللَّهِۖ إِنَّهُۥ رَبِّيٓ أَحۡسَنَ مَثۡوَايَۖ﴾

"अल्लाह की पनाह! मेरे आक़ा ने मुझे अच्छा स्थान दिया है, (अत: मैं उनके साथ ग़द्दारी नहीं कर सकता)। (यूसुफ: 23)

वे बुरा करने वालों को क्षमा करते और ज़्यादती करने वालों को माफ करते थे:

﴿لَا تَثۡرِيبَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡيَوۡمَۖ يَغۡفِرُ ٱللَّهُ لَكُمۡۖ وَهُوَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

(यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा) आज तुमपर कोई आरोप नहीं। अल्लाह तुम्हें क्षमा करे। वह सबसे बढ़कर दयावान है। (यूसुफ: 92)

मक्का के विजय के पश्चात अल्लाह के नबी मुहम्मद ﷺ ने क़ुरैश कबीले के सरदारों से कहा था: "जाओ, तुम सब स्वतंत्र हो।"

अल्लाह ने नबियों को परिपूर्ण बुद्धि, पूर्ण समझ और अपार ज्ञान द्वारा दूसरे लोगों पर विशेषता दी थी:

﴿فَفَهَّمۡنَٰهَا سُلَيۡمَٰنَۚ وَكُلًّا ءَاتَيۡنَا حُكۡمٗا وَعِلۡمٗاۚ﴾

तब हमने वह मामला सुलैमान को समझा दिया और वैसे तो प्रत्येक (नबी) को हमने निर्णय-शक्ति और ज्ञान प्रदान किया था। (अल-अंबिया: 79)

उनकी विनम्रता अत्याधिक थी; उनमें सबसे उत्तम; अंतिम नबी ﷺ स्वयं अपनी बकरी का दूध दुहते, खुद की सेवा करते और अपने जूते सीते थे।

हे मुस्लिमो!

सब्र (संयम) के बिना जन्नत प्राप्त नहीं की जा सकती:

﴿وَمَا يُلَقَّىٰهَآ إِلَّا ٱلَّذِينَ صَبَرُواْ﴾

किन्तु यह चीज़ केवल उन लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्य से काम लेते है। (फ़ुस्सिलत: 35)

जब बड़ी संख्या में विपत्तियाँ आती हैं और स्थिति गंभीर हो जाती है, तो उस समय पुरुष की पहचान होती है और ईमान निखर कर सामने आता है, पैगंबरों ने अपने विरोधियों की ओर से विपत्तियों और भयावहता का सामना किया, वे उन्हें नीच समझते, धमकाते, नुकसान पहुँचाते और उन्हें कष्ट देने में बढ़-चढ़कर भाग लेते थे।

पैग़ंबर नूह (उनपर शांति हो) और उनकी क़ौम के बीच साढ़े नौ सौ वर्ष के लंबे ज़माने तक बहस चलती रही, पैग़ंबर लूत (उनपर शांति हो) को ऐसे लोगों के पास भेजा गया जो डकैती करते, साथी के साथ विश्वासघात करते, अपनी बैठकों में जघन्य अपराध करते और अपने पास बेठे व्यक्ति से शर्म तक न करते थे। पैग़ंबर अय्यूब (उनपर शांति हो) का धैर्य उदाहरणीय है, उनका शरीर विभिन्न प्रकार के कष्टों से पीड़ित था, उनकी बीमारी इतनी लंबी हो गई थी कि साथी कतराने लगे और मित्र घबराने लगे; इसके बावुजूद उनके धैर्य, प्रशंसा, धन्यवाद और समीक्षा में बढ़ोतरी ही हुई। लोगों ने उहुद की लड़ाई में प्यारे नबी मुहम्मद ﷺf को लहूलुहान कर दिया, आपका सामने का दाँत तोड़ दिया, आपके छह बच्चे आपके जीवन में ही परलोक सिधार गए, आपका मन दुखी हुआ, दिल रोया और आँखों से आँसू बबही बहे और कुछ पैगंबरों की तो हत्या तक कर दी गई, अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَيَقۡتُلُونَ ٱلۡأَنۢبِيَآءَ بِغَيۡرِ حَقّٖ﴾

और वे नबियों को नाहक क़त्ल करते हैं। (आल-इमरान: 21)

पैग़ंबर ही सबसे कठोर पीड़ा वाले लोग हैं और सबसे बढ़कर सब्र भी उन्होंने ही किया है, प्यारे नबी ﷺ कहते हैं: "सबसे कठोर पीड़ा वाले लोग पैग़ंबर हैं, फिर उन जैसे, फिर उन जैसे।" (सुनन नसई)

हे मुस्लिमो!

यदि भक्त ईश्वर पर निर्भरता को प्राप्त कर लेता है, मामलात उसे सौंप देता है और साथ ही साधनों को अपनाने में भी कोई कोताही नहीं करता; तो उसे आसमान की ओर से राहत मिलती है; पैग़ंबर इब्राहीम खलील (उन पर शांति हो) को मैंगोनल के पल्ले से बांध कर अग्नि में फेंक दिया गया, तो उन्होंने बस इतना कहा:

﴿حَسۡبُنَا ٱللَّهُ وَنِعۡمَ ٱلۡوَكِيلُ﴾

हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।

तो अल्लाह ने उस अग्नि को ठंडा और सुरक्षित बना दिया। जब अल्लाह के नबी को दुश्मनों की बड़ी संख्या और उनकी सभा से डराया गया तो उन्होंने कहा:

﴿حَسۡبُنَا ٱللَّهُ وَنِعۡمَ ٱلۡوَكِيلُ﴾

हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है। (आल-इमरान: 173)

फिर अल्लाह ने उनके जमावड़े को बिखेर दिया और उनके षड्यंत्र को बेकार कर दिया।

दुआ से निर्बलों को बल मिलता है, दुखियारों को आनन्द प्राप्त होता है और राहत का द्वार खुलता है; पैग़ंबर अय्यूब (उन पर शांति हो) ने अपने प्रभु को पुकारा:

﴿وَأَيُّوبَ إِذۡ نَادَىٰ رَبَّهُۥٓ أَنِّي مَسَّنِيَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

"मुझे बहुत कष्ट पहुँचा है, और तू दयावानों का दयावान है।" (अल-अंबिया: 83)

तो प्रभु ने उनकी पुकार का जवाब दिया, उनके कष्ट को दूर कर दिया और उन्हें उनका परिवार लोटा दिया और उनके साथ उतना और बढ़ाकर दिया। पैग़ंबर ज़करिय्या (उनपर शांति हो) ने अपनी हड्डियों की कमज़ोरी और मृत्यु की निकटता के बावुजूद अपने प्रभु को पुकारा:

﴿رَبِّ لَا تَذَرۡنِي فَرۡدٗا وَأَنتَ خَيۡرُ ٱلۡوَٰرِثِينَ﴾

"ऐ मेरे रब! मुझे अकेला न छोड़, सबसे अच्छा वारिस तो तू ही है।" (अल-अंबिया: 89)

तो प्रभु ने उनकी दुआ कबूल की, उन्हें (पुत्र के रूप में) यह्या प्रदान किया और उनके लिए उनकी पत्नि को ठीक कर दिया।

हे मुस्लिमो!

पूर्ण सुख पुत्रों के सुधार पर आधारित है; वे शेष वंश और दूसरी आयु हैं, अल्लाह के नबियों को अपने लोगों से कठिनाइयों और बुरे स्वभाव का जितना भी सामना करना पड़ा हो, लेकिन यह सब उन्हें अपने परिवार के सुधार की चिंता से नहीं रोक सका, पैग़ंबर इब्राहीम (उनपर शांति हो) ने अपने बेटे इस्माइल (उनपर शांति हो) को अपने साथ काबा की नीव उठाने के लिए बुलाया, पैग़ंबर इस्माईल (उनपर शांति हो) अपने परिवार को नमाज़ व ज़कात का आदेश देते रहे, पैग़ंबर ज़करिय्या (उनपर शांति हो) और उनके परिवार के लोग अपने प्रभु को चाहत और

भय के साथ पुकारते थे और वे अपने प्रभु के प्रति ईश-भय रखते थे।

हे अल्लाह के बंदो!

अधिकाधिक इबादत करना अल्लाह की ओर सच्चे ध्यान का प्रमाण है, पैग़ंबर इब्राहीम (उनपर शांति हो) अल्लाह के आज्ञाकारी थे, पैग़ंबर दाऊद (उनपर शांति हो) एक दिन रोज़ा रखते और दूसरा दिन रोज़े के बिना बिताते, हमारे नबी मुहम्मद ﷺ रात को इतनी लंबी नमाज़ पढ़ते कि आपके पैर फट जाते।

एक मुस्लिम को पैगंबरों के मार्गदर्शन से निर्देशित होना चाहिए, उनके धैर्य का पालन करना चाहिए और उनके गुणों से सुसज्जित होना चाहिए ताकि उनके काफिले के साथ शामिल हो सके:

﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۖ فَبِهُدَىٰهُمُ ٱقۡتَدِهۡۗ﴾

वे (पिछले पैग़म्बर) ऐसे लोग थे, जिन्हें अल्लाह ने मार्ग दिखाया था, तो तुम उन्ही के मार्ग का अनुसरण करो। (अल-अंआम: 90)

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ فَأُوْلَٰٓئِكَ مَعَ ٱلَّذِينَ أَنۡعَمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِم مِّنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ وَٱلصِّدِّيقِينَ وَٱلشُّهَدَآءِ وَٱلصَّٰلِحِينَۚ وَحَسُنَ أُوْلَٰٓئِكَ رَفِيقٗا﴾

जो अल्लाह और रसूल की आज्ञा का पालन करता है, तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ होंगे जिनपर अल्लाह की कृपा स्पष्ट रही है -वे नबी, सिद्दीक़, शहीद और अच्छे लोग हैं। और वे कितने अच्छे साथी हैं! (अल-निसा: 69)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, ऐसी प्रशंसा जिससे हमारा प्रभु प्रेम करता और प्रसन्न होता है।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है, अल्लाह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, लोक-परलोक में सारी प्रशंसा उसी की है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद अल्लाह के भक्त और रसूल हैं, जिन्हें दया और मार्गदर्शन के साथ भेजा गया था, अल्लाह का आशीर्वाद हो उन पर, उनके परिवार, साथियों और उनके मार्गदर्शन का पालन करने वालों पर।

अम्मा बा'द, फिर हे मुस्लिमो!

आसमानी संदेशों का सारांश: एक अकेले ईश्वर जिसका कोई साझी नहीं, की पूजा करने का आह्वान और उसके अलावा जिनकी पूजा की जाती है उन्हें अस्वीकार करना है, महामहिम अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ﴾

हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा, उसकी ओर यही प्रकाशना की कि मेरे सिवा कोई पूज्य-प्रभु नहीं। अतः तुम मेरी ही बंदगी करो। (अल-अंबिया: 25)

नबियों को उनके स्थान से ऊपर नहीं उठाया जाएगा और उन्हें उनकी स्थिति से नीचे भी नहीं गिराया जाएगा, वे अल्लाह के दूत और भक्त हैं, उन्हें झुठलाया नहीं जाएगा, न ही किसी प्रकार की इबादत उनके लिए की जाएगी, अल्लाह को छोड़ कर उन्हें पुकारा नहीं जाएगा, न उनसे सहायता माँगी जाएगी, न उनके लिए मन्नतें मानी जाएंगी, न उनके लिए बलि दी जाएगी, न उनकी क़सम खाई जाएगी और न उनसे स्वास्थ्य माँगा जाएगा।

उनको भी उन्ही चीजों का सामना था जो मनुष्य को पैश आती हैं; पैग़ंबर इब्राहीम (उनपर शांति हो) के मेहमान जब खाने से रुक गए तो उन्हें घबराहट हुई, "नबियों में से एक नबी एक पेड़ की छांव में उतरे तो एक चींटी ने उन्हें काट लिया।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) प्यारे नबी मुहम्मद ﷺ से नमाज़ में एक भूल हो गई तो आपने फ़रमाया: "मैं तो एक मनुष्य ही हूँ; जैसे तुम भूल जाते हो वैसे ही मुझ से भी भूल हो जाती है, जब मैं भूल जाऊँ तो तुम मुझे याद दिला

दिया करो।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) वे खाते पीते थे, उन्हें भूख लगती थी, उदास होते थे, रोते थे, बीमार होते थे और मृत्यु भी होती थी, पैगंबरों के पिता इब्राहीम (उन पर शांति हो) कहते हैं:

﴿وَٱلَّذِى هُوَ يُطۡعِمُنِى وَيَسۡقِينِ ۞ وَإِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ يَشۡفِينِ ۞ وَٱلَّذِى يُمِيتُنِى ثُمَّ يُحۡيِينِ﴾

और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है, और जब मैं बीमार होता हूँ, तो वही मुझे अच्छा करता है और वही है जो मुझे मारेगा, फिर मुझे जीवित करेगा। (अल-शुअरा: 79-81)

हमारे नबी मुहम्मद ﷺ अपनी पुत्री से कहते हैं: "हे मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा! मेरे धन में से जो चाहो माँग लो, अल्लाह के सामने में तुम्हारे कुछ काम ना आ सकूँगा।" (सही बुख़ारी)

पवित्र अल्लाह ही लाभ और हानि देने वाला है, सारी शक्ति उसी के पास है, वही प्रदान करता और रोकता है, जीवन और मृत्यु देता है। महान अल्लाह का कथन है:

﴿وَإِن يَمۡسَسۡكَ ٱللَّهُ بِضُرّٖ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَۖ وَإِن يُرِدۡكَ بِخَيۡرٖ فَلَا رَآدَّ لِفَضۡلِهِۦۚ يُصِيبُ بِهِۦ مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦۚ وَهُوَ ٱلۡغَفُورُ ٱلرَّحِيمُ﴾

यदि अल्लाह तुम्हें किसी कष्ट में डाल दे तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं। और यदि वह तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा कर ले तो कोई उसके अनुग्रह को फेरने वाला भी नहीं। वह इसे अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है, पहुँचाता है और वह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है।" (यूनुस: 107)

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है…

पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ के अधिकार[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसे डरना चाहिए, क्यूंकि अनुग्रह सत्य मार्ग के अनुसरण में है और दुर्भाग्य वासनात्मक इच्छा की सहमति में है।

हे मुस्लिमो!

अपने भक्तों पर ईश्वर के विशाल उपकार और महान अनुग्रह हैं, उसके श्रेष्ठतम अनुग्रहों में से एक यह है कि उसने स्वयं की पहचान कराने तथा अपनी तौहीद (एकता) का आह्वान कराने के लिए दूतों को भेजा, वे अल्लाह और सृष्टि के बीच उसके आदेश निषेध के बारे में मध्यस्थ हैं, वे अल्लाह और बंदों के बीच दूत हैं, पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِي كُلِّ أُمَّةٖ رَّسُولًا أَنِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱجۡتَنِبُواْ ٱلطَّٰغُوتَۖ﴾

हमने हर समुदाय में कोई न कोई रसूल भेजा कि "अल्लाह की बंदगी करो और ताग़ूत[2] से बचो।" (अल-नह्ल: 36)

दुनिया और आखिरत में सुख का मार्ग उन्ही के हाथ में है, विस्तार के साथ पवित्र एवं और अपवित्र को जानने का रास्ता उन्ही की दिशा से होकर गुज़रता है और अल्लाह की संतुष्टि उनके बताये रास्ते के बिना कभी प्राप्त नहीं हो सकती। इस्लाम के महान विद्वान इब्ने-तैमिया

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 03/04/1436 हिजरी को दिया गया।

(2) अल्लाह के अतिरिक्त पूजी जाने वाली हर वस्तु।

(अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "बंदों के लिए, ईश-दूतत्व की आवश्यकता हर चीज़ की आवश्यकता से ऊपर है, ईश-दूतत्व दुनिया की आत्मा है, प्रकाश है, जीवन है, जब तक दूतों के निशान धरती में मौजूद हैं तब तक ही पृथ्वी के लोगों का अस्तित्व है, यदि दूतों के निशान पृथ्वी से मिट जाएंगे; तो अल्लाह पृथ्वी को आकाश से पाताल तक पूरी तरह मिटा देगा और क़यामत बरपा कर देगा।"

सबसे उत्तम दूत हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ हैं, उम्मत का सम्मान और उसका उच्च स्थान आप ही की बदौलत है, श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "अपने नबी मुहम्मद ﷺ के कारण ही इस उम्मत[1] ने भलाई के मैदान में विजय चिन्ह को प्राप्त किया है।" आपकी श्रेष्ठता के कारण ही आपके साथी किसी नबी के सबसे बेहतरीन साथी रहे, आपका युग सबसे उत्तम युग रहा, जो विशेषता भी उसे मिली आप ही के कारण मिली, अल्लाह की कृपा से क़यामत के दिन सबसे अधिक अनुयायी आप ही के होंगे।

अल्लाह ने समस्त लोगों के बीच से प्यारे नबी ﷺ को चुना है; अत: आप आदम की संतान के सरदार बन गए, अल्लाह ने सारी सृष्टि पर आपको वरीयता दी है तो वो उनमें सबसे उत्तम बन गए, अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह ने इसमाईल की संतान में से किनाना को चुना, फिर किनाना में से क़ुरैश को चुना, फिर क़ुरैश में से हाशिम के बेटों को चुना और फिर हाशिम के बेटों में से मुझे चुना।" (सही मुस्लिम)

अल्लाह ने आपकी महिमा की, इसलिए उसने आपकी आयु की कसम खाई, बाकी पैगंबरों की तरह आपको अपनी पुस्तक में नाम मात्र से नहीं पुकारा, बल्कि नबी और रसूल के नाम ही से बुलाया, अल्लाह ने आपका सीना खोला, पापों को क्षमा किया, आपके नाम को ऊँचा किया और दूसरे पैगंबरों से आप पर ईमान का वादा लिया, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَإِذۡ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ لَمَآ ءَاتَيۡتُكُم مِّن كِتَٰبٖ وَحِكۡمَةٖ ثُمَّ جَآءَكُمۡ رَسُولٞ مُّصَدِّقٞ لِّمَا مَعَكُمۡ لَتُؤۡمِنُنَّ بِهِۦ وَلَتَنصُرُنَّهُۥۚ قَالَ ءَأَقۡرَرۡتُمۡ وَأَخَذۡتُمۡ عَلَىٰ ذَٰلِكُمۡ إِصۡرِيۖ قَالُوٓاْ أَقۡرَرۡنَاۚ﴾

(1) हर नबी के काल में मौजूद उसकी क़ौम को उस नबी की उम्मत कहा जाता है। हमारे काल में सार्वजनिक रूप से सारी मानवता अंतिम नबी मुहम्मद ﷺ की उम्मत है और विशेष रूप से केवल मुस्लिम लोग आपकि उम्मत कहलाते हैं।

और याद करो जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया था कि "मैं तुम्हें जो किताब और हिकमत प्रदान करूंगा, फिर इसके पश्चात तुम्हारे पास कोई रसूल उसकी पुष्टि करता हुआ आ जाए जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम अवश्य उस पर ईमान लाओगे और निश्चय ही उसकी सहायता करोगे।" कहा, "क्या तुमने इक़रार किया और इसपर मेरी ओर से डाली हुई ज़िम्मेदारी का बोझ उठा लिया?" उन्होंने कहा, "हमने इक़रार किया।" (आल-इमरान: 81)

श्री इब्ने-कसीर (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "आप सबसे महान इमाम हैं, यदि आप किसी भी युग में अस्तित्व में होते, तो आपकी ही आज्ञाकारिता अनिवार्य होती, आप सभी पैगंबरों से आगे हैं, यही कारण है कि इस्रा की रात को जब वे बैतुल मक़दिस में एकत्र हुए थे, आप ही उनके इमाम थे, ।"

अल्लाह ने आपके द्वारा ईश-दूतत्व और पैगंबरी को समाप्त कर दिया है:

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمًا﴾

मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक हैं। (अल-अहज़ाब: 40)

और आपके द्वारा अपने धर्म को पूरा कर दिया है:

﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَٰمَ دِينًا﴾

आज मैंने तुम्हारे धर्म को पूर्ण कर दिया और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे धर्म के रूप में इस्लाम को पसन्द कर लिया। (अल-माइदा: 3)

अल्लाह ने आयतों द्वारा आपको मजबूत किया, आप पर सबसे अच्छी किताब अवतरित की, आपके धर्म को संरक्षण दिया और उसे विजय दिलाने का वादा किया।

प्यारे नबी ﷺ पर ईमान, आपसे प्रेम और आपकी तस्दीक़ करना धर्म के सिद्धांतों में से एक है, आपके रसूल होने की गवाही अल्लाह के लिए एकता की गवाही से जुड़ी हुई है, अल्लाह ने आपको अरब व गैर-अरब, मानव जाति और जिन्नों के पास भेजा। पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾

कहो: "ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर अल्लाह का रसूल हूँ। (अल-आराफ: 158)

अल्लाह ने आपको समस्त संसार के लिए लिए दया के रूप में भेजा, इसलिए सारे संसार को ही आपकी पैगंबरी द्वारा लाभ प्राप्त हुआ और आपकी दया विशेष रूप से मोमिनों के लिए है, आपने कोई ऐसी भलाई नहीं छोड़ी जिसकी ओर उम्मत को मार्गदर्शन न किया हो, न ऐसी कोई बुराई छोड़ी जिसके विरुद्ध चेतावनी न दी हो। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "मेरे पास जो भी अच्छाई है, मैं उसे कभी भी तुम से बचा कर नहीं रखूँगा" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

जो प्यारे नबी पर ईमान नहीं लाता और आपका अनुसरण नहीं करता अल्लाह ने उसे नरक की चेतावनी दी है। महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَمَن لَّمۡ يُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ فَإِنَّآ أَعۡتَدۡنَا لِلۡكَٰفِرِينَ سَعِيرٗا﴾

और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाया, तो हमने भी इनकार करने वालों के लिए भड़कती आग तय्यार कर रखी है। (अल-फ़त्ह: 13)

किताब वालों[1] के लिए प्यारे नबी पर ईमान लाना और आपका पालन करना अनिवार्य है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "उस हस्ती की कसम जिसके हाथ में मुहम्मद का प्राण है, इस उम्मत में से कोई भी -चाहे यहूदी हो या ईसाई- यदि मेरे बारे में सुन लेता है और फिर मेरे लाए हुए दीन पर ईमान लाए बिना ही मर जाता है; तो वह अवश्य आग के साथियों में से होगा।" (सही मुस्लिम)

लोगों के लिए रात दिन, हर समय, हर जगह, यात्रा में और घर में, सार्वजनिक व गुप्त रूप से, सामूहिक व व्यक्तिगत स्तर पर प्यारे नबी ﷺ पर ईमान और आपका अनुसरण अनिवार्य है, इसके अलावा कोई दूसरा विकल्प उनके पास नहीं है; इस्लाम के महान विद्वान इब्ने-तैमिया (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "लोगों को खान पान से, बल्कि प्राण से भी बढ़कर इसकी आवश्यकता है, क्योंकि जब भी वे इस सिद्धांत को खो देंगे तो आग, नबी को झूठलाने वालों और आपके अनुसरण से मुंह फेरने वालों का बदला है।"

प्यारे नबी ﷺ के माध्यम से ही अल्लाह ने हमें पवित्र किया और हमें ऐसी बातें सिखायीं जिन्हें हम नहीं जानते थे, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

(1) अर्थात: ईसाई और यहूदी।

﴿هُوَ ٱلَّذِى بَعَثَ فِى ٱلۡأُمِّيِّـۧنَ رَسُولًا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَـٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمۡ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَـٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ وَإِن كَانُواْ مِن قَبۡلُ لَفِى ضَلَـٰلٍ مُّبِينٍ﴾

वही है जिसने उम्मियों[1] में उन्ही में से एक रसूल उठाया जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उन्हें निखारता है और उन्हें किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, यद्यपि इससे पहले तो वे खुली गुमराही में पड़े हुए थे। (अल-जुमुआ: 2)

इमाम शाफ़ई (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "जो भी स्पष्ट या छिपा हुआ आशीर्वाद हमारे साथ दिन गुज़ारता है, जिसके माध्यम से हमें धार्मिक और सांसारिक दृष्टि से कोई सुख प्राप्त हुआ हो या जिसके द्वारा दीन व दुनिया; दोनों या एक में कुछ बुरा हमसे दूर हो गया हो; इन सबका मुख्य कारण प्यारे नबी मुहम्मद ﷺ ही हैं जो अच्छाई के नेता और सत्य के मार्गदर्शक हैं।"

प्यारे नबी ﷺ की आज्ञाकारिता से ही ईमान की स्थापना होती है। महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿مَّن يُطِعِ ٱلرَّسُولَ فَقَدۡ أَطَاعَ ٱللَّهَۖ﴾

जिसने रसूल की आज्ञा का पालन किया, उसने अल्लाह की आज्ञा का पालन किया। (अल-निसा: 80)

अल्लाह ने क़ुरआन में तीस से अधिक स्थानों पर प्यारे नबी ﷺ के अनुसरण का आदेश दिया है और आपके अनुसरण को अपने अनुसरण से जोड़ा है, इसी प्रकार आपके विरोध को अपने विरोध से जोड़ा है, जिसने आपका अनुसरण किया वह सफल हो गया:

﴿وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدۡ فَازَ فَوۡزًا عَظِيمًا﴾

जिसने अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन किया उसने बड़ी सफलता प्राप्त की। (अल-अहज़ाब: 71)

तक़वा (धर्मपरायणता) का सबसे महान और मज़बूत गुण और उसकी बुनियाद: इबादत में अल्लाह को और अनुसरण में प्यारे नबी ﷺ को एक करना है; महान अल्लाह ने फ़रमाया:

(1) उम्मी: जिसे पढ़ना लिखना ना आता हो।

﴿وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمۡ عَنۡهُ فَٱنتَهُواْۚ﴾

रसूल जो कुछ तुम्हें दें उसे ले लो और जिस चीज़ से तुम्हें रोक दें उससे रुक जाओ। (अल-हश्र: 7)

इसी में मनुष्य का जीवन और सुख है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسۡتَجِيبُواْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمۡ لِمَا يُحۡيِيكُمۡۖ﴾

ईमान लाने वाले! अल्लाह और रसूल की बात मानो, जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाएं जो तुम्हें जीवन प्रदान करने वाली है। (अल-अंफाल: 24)

प्यारे नबी ﷺ के विरोध में संकट है, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿فَلۡيَحۡذَرِ ٱلَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنۡ أَمۡرِهِۦٓ أَن تُصِيبَهُمۡ فِتۡنَةٌ أَوۡ يُصِيبَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

अतः उनको, जो उसके आदेश की अवहेलना करते हैं, डरना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि उनपर कोई आज़माइश आ पड़े या उनपर कोई दुखद यातना आ जाए। (अल-नूर: 63)

जो प्यारे नबी से शत्रुता रखता है; अल्लाह उसे अपमानित कर देता है, महान प्रभु ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحَآدُّونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ أُوْلَٰٓئِكَ فِي ٱلۡأَذَلِّينَ﴾

निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं; वे अत्यन्त अपमानित लोगों में से है। (अल-मुजादला: 20)

जो प्यारे नबी ﷺ की सुन्नत[1] से मुंह मोड़ेगा; प्यारे नबी की उससे दूरी की चेतावनी है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो मेरी सुन्नत से मुंह फेरेगा मेरा उससे कोई संबंध नहीं।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

अल्लाह के नबी ﷺ का एक अधिकार लोगों पर ये है की अल्लाह की इबादत आप के

(1) सुन्नत: पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ की पद्धति।

द्वारा निर्धारित विधि के अनुसार ही की जाएगी, कोई इबादत मन-मानी और बिद'अत[1] के आधार पर नहीं की जाएगी और अल्लाह के नबी द्वारा निर्धारित पद्धति के सामने किसी का विचार नहीं चलेगा, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो ऐसा कर्म करता है जिस पर हमारा आदेश न हो; वह रद्द है।" (सही मुस्लिम)

अल्लाह के नबी से प्रेम धर्म के महानतम कर्तव्यों में से एक है, इसमें केवल साधारण प्रेम पर्याप्त नहीं है; बल्कि अनिवार्य है कि वह प्रेम सभी प्राणियों के प्रेम से, बल्कि स्वयं के प्रति प्रेम से भी अधिक हो, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से कोई व्यक्ति उस वक्त तक मोमिन नहीं बन सकता जब तक कि मैं उसके निकट उसके माता पिता, उसकी संतान और समस्त लोगों से अधिक प्रिय न बन जाऊँ।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) इसके बिना बंदे को ईमान की मिठास प्राप्त नहीं हो सकती, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिसके अंदर तीन चीज़ें हों वह उनके माध्यम से ईमान की मिठास पा सकता है: जिस के निकट अल्लाह और उसके रसूल सबसे अधिक प्रिय हों, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से केवल अल्लाह के लिए प्रेम करे और अल्लाह द्वारा कुफ़्र से बचाए जाने के बाद व्यक्ति कुफ़्र की ओर लौटने से उसी प्रकार नफ़रत करे जैसे उसे आग में डाले जाने से नफ़रत होती है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

सच्चा प्रेम अनुसरण में प्रकट होता है, महामहिम अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿قُلۡ إِن كُنتُمۡ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِي يُحۡبِبۡكُمُ ٱللَّهُ وَيَغۡفِرۡ لَكُمۡ ذُنُوبَكُمۡۚ وَٱللَّهُ غَفُورٞ رَّحِيمٞ﴾

कह दो: "यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह भी तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। (आल-इमरान: 31)

प्यारे नबी ﷺ का सच्चा प्रेमी क़यामत के दिन आपके साथ ही उठाया जाएगा, एक व्यक्ति प्यारे नबी ﷺ के पास आया और कहा: "हे अल्लाह के रसूल! ऐसे व्यक्ति के विषय में आप क्या कहेंगे जिसने कुछ लोगों से प्रेम किया और उनसे मिल नहीं सका? तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया: व्यक्ति उसी के साथ होगा जिससे वह प्रेम करता है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

अल्लाह के रसूल ﷺ पर और आपकी लायी हुई शरीअत पर ईमान लाकर आप के प्रति परोपकारिता, आपकी आज्ञाकारिता पर जमे रहना, आपकी सुन्नत अपनाना, आपके ज्ञान

(1) बिद'अत: हर वह धार्मिक कार्य जिसका सत्यापन क़ुरआन या हदीस से ना होता हो, ये सुन्नत के विपरीत स्तिथि है।

का प्रसार करना, आपके आदेश की महिमा करना, आपके दोस्तों से प्रेम करना और आपके शत्रुओं से दुश्मनी रखना; आपसे प्रेम का हिस्सा है। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "धर्म परोपकारिता का नाम है" हमने कहा: किस के प्रति? आपने कहा: ईश्वर, उसकी किताब, उसके दूत, मुसलमानों के इमामों और आम लोगों के प्रति।" (सही मुस्लिम)

प्यारे नबी ﷺ की महिमा और सम्मान करना धर्म की बुनियादों और आप के दूतत्व के उद्देश्यों में से एक है, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ شَٰهِدٗا وَمُبَشِّرٗا وَنَذِيرٗا ۝ لِّتُؤۡمِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكۡرَةٗ وَأَصِيلًا﴾

(ए नबी) निश्चय ही हमने तुम्हें साक्षी, शुभ सूचक और सचेतकर्ता बनाकर भेजा है, ताकि (ए लोगो) तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, रसूल को सहायता पहुँचाओ और उसका आदर करो, और प्रातःकाल और संध्या समय अल्लाह की पाकी बयान करते रहो। (अल-फत्ह: 8-9)

श्री हुलैमी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "हमारे लिए अल्लाह के रसूल ﷺ के अधिकार, मालिक के अपने दासों पर, तथा माता-पिता के अपने बच्चों पर जो अधिकार होते हैं उनसे भी बढ़कर महान, सम्माननीय, अनिवार्य तथा आवश्यक हैं; क्योंकि महान अल्लाह ने हमें आपके द्वारा परलोक की आग से बचाया है और दुनिया में हमारी आत्मा, शरीर, गरिमा, धन, परिवार व संतान की रक्षा की है, सो आपके द्वारा उसने हमें मार्गदर्शन दिया है कि यदि हम उसमें आपकी आज्ञा मानें तो आनंद की जन्नतों में पहुँच जाएंगे।"

सबसे महान लोग जिन्होंने आपके सम्मान को जाना है: आपके साथी हैं (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो), श्री उर्वा बिन मसऊद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "अल्लाह की क़सम! मैं राजाओं के पास गया, मैं किसरा (चोसरोज़), कैसर (सीज़र) और नजाशी (नेगस) के पास गया, अल्लाह की क़सम! मैंने कभी किसी राजा को उसके साथियों द्वारा इतना सम्मानित नहीं देखा जितना मुहम्मद ﷺ के साथी मुहम्मद का सम्मान करते हैं। जब वह बोलते हैं तो वे आपके सामने अपनी आवाज़ धीमी कर लेते हैं, वे आपके सम्मान के कारण आपकी ओर नज़र गढ़ा कर नहीं देख पाते।" (सही बुख़ारी)

प्यारे नबी ﷺ के सबसे सच्चे प्रेमी भी आपके सहाबा ही हैं, श्री अम्र बिन आस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "मेरे निकट अल्लाह के रसूल से अधिक प्रिय कोई नहीं

था, ना ही मेरी आंखों में आप से अधिक महान कोई था और आपकी महानता के कारण ही मुझ में आपको आंख भर कर देखने की छमता नहीं होती थी, अगर मुझसे यह प्रश्न किया जाए कि मैं आपका मुखमंडल बयान करूं; तो मैं नहीं कर सकता; क्योंकि मैंने कभी आपको आंख भर कर देखा ही नहीं।" (सही मुस्लिम)

जो भी आपकी जीवनी व पद्धति के बारे में जानता या सुनता है, अगर वह स्वयं के साथ न्याय करने वाला है, तो आपकी महिमा किए बिना नहीं रह पाता, ईसाइयों के राजाओं ने आपके बारे में सुना तो आप की महिमा की, अत: हेराक्लियस ने कहा: "अगर मैं उनके पास होता, तो उनके चरण धोता।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) श्री इब्ने-हजर (अल्लाह उन पर पर दया करे) ने कहा: "हेराक्लियस ने मात्र चरण धोने का उल्लेख किया; यह उसकी ओर से संकेत था कि यदि वह प्यारे नबी के पास सुरक्षित पहुँच जाएगा तो आप से कोई क्षेत्र या पद नहीं मँगेगा, बस उसी चीज़ की माँग करेगा जिससे आशीर्वाद प्राप्त होता है।"

अल्लाह के नबी ﷺ के साथ शिष्टाचार का शीर्ष: आप की आज्ञा के प्रति पूर्ण समर्पण विनम्रता और आपकी बातों की स्वीकृति व अनुसमर्थन है। आपके साथ शिष्टाचार का एक भाग ये भी है कि आपकी किसी बात पर ऐतिराज़ ना किया जाए, बल्कि आपकी बात के लिए लोगों के विचारों पर ऐतिराज़ किया जाएगा, आपकी कही बात को कियास (मापदंड) से नहीं टकराया जा सकता और आपके लाए हुए विधान की स्वीकृति किसी की सहमति की मोहताज नहीं। श्री इब्ने-क़य्यिम (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "वह्य (ईश-वाणी) और बुद्धि का आपसी संबंध एक साधारण व्यक्ति और आलिम व मुफ़्ती के बीच के संबंध जैसा होता है, बल्कि उस से भी कई असंख्य स्थान नीचे।"

प्यारे नबी ﷺ के महानतम अधिकारों में से एक: आप को भक्ति व दूतत्व का वही स्थान देना है जो आपके प्रभु ने आपको दिया है, अत: आप को प्रभुत्व के स्थान तक नहीं चढ़ाया जाएगा कि अल्लाह को छोड़कर आप को पुकारा जाने लगे, और आप के सम्मान में कोई कमी भी नहीं की जाएगी कि आप का अनुसरण ही छोड़ दिया जाए।

फिर हे मुस्लिमो!

हमारे नबी मुहम्मद ﷺ अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, अल्लाह ने आप से प्रेम किया और हमें भी आप से प्रेम करने का आदेश दिया, आप को अपना दूत बना कर भेजा और हमें आप को सच्चा मानने का आदेश दिया, आप को मजबूत किया और हमें आप की शरीअत को मज़बूती से थमने का आदेश दिया, आप को सम्मानित किया और हमें आप के बचाव का आदेश दिया और कोई भी व्यक्ति आप पर ईमान लाए बिना और आप के पद चिन्हों के पालन

के बिना जन्नत में प्रवेश नहीं पा सकता।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।

﴿لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولٞ مِّنۡ أَنفُسِكُمۡ عَزِيزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيصٌ عَلَيۡكُم بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ رَءُوفٞ رَّحِيمٞ﴾

तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है। तुम्हारा मुश्किल में पड़ना उसके लिए असह्य है। वह तुम्हारे लिए लालयित है। वह मोमिनों के प्रति अत्यन्त करुणामय, दयावान है। (अल-तौबा: 128)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

लोक-परलोक में बंदे के सुधार के लिए ईश-दूतत्व आवश्यक है, जैसे बंदे के लिए ईश-दूतत्व के पालन के बिना परलोक में कोई सुधार नहीं है, वैसे ही ईश-दूतत्व के पालन के बिना उसके जीवन और दुनिया में भी कोई सुधार नहीं है, प्रतिष्ठा अल्लाह और उसके नबी ﷺ की आज्ञाकारिता में है, व्यक्ति प्यारे नबी ﷺ का जितना अनुसरण करेगा उतना ही उसका स्थान ऊँचा होगा।

जो भी प्यारे नबी ﷺ या आप की पद्धति से नफ़रत करेगा; अल्लाह उसे बे-सहारा छोड़ देगा, तथा अपमानित करेगा और नीच बना देगा। पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلْأَبْتَرُ﴾

निस्संदेह तुम्हारा जो वैरी है वही जड़कटा है। (अल-कौसर: 3)

हर उम्मत अपने पैग़ंबर और उनके साथियों की महिमा करती है, इस उम्मत का महानतम सम्मान भी अपने नबी की महिमा और उनके साथियों से प्रेम है, इसी पर इस उम्मत की उन्नति, सुख और दूसरी उम्मतों की तुलना में इसकी प्रगति आधारित है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।

अल्लाह और उसके नबी ﷺ की बात मानना[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए; क्योंकि उत्तम पाथेय वही है जिसके साथ तक़वा (धर्मपरायणता) शामिल हो और उत्तम कर्म वही है जिसके साथ प्रभु के लिए शुद्धता हो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने मनुष्य और जिन्नों को अपनी इबादत के लिए अस्तित्व दिया, उन्हें अपने आज्ञापालन का आदेश दिया और अपने आज्ञाकारी बंदों के लिए सुख लिख दिया, पवित्र प्रभु की इबादत एक ऐसा क़िला है कि जो उस में प्रवेश कर गया वह सुरक्षित लोगों में से हो गया, जिसने इबादत को अदा किया वह मुक्ति पाने वालों में से हो गया और यह शुद्ध भलाई है जिसमें कोई हानि नहीं है। सर्वश्रेष्ठ प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَمَاذَا عَلَيۡهِمۡ لَوۡ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ وَأَنفَقُواْ مِمَّا رَزَقَهُمُ ٱللَّهُۚ﴾

उनका क्या बिगड़ जाता, यदि वे अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है, उसमें से ख़र्च करते? (अल-निसा: 39)

पृथ्वी पर मौजूद हर अच्छाई अल्लाह और उसके पैग़ंबर ﷺ की आज्ञाकारिता के कारण ही है, और जो बुराई, दर्द और संकट भक्त को सताते हैं, वो नबी ﷺ के विरोध के कारण है,

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 23/03/1435 हिजरी को दिया गया।

इब्ने-क़य्यिम ने कहा: "जो दुनिया और इसमें मौजूद बुराइयों पर विचार करेगा, उसे पता चल जाएगा कि दुनिया में हर बुराई का कारण पैग़ंबर ﷺ का विरोध और आप के आज्ञापालन से निकल जाना है।

अपने बंदों के प्रति अल्लाह की दया का एक भाग ये भी है कि उसने उन्हें स्वीकृति वाले उत्तर देने का आदेश दिया ताकि उन्हें भलाई प्राप्त हो सके, प्रभु ने कहा:

﴿ٱسۡتَجِيبُواْ لِرَبِّكُم مِّن قَبۡلِ أَن يَأۡتِيَ يَوۡمٞ لَّا مَرَدَّ لَهُۥ مِنَ ٱللَّهِۚ﴾

अपने रब की बात मान लो इससे पहले कि अल्लाह की ओर से वह दिन आ जाए जो पलटने का नहीं। (अल-शूरा: 47)

ईमान वालों ने अपने प्रभु के आह्वान को स्वीकार किया और वे सफल हुए:

﴿إِنَّمَا كَانَ قَوۡلَ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ إِذَا دُعُوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحۡكُمَ بَيۡنَهُمۡ أَن يَقُولُواْ سَمِعۡنَا وَأَطَعۡنَاۚ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡمُفۡلِحُونَ﴾

मोमिनों की बात तो बस यह होती है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की ओर बुलाए जाते हैं, ताकि वह उनके बीच फ़ैसला करें, तो वे कहते हैं: "हमने सुना और आज्ञापालन किया।" और वही सफलता प्राप्त करने वाले हैं। (अल-नूर: 51)

इसी के द्वारा अल्लाह ने उनके हृदय को जीवन दिया और उनकी प्रतिष्ठा को ऊंचा किया पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱسۡتَجِيبُواْ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمۡ لِمَا يُحۡيِيكُمۡۖ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَحُولُ بَيۡنَ ٱلۡمَرۡءِ وَقَلۡبِهِۦ وَأَنَّهُۥٓ إِلَيۡهِ تُحۡشَرُونَ﴾

ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह और रसूल की बात मानो, जब वह तुम्हें उस चीज़ की ओर बुलाए जो तुम्हें जीवन प्रदान करने वाली है। (अल-अंफ़ाल: 24)

जो अपने प्रभु के आज्ञापालन की ओर बढ़ेगा प्रभु हिदायत (सत्य मार्ग) पर हिदायत प्रदान करेगा, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَٱلَّذِينَ ٱهۡتَدَوۡاْ زَادَهُمۡ هُدٗى وَءَاتَىٰهُمۡ تَقۡوَىٰهُمۡ﴾

रहे वे लोग जिन्होंने सीधा रास्ता अपनाया, अल्लाह ने उनके मार्गदर्शन में अभिवृद्धि कर दी और उन्हें उनकी परहेज़गारी प्रदान की। (मुहम्मद: 17)

इस्लाम के विद्वान श्री इब्ने-तैमिया (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "व्यक्ति हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ का जितना अधिक अनुसरण करता होगा, वह अल्लाह के प्रति तौहीद (एकेश्वरवाद), धर्म और शुद्धता में भी उतना ही आगे होगा, यदि वह आप ﷺ की आज्ञाकारिता से दूर हो जाता है तो उसी के अनुसार उसके धर्म में कमी आ जाएगी।"

जो अपने रब की पुकार का उत्तर देगा, उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी, महान प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَيَسۡتَجِيبُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضۡلِهِۦۚ﴾

और वह उन लोगों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए और अपने उदार अनुग्रह से उन्हें और अधिक प्रदान करता है। (अल-शूरा: 26)

बल्कि अल्लाह उससे प्रेम करने लगता है, उस पर दया करता है और उसे जन्नत में प्रवेश करेगा, महामहिम प्रभु ने फ़रमाया:

﴿لِلَّذِينَ ٱسۡتَجَابُواْ لِرَبِّهِمُ ٱلۡحُسۡنَىٰۚ﴾

जिन लोगों ने अपने रब का आमंत्रण स्वीकार कर लिया, उनके लिए अच्छा पुरस्कार है। (अल-रा'द: 18) अर्थात: जन्नत है।

पैग़म्बरों (उन पर शांति हो) ने शीघ्रता से बात मानी और समर्पण कर दिया, अल्लाह ने अपने मित्र पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) से कहा:

﴿أَسۡلِمۡۖ قَالَ أَسۡلَمۡتُ لِرَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

"मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो जा।" उसने कहा, "मैं सारे संसार के रब का आज्ञाकारी हो गया।" (अल-बक़रह: 131)

अल्लाह ने उन्हें अपने इकलौते पुत्र के वध का आदेश दिया तो उन्हें माथे के बल लिटा दिया, और उनके पुत्र पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) ने उनसे कहा:

﴿يَٰٓأَبَتِ ٱفۡعَلۡ مَا تُؤۡمَرُۖ سَتَجِدُنِيٓ إِن شَآءَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾

"ऐ मेरे पिता जी! जो कुछ आपको आदेश दिया जा रहा है उसे कर डालिए। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे धैर्यवान पाएँगे।" (अल-साफ़्फ़ात: 102)

पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) अपने प्रभु को संतुष्ट करने के लिए शीघ्रता से आगे बढ़े और कहा:

﴿وَعَجِلۡتُ إِلَيۡكَ رَبِّ لِتَرۡضَىٰ﴾

ऐ रब! मैं तेरी ओर जल्दी बढ़कर आया हूँ, ताकि तू राज़ी हो जाए।" (ताहा: 84)

अल्लाह ने पैगंबरों से वादा लिया कि अगर उनके बीच हमारे नबी मोहम्मद ﷺ भेजे गए तो वे सब उन पर ईमान लाएंगे और उनकी सहायता करेंगे तो उन सब ने कहा:

﴿أَقۡرَرۡنَآۚ﴾

हमने इक़रार किया। (आल-इमरान: 81)

अल्लाह ने हमारे नबी मुहम्मद ﷺ से कहा

﴿قُمۡ فَأَنذِرۡ﴾

उठो, और सावधान करने में लग जाओ। (अल-मुद्दिस्सिर: 2)

तो हमारे नबी ﷺ तौहीद की तरफ़ बुलाते हुए लोगों की ओर निकल पड़े।

अल्लाह ने आप से कहा:

﴿قُمِ ٱلَّيۡلَ إِلَّا قَلِيلٗا﴾

रात के थोड़े हिस्से के अलावा सारी रात (नमाज़ में) खड़े रहा करो। (अल-मुज़्ज़म्मिल: 2)

तो आप खड़े होकर नमाज पढ़ने लगे यहाँ तक कि आपके पाओं फट गए, पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) के हवारियों[1] ने भी उनके आह्वान को स्वीकार किया, पैग़ंबर ईसा ने उनसे कहा:

﴿مَنۡ أَنصَارِيٓ إِلَى ٱللَّهِۖ قَالَ ٱلۡحَوَارِيُّونَ نَحۡنُ أَنصَارُ ٱللَّهِ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ﴾

(1) किसी पैग़ंबर के विशेष साथियों को हवारी कहा जाता है।

"कौन अल्लाह की ओर बढ़ने में मेरा सहायक होता है?" हवारियों ने कहा, "हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान ले आए। (आल-इमरान: 52)

जिन्नों ने भी आपस में एक दूसरे को अल्लाह की पुकार का उत्तर देने पर प्रोत्साहित किया:

﴿يَٰقَوۡمَنَآ أَجِيبُواْ دَاعِيَ ٱللَّهِ وَءَامِنُواْ بِهِۦ يَغۡفِرۡ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمۡ وَيُجِرۡكُم مِّنۡ عَذَابٍ أَلِيمٖ﴾

ऐ हमारी क़ौम के लोगो! अल्लाह के आमंत्रणकर्त्ता का आमंत्रण स्वीकार करो और उसपर ईमान लाओ। अल्लाह तुम्हें क्षमा करके गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा और दुखद यातना से तुम्हें बचाएगा। (अल-अहक़ाफ: 31)

सहाबा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) को प्यारे नबी की संगति, शुद्धता और अल्लाह व रसूल की बात मानने में प्रतिस्पर्द्धा के कारण ही श्रेष्ठता मिली, इसलिए ईश्वर के निकट उनकी उन्नति बढ़ गई, चुनांचे उन्हें काबा की ओर मुख करने का आदेश दिया गया तो उन्होंने आदेश परिवर्तन के बारे में सुनते ही बैतूल-मक़दिस से अपनी दिशा बदल कर काबे की ओर कर ली जबकि वे नमाज़ में थे, तथा आज्ञापालन को दूसरी नमाज़ तक के लिए विलंबित नहीं किया।

प्यारे नबी ﷺ ने दान करने का आह्वान किया तो सहाबा ने अपने बहुमूल्य धन खर्च कर दिए, अतः श्री उमर बिन खत्ताब (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने अपना आधा धन खर्च कर दिया, श्री अबू बकर सिद्दीक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने अपना समस्त धन खर्च कर दिया और प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने कठिनाई की सेना[1] तय्यार की; उसके लिए जन्नत है; तो श्री उस्मान (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) ने उसे तय्यार कर दिया।" (सही बुख़ारी)

अल्लाह का कथन अवतीर्ण हुआ:

﴿لَن تَنَالُواْ ٱلۡبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُواْ مِمَّا تُحِبُّونَۚ﴾

तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नहीं पहुँच सकते, जब तक कि तुम अपनी प्रिय चीज़ों को (अल्लाह के लिए) ख़र्च नहीं कर देते। (आल-इमरान: 92)

तो श्री अबू-तल्हा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) प्यारे नबी ﷺ की ओर खड़े हुए और कहा: "हे अल्लाह के रसूल! मेरा सबसे प्रिय धन बैरुहा बाग़ है, मैं उसे अल्लाह के लिए दान

(1) अर्थात: तबूक युद्ध की सेना, ये युद्ध 9 हिजरी में हुआ था।

करता हूँ।" (सही बुख़ारी)

रात की नमाज़ के पुण्य के विषय में प्यारे नबी ﷺ का संकेत पाकर, युवा सहाबा रात में अल्लाह के उपासक बन गए, प्यारे नबी ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन उमर (अल्लाह दोनों से प्रसन्न हो) से कहा था जबकि वो छोटे थे: "अब्दुल्लाह एक अच्छा आदमी है, अगर वो रात में नमाज़ पढ़ने लगे; इस के बाद वो रात को थोड़ा ही सोने लगे।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

उन्होंने ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए नबी ﷺ पर अपनी जान क़ुर्बान कर दी, श्री मिक़्दाद बिन असवद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) प्यारे नबी ﷺ के पास आए जबकि आप मुश्रिकीन (बहुईश्वरवादियों) पर बद्दुआ कर रहे थे और कहने लगे: "हम ऐसा नहीं कहेंगे जैसा पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) की क़ौम ने कहा था:

﴿فَٱذۡهَبۡ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَٰتِلَآ إِنَّا هَٰهُنَا قَٰعِدُونَ﴾

तो तुम और तुम्हारा रब ही जाओ, और दोनों लड़ो। हम तो यहीं बैठे रहेंगे।" (अल-माइदा: 24)

परन्तु हम आपके दाएं से, बाएं से, सामने से और पीछे से युद्ध लड़ेंगे, श्री इब्ने मसऊद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: मैंने प्यारे नबी को देखा कि ये बात सुनकर आप का चेहरा चमक उठा था और आप प्रसन्न हो गए थे।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

पैग़ंबर ﷺ को कुछ कथनों और कार्यों से मना करते सुनने के बाद, सहाबा तुरंत उन कथनों और कार्यों से रुक गए और आप की बात मानते हुए उनकी समीक्षा नहीं की; जाहिलियत में वे अपने बाप-दादाओं की कसम खाने के आदी थे, तो प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "निस्संदेह अल्लाह तुम्हें अपने बाप दादाओं की क़सम खाने से मना करता है, श्री उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: जबसे प्यारे नबी को इस क़सम से मना करते हुए सुना तब से मैंने ये क़सम नहीं खाई है, ना अपनी बात बोलते हुए ना दूसरे की बात का वर्णन करते हुए।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

भूख के दिन में उन्होंने भोजन पकाया, लेकिन नबी ﷺ के उससे मना करने के कारण उसे छोड़ दिया; अंत: ख़ैबर के दिन पालतू गधों की अनुमति थी, इसलिए उन्होंने उनका माँस पकाया, फिर नबी ﷺ के सूचना-वाहक ने आवाज़ लगाई: "अल्लाह और उसके रसूल तुम्हें पालतू गधों के माँस से मना करते है; क्योंकि वो अपवित्र है -और उसको खाना शैतानी कार्य है- श्री अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: तो हांडियाँ उलट दी गईं और उनमें जो भी था

सब गिर गया, जबकि वे माँस से उबल रही थीं।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

इस्लाम के प्रारंभिक दौर में शराब वैध थी, एक राह चलते व्यक्ति से उसकी मनाही सुनते ही उन्होंने सारी शराब बहा दी, श्री अबू-नु'मान (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: मैं अबू तल्हा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के घर में कुछ लोगों को शराब पिला रहा था, उसी समय शराब की हुरमत (अवैध की घोषणा) आई तो नबी ﷺ ने एक सूचना-वाहक को आदेश दिया तो उसने आवाज़ लगा दी, अबू तल्हा ने कहा: ज़रा बाहर निकल कर देखो तो सही यह कैसी आवाज़ है? कहते हैं: मैं निकला और कहा: यह एक सूचना-वाहक है जो आवाज़ लगा रहा है कि: लोगो! सुनो, शराब को हराम कर दिया गया है, तो अबू तल्हा ने मुझसे कहा: जाओ और इस शराब को बहा दो, कहते हैं: इसके बाद मदीने की गलियों में शराब बहने लगी थी। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) एक दूसरे वर्णन के अनुसार: उन्होंने इसकी समीक्षा नहीं की, ना इसके बारे में व्यक्ति की सूचना के बाद कोई प्रश्न किया। (सही मुस्लिम)

सहाबा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) अपने पहनावे में भी नबी ﷺ के कुछ कहे बिना ही आप का अनुसरण करते थे, श्री इब्ने-उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "प्यारे नबी ने एक सोने की अंगूठी बनाई, आप उसे पहनने लगे और उसकी लोब को अपनी हथेली के अंदर रखते, तो लोगों ने भी अंगूठियाँ बना लीं, फिर आप मिंबर पर बैठे और उसे उतार कर कहा: मैं यह अंगूठी पहनता था और इसके लोब को भीतर रखता था, फिर आपने उसे फेंक दिया और कहा: अल्लाह की क़सम! मैं इसे कभी नहीं पहनूंगा; तो लोगों ने भी अपनी अंगूठियाँ फेंक दीं।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

अब्दुल्लाह बिन उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) ने प्यारे नबी ﷺ का कथन: "किसी मुसलमान के लिए उचित नहीं है कि उसके पास कोई वस्तु हो, जिसके विषय में वह वसिय्यत करना चाहता हो और वह वसिय्यत लिखे बिना दो रात भी गुज़ारे।" सुनने के बाद अपनी वसिय्यत लिख कर रख ली थी, वह कहते हैं: "अल्लाह के रसूल का ये कथन सुनने के बाद, कोई रात ऐसी नहीं गुज़री जब मेरी वासिययत मेरे पास नहीं थी।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

प्यारे नबी ﷺ की वासिय्यत के अनुपालन में उन्होंने (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) बढ़-चढ़ कर अपनी जीभ को अनुचित चीज़ से सुरक्षित रखा, श्री जाबिर बिन सुलैम (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "मैं नबी के पास आया और कहा: हे अल्लाह के रसूल! मैं देहात के लोगों में से हूँ, और मुझमें उनका रुखापन है; तो आप मुझे वासिय्यत कीजिए, आपने फ़रमाया: किसी को गाली ना दो, उस व्यक्ति ने कहा: अल्लाह के रसूल ﷺ के कथन के बाद मैंने किसी व्यक्ति,

बल्कि बकरी और ऊंट तक को भी गाली नहीं दी।" (मुस्नद अहमद)

उन्होंने अपनी हर उठक-बेठक और चलत-फिरत में प्यारे नबी ﷺ के आदेशों का पालन किया, खैबर युद्ध के दिन प्यारे नबी ﷺ ने श्री अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को झंडा थमाया और कहा: "इधर उधर मुड़े बग़ैर तब तक चलते रहो जब तक अल्लाह तुम्हें विजय प्रदान नहीं कर देता, श्री अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कुछ दूर चल कर ठहर गए, और पीछे मुड़े बिना ही ऊँची आवाज़ से कहा: हे अल्लाह के रसूल! मैं लोगों से किस बुनियाद पर युद्ध करूंगा?" (सही मुस्लिम) अर्थात: उन्होंने नबी ﷺ से दूर होने के कारण अपनी आवाज तो ऊँची की, लेकिन आप के आदेश के पालन में पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

जिस चीज़ से प्यारे नबी ﷺ ने उन्हें मना किया वे उससे दूर हो गए -भले ही निषिद्ध कार्य करने में मुसलमानों के समर्थन का स्पष्ट हित दिखाई देता हो- अत: अहज़ाब युद्ध के दिन प्यारे नबी ﷺ ने श्री हुजैफा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से कहा: "हे हुज़ैफ़ा! उठो, ज़रा मेरे पास लोगों की ख़बर लेकर आओ और उन्हें मेरे ख़िलाफ़ न उकसाना -ऐसा न हो कि वे तुम्हें पहचान लें और हमारे ऊपर आ धमकें- जब वो उनके पास पहुँचे, तो उन्होंने निकट ही अबू-सुफ़ियान को देख लिया -उस समय यही मुशरिकों (बहुदेववादियों) के नेता थे- वो ठंड के कारण आग से अपनी पीठ सेक रहे थे, कहते हैं: फिर मैंने धनुष में एक तीर रखा, और उसे चलाने ही वाला कि मुझे अल्लाह के रसूल ﷺ का कथन याद आ गया: उन्हें मेरे ख़िलाफ़ न उकसाना, अगर मैं उन पर तीर चला देता तो मेरा निशाना सटीक बेठता।" (सही मुस्लिम)

सहाबा की ओर से आदेशों और निषेधों में प्यारे नबी ﷺ का अनुसरण ईमान तथा मज़बूत विश्वास पर आधारित होता था; श्री राफे बिन खुदैज (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमें ऐसी चीज से मना किया जो हमारे लिए लाभदायक थी, मगर अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन हमारे लिए सबसे अधिक लाभदायक है।" (सही मुस्लिम)

ईमान वाली महिलाएं भी अल्लाह की आज्ञाकारिता के प्रति प्रतिक्रिया देने में आगे आगे रही हैं, श्रीमती हाजर (उन पर शांति हो) ने अपने प्रभु पर भरोसा किया, अपने पति की आज्ञा मानी और एक ऐसी घाटी में रहने लगीं जहाँ कोई खेती और पानी नहीं था, उस समय मक्का में कोई भी नहीं था, सामने की परिस्थिति के अनुसार वहाँ उनके लिए और उनके बेटे के लिए विनाश के सिवा कुछ नहीं था, उन्होंने अपने पति पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) से कहा: क्या अल्लाह ने ही आपको इसका आदेश दिया है? पति ने कहा: हाँ, तो हाजर ने कहा:

फिर तो वह हमें बर्बाद भी नहीं करेगा।" (सही बुख़ारी)

जब सहाबियात[1] के लिए हिजाब की अनिवार्यता अवतीर्ण हुई तो उस समय उनके पास हिजाब का कपड़ा नहीं था, लेकिन अल्लाह के आदेश का पालन करने हेतु उन्होंने तुरंत अपने कपड़े फाड़ लिए और उसके टुकड़ों से अपने चेहरों को ढक लिया, श्रीमती आएशा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहती हैं: अल्लाह प्रथम प्रवासी महिलाओं पर दया करे, जब अल्लाह ने आयत उतारी:

﴿وَلۡيَضۡرِبۡنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّۖ﴾

और मोमिन महिलाएं अपने सीनों पर दुपट्टा डाल लिया करें। (अल-नूर: 31)

तो उन्होंने अपने वस्त्र का अतिरिक्त कपड़ा फाड़ कर उसे ओढ़नी बना लिया। (सही बुख़ारी)

फिर हे मुस्लिमो!

अल्लाह और उसके दूत ﷺ की आज्ञाकारिता ही शहादतैन[2] की प्राप्ति और भक्ति की पूर्णता है। यदि कोई आदेश तुम्हारे कान में दस्तक दे तो तुरंत अपने प्रभु की इबादत से प्रसन्न होते हुए खुशी खुशी उसका पालन करो, आर अगर कोई निषेध हो तो उसकी हानि को निश्चित मानते हुए और अपने सृष्टिकर्ता की प्रसन्नता चाहते हुए उससे बचो तथा दूर रहो।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَيَخۡشَ ٱللَّهَ وَيَتَّقۡهِ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡفَآئِزُونَ﴾

और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगा और अल्लाह से डरेगा और उसकी सीमाओं का ख़याल रखेगा, तो ऐसे ही लोग सफल हैं। (अल-नूर: 52)

महान अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।...

(1) सहाबा की महिलाओं को सहाबियात कहा जाता है।

(2) शहादतैन: अर्थात दो गवाहियाँ, पहली गवाही इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं, दूसरी गवाही इस बात की कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके रसूल (दूत) हैं।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

जीवन में सबसे संपन्न मनुष्य वह है जो अल्लाह की बात मानने में सबसे संपन्न हो, जिससे उसका थोड़ा हिस्सा भी छूट गया उससे जीवन का एक भाग छूट गया, जो अल्लाह की बात नहीं मानता वह अल्लाह के अलावा सृष्टि की बात मान कर अपमानित होता है।

अल्लाह ने अपनी अवज्ञा पर चेतावनी दी है और फ़रमाया:

﴿فَلۡيَحۡذَرِ ٱلَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنۡ أَمۡرِهِۦٓ أَن تُصِيبَهُمۡ فِتۡنَةٌ أَوۡ يُصِيبَهُمۡ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾

अतः उनको, जो उसके आदेश की अवहेलना करते हैं, डरना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि उनपर कोई आज़माइश आ पड़े या उनपर कोई दुखद यातना आ जाए। (अल-नूर: 63)

श्री अबू बकर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "मैं हर ऐसी चीज़ को करके रहूँगा जिसे अल्लाह के प्यारे नबी ﷺ किया करते थे; मुझे भय है कि अगर मैं आप का एक भी आदेश छोड़ दूँगा तो भटक जाऊँगा।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

आज्ञाकारी के कर्म में संकोच या उसको अदा करने में सुस्ती आज्ञापालन की पूर्णता के विरुद्ध है, जिसने किसी कथन को प्यारे नबी ﷺ के कथन से आगे रखा; वह आपकी बात मानने वालों में से नहीं होगा, परलोक में नबी मोहम्मद ﷺ की पूरी उम्मत "जन्नत में दाखिल होगी सिवाय उसके जिसने इनकार किया, लोगों ने पूछा: हे अल्लाह के रसूल! कौन इनकार करता है? तो आपने फ़रमाया: जो मेरी आज्ञाकारिता करेगा वो जन्नत में प्रवेश पाएगा और जो मेरी अवज्ञा करेगा उसने इनकार किया।" (सही बुख़ारी)

मुंह मोड़ने वाला व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाकारिता के लिए धरती पर दोबारा लौटने की कामना करेगा और दंड से मुक्ति पाने के लिए ज़मीन भर कर और उसके

बराबर धन से हर्जाना अदा करना चाहेगा:

﴿وَٱلَّذِينَ لَمۡ يَسۡتَجِيبُواْ لَهُۥ لَوۡ أَنَّ لَهُم مَّا فِي ٱلۡأَرۡضِ جَمِيعٗا وَمِثۡلَهُۥ مَعَهُۥ لَٱفۡتَدَوۡاْ بِهِۦٓۚ أُوْلَٰٓئِكَ لَهُمۡ سُوٓءُ ٱلۡحِسَابِ وَمَأۡوَىٰهُمۡ جَهَنَّمُۖ وَبِئۡسَ ٱلۡمِهَادُ﴾

रहे वे लोग जिन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो धरती में हैं, बल्कि उसके साथ उतना और भी हो तो अपनी मुक्ति के लिए वे सब दे डालें। वही हैं, जिनका बुरा हिसाब होगा। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह अत्यन्त बुरा विश्राम-स्थल है। (अल-रा'द: 18)

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।…

अंतिम दिन पर ईमान

क़यामत की निशानियाँ[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो अपने आज्ञाकारियों और डरने वालों को सम्मान देने वाला तथा अपने आदेश को व्यर्थ करने वालों एवं अवज्ञाकारियों को अपमानित करने वाला है। मैं उसकी अत्याधिक कृपा और वरदान पर उसकी प्रशंसा करता हूँ, मैं उसके विशाल अनुग्रहों तथा उपहार पर उसका धन्यवाद करता हूँ।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसके अलावा हमारा कोई प्रभु नहीं है और हम केवल उसी की इबादत करते हैं।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद अल्लाह के भक्त और दूत हैं, उसके चुने हुए भक्तों में सबसे उत्तम और उसके पसंदीदा दूतों में सबसे श्रेष्ठ हैं। हे अल्लाह! तू शांति अवतीर्ण कर उन पर, उनके परिवार पर, उनके साथियों पर और उन पर जिनकी चाहत प्यारे नबी के मार्गदर्शन के अनुसार हुई।

अम्मा बा'द:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए और इस्लाम के मज़बूत कड़े को थाम लो, जान लो कि तुम्हारे पैर जहन्नम के सहन की शक्ति नहीं रखते।

हे मुस्लिमो!

अंतिम दिन पर और उसमें मिलने वाले पुण्य व दंड पर ईमान लाना इस्लाम के स्तंभों और उसकी महान बुनियादों में से एक है, अल्लाह ने क़यामत से पहले कुछ संकेत निर्धारित किए हैं जो उसके निकट होने का प्रमाण देते हैं, महान अल्लाह का कथन है:

﴿فَهَلۡ يَنظُرُونَ إِلَّا ٱلسَّاعَةَ أَن تَأۡتِيَهُم بَغۡتَةٗۖ فَقَدۡ جَآءَ أَشۡرَاطُهَاۚ فَأَنَّىٰ لَهُمۡ إِذَا جَآءَتۡهُمۡ ذِكۡرَىٰهُمۡ﴾

अब क्या वे लोग बस क़यामत की प्रतीक्षा कर रहे है कि वह उनपर अचानक आ जाए? उसके लक्षण तो सामने आ ही चुके है, जब वह स्वयं भी उनपर आ जाएगी तो फिर उनके लिए

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 03/11/1419 हिजरी को दिया गया।

होश में आने का अवसर कहाँ शेष रहेगा? (मुहम्मद: 18)

प्यारे नबी ﷺ क़यामत के मामले को बहुत बड़ा बताते थे, जब भी उसका उल्लेख करते; आप के गाल लाल हो जाते, आप की ध्वनि ऊँची हो जाती, आप का क्रोध तेज़ हो जाता और उसके विषय में बार-बार बात करते।

प्यारे नबी ﷺ के सहाबा भी आपस में क़यामत के बारे में चर्चा करते रहते थे, श्री हुज़ैफ़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "प्यारे नबी ﷺ हमारे बीच आए और हम कुछ चर्चा कर रहे थे, आपने कहा: तुम सब किस बारे में चर्चा कर रहे हो? लोगों ने कहा: हम क़यामत को याद कर रहे हैं।" (सही मुस्लिम) जब प्यारे नबी ﷺ ने क़यामत का उल्लेख अत्यधिक बार किया और उसकी निकटता के कई संकेत आ गए तो सहाबा को अपने ही ऊपर उसके बरपा होने का भय होने लगा।

इसके अलावा क़यामत के बहुत सारे लक्षण प्रकट हो चुके हैं और प्यारे नबी की भविष्यवाणी सही साबित हुई है, प्रतिदिन नबी ﷺ पर ईमान वालों के ईमान और तस्दीक़ में बढ़ोतरी ही हो रही है; क्योंकि आपके दूतत्व के ऐसे प्रमाण और आपकी सच्चाई की ऐसी निशानियाँ सामने आ रही हैं जो मुस्लिमों के लिए अपने सीधे सच्चे धर्म को मज़बूती से थाम लेने को अनिवार्य करती हैं, ताकि वे प्रस्थान के लिए तैयार रहें; क्योंकि क़यामत करीब आ चुकी है और उसके लक्षण स्पष्ट हो चुके हैं, महान प्रभु ने फ़रमाया:

﴿ٱقۡتَرَبَتِ ٱلسَّاعَةُ وَٱنشَقَّ ٱلۡقَمَرُ﴾

क़यामत निकट आ लगी और चाँद फट गया। (अल-क़मर: 1)

जब क़यामत के बड़े लक्षण प्रकट होंगे तो इस प्रकार लगातार आएंगे जैसे हार टूटने के बाद उसमें प्रोए हुए दाने बिखरने लगते हैं, महामहिम प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَلِلَّهِ غَيۡبُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۚ وَمَآ أَمۡرُ ٱلسَّاعَةِ إِلَّا كَلَمۡحِ ٱلۡبَصَرِ أَوۡ هُوَ أَقۡرَبُۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ﴾

आकाशों और धरती के रहस्यों का संबंध अल्लाह ही से है। और उस क़यामत का मामला तो बस ऐसा ही है जैसे आँखों का झपकना या वह इससे भी अधिक निकट है। निश्चय ही अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। (अल-नह्ल: 77)

प्यारे नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "क़यामत की दो निशानियों में से जो भी दूसरी से पहले होगी तो दूसरी निशानी भी शीघ्र ही उसके पीछे आ जाएगी।" (सही मुस्लिम) मुस्नद अहमद में है: "क़यामत की निशानियाँ एक धागे में पिरोए हुए दाने हैं, यदि धागे को काट दिया जाए तो एक के बाद एक दाना आता जाएगा।"

हे मुस्लिमो!

क़यामत की निशानियों में से एक: प्यारे नबी ﷺ का भेजा जाना है, प्यारे नबी से प्रमाणित है कि आप ने फ़रमाया: "मुझे और क़यामत को साथ-साथ भेजा गया है, वो तो मुझ से पहले ही आया चाहती थी।" (मुसनद अहमद)

क़यामत की निशानियों में से एक: प्यारे नबी की मृत्यु है, आपकी मृत्यु के कारण आप के सहाबा की आंखों में संसार अंधकारमय हो गया था।

क़यामत की निशानियों में से एक: बड़े बड़े फ़ितनों का प्रकट होना है, जिसमें सत्य और असत्य मिश्रित हो जाएंगे, ईमान हिल जाएगा, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की कब्र के पास से गुजरेगा तथा परिस्थितियों और शरीअत में हुए बदलाव के कारण मिट्टी में अपना शरीर रगड़ेगा और कहेगा: काश मैं इस कब्र वाले की जगह होता, उसके साथ बस परीक्षा होगी, श्री इब्ने-मसऊद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "तुम्हारे ऊपर एक युग ऐसा आएगा कि अगर किसी को मृत्यु बिकती हुई मिलेगी; तो उसे खरीद लेगा। प्यारे नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "क़यामत से पहले अंधेरी रात के टुकड़ों जैसे फ़ितने होंगे, आदमी सवेरे ईमान वाला होगा और शाम को काफ़िर हो जाएगा, शाम को ईमान वाला होगा और सुबह को काफ़िर हो जाएगा।" (मुस्नद अहमद)

इस उम्मत का आखिरी भाग सख्त परीक्षा में डाला जाएगा, प्यारे नबी फ़रमाते हैं: "तुम्हारी इस उम्मत की आफ़ियत (कुशलता) उसके आरंभिक भाग में रखी गई है। जबकि उसके अंतिम भाग में आज़माइशें और अजीब अजीब बातें सामने आएंगी। एक से बढ़ कर एक फ़ितने सामने आएंगे कि एक के सामने दूसरा हल्का महसूस होगा। एक फ़ितना सामने आएगा, तो मोमिन कहेगाः यह मेरा विनाशक है, लेकिन वह गुज़र जाएगा। फिर दूसरा फ़ितना आएगा, तो मोमिन कहेगाः यही सबसे बड़ा फ़ितना है। अतः जो यह पसंद करता हो कि उसे जहन्नम से दूर कर दिया जाए और जन्नत में प्रवेश दे दिया जाए; तो उसकी मौत इस अवस्था में आनी चाहिए कि वह अल्लाह तथा अंतिम दिवस पर ईमान रखता हो।" (सही मुस्लिम)

हे मुस्लिमो!

क़यामत की निशानियों में से कुछ ये हैं: अत्याधिक भूकंप होंगे, एक भूस्खलन पूरब में होगा, एक भूस्खलन पश्चिम में और एक भूस्खलन अरब प्रायद्वीप में होगा, जंगली जानवर मनुष्यों से बात करेंगे, कोड़े का सिरा और जुते का पट्टा इंसान से बोलेगा, आदमी की जांघ उसे सूचित करेगी कि उसके पीछे उसकी पत्नी ने क्या क्या गुल खिलाए थे और सवेरे एक जानवर लोगों के बीच निकलेगा उनसे बातें करेगा कि लोग अपने रब की निशानियों पर यक़ीन नहीं करते थे।

समय करीब आ जाएगा; अंत: वर्ष महीने के समान होगा, महीना सप्ताह के समान होगा, सप्ताह दिन के समान होगा, दिन घंटे के समान होगा और घंटा खजूर का पत्ता जलने के समान होगा।

महिलाओं की संख्या बढ़ जाएगी और पुरुष कम हो जाएंगे, यहाँ तक कि एक ही पुरुष पचास महिलाओं की देखरेख करने वाला होगा, और याजूज माजूज निकल जाएंगे, श्रीमती ज़ैनब बिंत जहश (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत है कि प्यारे नबी ﷺ घबराए हुए उनके पास आए और कहने लगे: "अल्लाह के सिवा कोई पुज्य नहीं, अरबों का विनाश उस बुराई से होना है, जो निकट आ गई है। आज याजूज और माजूज की दीवार में इतना छेद हो गया है। तथा आपने अंगूठे और उससे सटी हुई उँगली का गोला बनाकर दिखाया।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

ज्ञान घट जाएगा और मूर्खता आम हो जाएगी यहाँ तक कि लोग इस्लाम के दायित्वों से भी अनजान हो जाएंगे, प्यारे नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "इस्लाम पुराना हो जाएगा जैसे कपड़ों की नक्काशी पुरानी हो जाती है यहाँ तक कि रोज़ा क्या है? सदका क्या है? और कुर्बानी क्या है? लोगों इन बातों का भी पता नहीं होगा, एक ही रात में अल्लाह की किताब को उठा लिया जाएगा तो धरती में उसकी कोई आयत बाकी नहीं बचेगी, लोगों के कुछ समूह -अर्थात: बड़े बुजुर्ग और बूढ़ी महिलाएं- कहेंगे: हमने अपने बाप दादाओं को इस वचन पर पाया है: "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के अलावा कोई पूज्य प्रभु नहीं है) तो हम भी इसे कहते हैं।" (मुस्तदरक हाकिम)

हराम चीज़ों की अवहेलना की जाएगी, निषिद्ध चीज़ों को हल्के में लिया जाएगा, शराब पी जाएगी, व्यभिचार फैल जाएगा, दिलों में कंजूसी डाल दी जाएगी और हत्या आम हो जाएगी "यहाँ तक कि लोगों पर ऐसा दिन आएगा कि हत्यारे को पता नहीं होगा कि उसने हत्या क्यों की है और मरने वाले को भी मालूम नहीं होगा कि उसकी हत्या क्यों हुई है? पूछा गया: ऐसे

कैसे होगा? प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: अत्यधिक हत्या के कारण ऐसा होगा। मारने वाला और मरने वाला; दोनों आग में होंगे।" (सही मुस्लिम)

दुनिया पर लोगों की राल टपकेगी; अत: वे एक-दूसरे से ऊँचा निर्माण करेंगे, अल्लाह के धर्म से मुख फेर लेंगे, इस उम्मत में शिर्क होने लगेगा और उसकी कुछ जनजातियाँ बहुदेववादियों से ज मिलेंगी; प्यारे नबी कहते हैं: "क़यामत उस समय तक नहीं आएगी जब तक मेरी उम्मत की कुछ जनजातियाँ बहुदेववादियों में शामिल नहीं हो जाएंगी और जब तक मेरी उम्मत की कुछ जनजातियाँ मूर्तियों की पूजा नहीं कर लेंगी।" (मुस्नद अहमद)

जब उम्मत अपने धर्म से दूर चली जाएगी, अपने रास्ते को गुम कर देगी और अपनी शरीअत के प्रति अनजान बन जाएगी; तो वह भटक जाएगी और मार्गदर्शन को अल्लाह की प्रकाशना के बजाय कहीं और से तलाश करने लगेगी, प्यारे नबी फ़रमाते हैं: "क़यामत उस समय तक बर्पा नहीं होगी जब तक मेरी उम्मत बालिश्त-बालिश्त और हाथ-हाथ अपने से पहले के लोगों की राह नहीं पकड़ लेगी।" (सही बुख़ारी)

छल और झूठ प्रचुर मात्रा में फैलेंगे, लगभग तीस धोखेबाज़ और झूठे लोग प्रकट होंगे, जिनमें से हर कोई नबी होने का दावा करेगा।

मनुष्य से प्रशंसनीय गुण छीन लिए जाएंगे; अंत: अमानत मुश्किल से ही अदा की ज सकेगी; "यहाँ तक कि कहा जाएगा कि अमुक जनजाति में एक ईमानतदार व्यक्ति है। एक व्यक्ति के बारे में कहा जाएगा कि वह कितना बुद्धिमान, शिष्ट और साहसी है! लेकिन उसके दिल में सरसों के दाने के बराबर भी ईमान न होगा।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

"क़यामत उस समय तक नहीं आएगी जब तक मदीना बुरे लोगों निकाल बाहर नहीं करेगा जिस तरह कि भट्टी लोहे की खोट को ख़त्म कर देती है।" मदीने को बेहतरीन अवस्था में आबाद होने के बावुजूद छोड़ दिया जाएगा। उस समय केवल पशु पक्षी उसका रुख करेंगे। फिर मुज़ैना जनजाति के दो चरवाहे अपनी बकरियों को हाँकते हुए मदीने की ओर निकलेंगे। परन्तु, उसे खाली पाएंगे, वहाँ कोई नहीं होगा, यहाँ तक कि जब वे सनीयतुल-वदा पहुँचेंगे, तो अपने मुँह के बल गिर पड़ेंगे।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

हे मुस्लिमो!

आदम की रचना और क़यामत के बीच दज्जाल से बढ़कर दुष्ट प्राणी और विशाल फ़ितने बरपा करने वाला कोई नहीं है, हर नबी ने अपनी उम्मत को उसके प्रति चेतावनी दी है, प्यारे नबी ﷺ हर नमाज़ में उससे अपने प्रभु की शरण माँगा करते थे और आपने अपने साथियों

के सामने उसकी इतनी अधिक चर्चा की कि श्री नव्वास बिन समआन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "हमें लगने लगा कि वह यहीं कहीं खजूर के बाग़ों के बग़ल में मौजूद होगा। जब हम शाम में आपके पास आए, तो आपने हमारे ऊपर उसका स्पष्ट प्रभाव महसूस किया। अतः आप ने पूछा: क्या बात है? हमने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल, आपने दज्जाल का ज़िक्र किया और उसे इतना तुच्छ बताया और उसके फ़ितने को इतना भयानक दिखाया कि हम समझने लगे कि वह यहीं कहीं खजूर के बाग़ के बग़ल में मौजूद होगा। यह सुन आपने कहा: "तुम्हारे विषय में दज्जाल के अलावा अन्य फ़ितनों ने मुझे अधिक चिंता में डाल रखा है, (जहाँ तक दज्जाल की बात है) यदि वह मेरे जीवनकाल में ही निकलता है, तो तुम्हारे स्थान पर मैं स्वयं उसका विरोधी हूँगा। और यदि वह मेरे जाने के बाद निकलता है, तो हर व्यक्ति स्वयं उसका विरोधी होगा। और अल्लाह हर मुस्लिम के लिए मेरा उत्तराधिकारी है।" (सही मुस्लिम)

धर्म की दयनीय स्थिति में और ज्ञान से विमुखता की हालत में गुमराही का मसीहा (दज्जाल) पूरब से निकलेगा, लोग उससे बचकर पहाड़ों में भागेंगे, वह ज़मीन में चक्कर लगाएगा और मक्का मदीना के अलावा हर क्षेत्र में प्रवेश करेगा, अल्लाह ने उसके लिए मक्का मदीना में प्रवेश वर्जित कर दिया है, जब भी वह उनमें प्रवेश करना चाहेगा; हाथ में नंगी तलवार लिए एक फ़रिश्ता उसका सामना करेगा और उसे दूर कर देगा, उनके प्रत्येक रास्ते पर फ़रिश्ते पहरा दे रहे होंगे, मदीना भूकंप के तीन झटकों से हिल जाएगा और हर मुनाफिक़ (कपटी) और काफ़िर (अविश्वासी) उससे निकल जाएगा, वह जुर्फ नामी स्थान की दलदल में उतरेगा, उसके शामिल होने वालों में अधिकांश महिलाएं होंगी, यहाँ तक कि व्यक्ति अपनी पत्नी, माँ, बेटी, बहन और अपनी बुआ के पास लौटेगा और उन्हें इस डर से मज़बूती से बाँध देगा कि कहीं वे मसीह-दज्जाल के जाल में ना फंस पड़ें।

हे मुस्लिमो!

दज्जाल का फ़ितना बड़ा भयंकर होगा, उसके साथ दो नदियाँ बह रही होंगी, एक दिखने में श्वेत पानी की होगी और दूसरी दिखने में भड़कती हुई आग की होगी, प्यारे नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "अगर कोई उन्हें पाए तो आंखें बंद करके भड़कती आग की तरह दिखने वाली नदी में चला जाए और सर झुका कर उसमें से पी ले; क्योंकि वह ठंडा पानी होगा।" (सही मुस्लिम) यह तो पानी होगा, और जिसे लोग अपनी आंख से पानी देखते होंगे वह आग होगी।

अल्लाह अपने भक्तों की परीक्षा मसीह दज्जाल के माध्यम से उसके समय में देखी जाने वाली अलौकिक चीजों के निर्माण द्वारा करेगा, महान अल्लाह उसे अपनी क्षमताओं में से कुछ चीज़ों पर क्षमता दे देगा: जैसे: हत्या के बाद मृत व्यक्ति को पुनर्जीवित करना, दुनिया के सौंदर्य

और उर्वरता का उसके साथ प्रकट होना, उसके स्वर्ग और आग और उसकी दो नदियों का प्रकट होना, पृथ्वी के खज़ानों का उसके पीछे-पीछे चलना, आकाश को बारिश की आज्ञा देने पर बारिश बरसाना और धरती को उगाने का आदेश देने पर उगा देना। जो उसका जवाब नहीं देगा और उसकी आज्ञा को रद्द करेगा वो भुखमरी, अकाल, सूखा, कमी, मवेशियों की मौत, धन, प्राण और फलों में क्षति से पीड़ित होगा, यह सब महान ईश्वर की शक्ति और इच्छा से होगा, उसके बाद महान अल्लाह उसे अक्षम कर देगा, फिर वह हत्या के बाद पुनर्जीवित किये हुए उस व्यक्ति की दोबारा हत्या करने में या किसी अन्य की हत्या करने में सक्षम नहीं होगा।

अंतिम युग में प्रभु अपने भक्तों की परीक्षा लेगा तो उस परीक्षा से बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट करेगा और बहुत से लोगों को सत्य मार्ग की दिशा देगा, संदेह करने वाले कुफ्र करेंगे और ईमान वाले अपने ईमान में आगे बढ़ेंगे। दज्जाल धरती पर चालीस दिन रहेगा, एक दिन एक साल के समान होगा, एक दिन एक महीने के समान होगा, एक दिन सप्ताह के समान होगा और शेष दिन तुम्हारे सामान्य दिनों के समान होंगे, धरती में उसकी गति आंधी के आगे चलने वाले बादल की भांति होगी।

उसका विशेषण निम्नलिखित है: वह एक विशाल एंव लाल युवक होगा, साफ माथा, चौड़ा गला जिसमें कुछ झुकाओ होगा, घुंघराले घने बाल होंगे, काना होगा, उसकी आंख फूले हुए अंगूर जैसी होगी, उसकी संतान नहीं होगी, श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने उसका वर्णन करते हुए कहा: "वह आकार में सबसे विशाल और बहुत मज़बूती से बंधा हुआ था, ऐसा व्यक्ति हमने कभी नहीं देखा।" प्यारे नबी ﷺ अपने विवरण में फ़रमाते हैं: "उसकी आँखों के बीच काफ़िर लिखा होगा, जिसे हर ईमान वाला पढ़ लेगा, चाहे पढ़ा लिखा हो या ना हो।" (सही मुस्लिम)

श्री सफ़्फ़ारीनी (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "प्रत्येक विद्वान को चाहिए कि बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के बीच मसीह-दज्जाल के बारे में वर्णित हदीसों को फैलाए, विशेष रूप से हमारे समय में जबकि फ़ितने सर चढ़कर बोलने लगे हैं और परीक्षाएं प्रचुर मात्रा में बढ़ चुकी हैं।"

इस्लाम को मज़बूती से थामना, ईमान से सुसज्जित होना, अल्लाह की किताब और उसके दूत की सुन्नत की रोशनी में अल्लाह के शुभनाम और उसके अच्छे गुणों को जानना: दज्जाल से बचाव के साधन हैं।

अत: मसीह दज्जाल एक खाता पीता मनुष्य होगा, जबकि अल्लाह खाने पीने से पाक है, दज्जाल काना होगा जबकि हमारा प्रभु काना नहीं है, अल्लाह को मृत्यु से पहले कोई देख नहीं

सकता जबकि दज्जाल को ईमान वाले और काफ़िर; सभी देखेंगे।

उसके फ़ितने से अधिकाधिक प्रभु की शरण माँगो, तुम में से जो उसे पा ले तो उसके ऊपर सूरह कह्फ़ की प्रारंभिक आयतें पढ़ दे, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो सूरह कह्फ़ की प्रारंभिक दस आयतें याद कर ले वह दज्जाल से सुरक्षित होगा।" (सही मुस्लिम) एक वर्णन में "सूरह कह्फ़ के अंतिम भाग" की बात है। (सुनन अबू-दाऊद)

जब तुम दज्जाल के बारे में सुनना; तो उससे दूर ही रहना, उसके निकट न जाना; क्योंकि व्यक्ति उसके पास यह सोचकर चला तो जाएगा कि वह ईमान वाला है; लेकिन उसके साथ भेजे गए संदेहों के कारण वह भी उसका अनुसरण करने लगेगा।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ﴾

निकट आ गया लोगों का हिसाब और वे हैं कि असावधान कतराते जा रहे है। (अल-अंबिया: 1)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।...

दूसरा ख़ुतबा

समस्त प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो ज़िक्र करने वालों को याद रखता है, शुक्र करने वालों को ज्यादा देता है, तौबा और क्षमा याचना करने वालों की तौबा स्वीकार करता है और इनकारी और अविश्वासियों को यातना देता है। मैं उसके परिपूर्ण अनुग्रहों पर उसकी प्रशंसा करता हूँ और उससे अधिक कृपा की विनती करता हूँ।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, उसने ईमान वालों को अपना डर रखने का आदेश दिया है।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद अल्लाह के भक्त और रसूल हैं, आप ज़िक्र करने वालों में सबसे उत्तम और शुक्र-गुज़ारों के आदर्श हैं, अल्लाह आप पर आपके परिवार, साथियों और अनुयायियों पर कृपा और शांति अवतीर्ण करे।

अम्मा बा'द, फिर हे मुस्लिमो!

जब अंतिम युग में दज्जाल निकलेगा तो उसके अनुयायी बहुत हो जाएंगे, उसका फ़ितना फैल जाएगा, ईमान वालों की बहुत कम संख्या ही उससे बच पाएगी, उस समय दिमश्क़ नगर के पूर्वी क्षेत्र के सफ़ेद मीनार के पास पैग़ंबर ईसा बिन मरयम (उन दोनों पर शांति हो) उतरेंगे और उनके चारों ओर अल्लाह के ईमान वाले बंदे मिलेंगे, वह उन्हें साथ लेकर गुमराही के मसीहा (दज्जाल) की ओर चल पड़ेंगे, पैग़ंबर ईसा के उतरने के समय दज्जाल बैतूल-मुकद्दस की ओर जा रहा होगा, तो पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) फिलिस्तीन में लुद्द के दरवाज़े के पास उसे जा पकड़ेंगे।

जब दज्जाल पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) को देखेगा; तो पनी में नमक की तरह पिघलने लगेगा, पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) उससे कहेंगे: मुझे तुम पर एक अचूक वार तो करना ही है, फिर पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) उसे पकड़ लेंगे और अपनी बरछी से उसकी हत्या कर देंगे, उसके अनुयायी हार जाएंगे और उसकी हत्या के साथ ही एक भयावह फ़ितने का अंत हो जाएगा, वास्तव में पूर्व और पश्चात के मामलात की डोर अल्लाह के हाथ में है।

अल्लाह के बंदो!

काने दज्जाल की हत्या के बाद, पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) का काल सुरक्षा, समृद्धि और आरामदायक जीवन का काल होगा, अल्लाह ऐसी वर्षा भेजेगा जिससे कोई कच्चा पक्का

घर वंचित नहीं रहेगा, ज़मीन से कहा जाएगा: अपने फल उगा दे और अपनी बरकत लौटा दे, उस दिन एक अनार लोगों के एक बड़े समूह के लिए पर्याप्त होगा, सब लोग उसे खाएंगे और उसके छिलके से छाव प्राप्त करेंगे, दूध में इतनी बरकत डाल दी जाएगी कि एक दूध देने वाली ऊँटनी लोगों के एक बड़े समूह के लिए पर्याप्त होगी, एक दूध देने वाली गाय पूरी जनजाति को पर्याप्त होगी और एक दूध देने वाली बकरी एक वंशज के लिए पर्याप्त होगी, धरती में शांति फैल जाएगी; शेर ऊंटों के साथ, चीते गायों के साथ और भेड़िए बकरियों के साथ चरेंगे, बच्चे सांपों के साथ खेलेंगे और सांप उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचाएंगे।

धरती में पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) के सात सालों तक रहने के बाद, अल्लाह शाम देश की ओर से ठंडी हवा भेजेगा, तो वह हवा धरती के पटल पर मौजूद जिस व्यक्ति के हृदय में भी राई के दाने के समान भलाई या ईमान होगा, उसके प्राण ले लेगी।

और क़यामत उस समय आएगी जब धरती के पटल पर कोई भी अल्लाह अल्लाह कहने वाला शेष नहीं रहेगा और सूरज पश्चिम से निकलेगा, जब वह निकलेगा और लोग देख लेंगे; तो सब के सब ईमान ले आएंगे, मगर यह ऐसा समय होगा जब:

﴿لَا يَنفَعُ نَفۡسًا إِيمَٰنُهَا لَمۡ تَكُنۡ ءَامَنَتۡ مِن قَبۡلُ﴾

पहले से ईमान ना लाने वाले किसी भी प्राणी को उसका ईमान लाभ नहीं पहुँचाएगा। (अल-अनआम)

दिल में जो कुछ होगा उसी के साथ हर दिल पर मुहर लगा दी जाएगी और लोगों के पास कर्म की मोहलत खत्म हो जाएगी।

क़यामत का अंतिम बड़ा संकेत और क़यामत आने की घोषणा करने वाली पहली निशानी: एक महान आग है जो यमन से निकलेगी और लोगों को उनके एकत्र होने के स्थल की ओर हाँकेगी, जहाँ लोग दिन में आराम करेंगे आग भी वहीं आराम करेगी, जहा लोग रात बिताएंगे आग भी वहीं रात बिताएगी, जहाँ लोग सुबह करेंगे आग भी वहीं सुबह करेगी और जहाँ लोग शाम करेंगे आग भी वहीं शाम करेगी।

फिर हे मुस्लिमो!

अल्लाह का वचन सत्य है, क़यामत आएगी, उसमें कोई संदेह नहीं है, दुनिया ने अपने अंत की घोषणा कर दी है, उसने उलटे पांव शीघ्रता के साथ वापसी की राह ले ली है, निकट चीज़ (क़यामत) निकट आ चुकी है, जो स्वयं से ग़ाफ़िल हुआ उसका समय तो कट गया लेकिन उसका शोक कठोर से कठोर होता गया, आशाएं लपेटी जा रही हैं और आयु समाप्त हो रही हैं,

जिसने लंबी आशाएं बांधी वह कर्म को भूल गया और निर्धारित अवधि से ग़ाफ़िल हो गया, हर सवेरे की रोशनी तुम्हें मृत्यु की सूचना देती है, भाग्यशाली है वह व्यक्ति जिसने सामान कर लिया और प्रस्थान के लिए तय्यार हो गया, कुछ बुद्धिजीवियों ने कहा है: "मुझे उस व्यक्ति पर आश्चर्य होता है जो अपने धन के घाटे पर तो दुखी होता है, लेकिन अपनी आयु घटने पर दुखी नहीं होता।"

अत: इबादत में परिश्रम करो, अपने गुनाहों पर रोया करो और दंड से दूर भागो, सफल वही है जिसने अपनी आशा को नश्वर से काट कर शाश्वत की ओर फेर दिया। जब श्री मुहम्मद बिन सीरीन (अल्लाह उन पर दया करे) की मौत निकट आई तो वह रोने लगे, उनसे कहा गया: "आप क्यों रो रहे हैं? तो उन्होंने कहा: बीते दिनों में अपनी कोताही और ऊँची जन्नत के लिए अपने कर्म की कमी पर रो रहा हूँ।"

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें शुभ सूचक, सचेतक और जगमगाते दीपक (अर्थात: पैग़ंबर मुहम्मद) पर दरूद व सलाम भेजने का आदेश दिया है।।

काना दज्जाल(1)

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए, जो अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसका मार्गदर्शन करेगा और जो अल्लाह की शरण लेगा अल्लाह उसकी रक्षा और बचाव करेगा।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने इस उम्मत को अंतिम उम्मत बनाया है, इस उम्मत में क़यामत के संकेत प्रकट होंगे और इसी पर क़यामत बरपा होगी, पवित्र प्रभु ने इसके निकट होने के बारे में सूचना दी है, अतः उसने फ़रमाया:

﴿ٱقْتَرَبَتِ ٱلسَّاعَةُ وَٱنشَقَّ ٱلْقَمَرُ﴾

क़यामत की घड़ी निकट आ लगी और चाँद फट गया। (अल-क़मर: 1)

प्यारे नबी ﷺ जब क़यामत का उल्लेख करते तो आपकी आंखें लाल हो जातीं, आपकी ध्वनि ऊंची हो जाती, आपका क्रोध बढ़ जाता और ऐसा लगने लगता जैसे आप किसी सेना से डरा रहे हों, कहते कि: "बस वह सुबह या शाम तुम पर आक्रमण करने वाली है।" (सही मुस्लिम)

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 12/01/1435 हिजरी को दिया गया।

मुशरिकीन (बहूदेववादियों) ने प्यारे नबी ﷺ से क़यामत के समय के बारे में बार-बार पूछा तो आपके प्रभु ने फ़रमाया:

﴿يَسۡـَٔلُونَكَ عَنِ ٱلسَّاعَةِ أَيَّانَ مُرۡسَىٰهَاۖ قُلۡ إِنَّمَا عِلۡمُهَا عِندَ رَبِّيۖ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقۡتِهَآ إِلَّا هُوَۚ﴾

वे तुमसे क़यामत के विषय में पूछते हैं कि वह कब आएगी? कह दो, "उसका ज्ञान मेरे रब ही के पास है। अतः वही उसे उसके समय पर प्रकट करेगा। (अल-आ'राफ: 187)

अपने भक्तों पर पवित्र प्रभु की एक कृपा ये है कि उसने क़यामत के लिए लक्षण निर्धारित किए हैं ताकि लोग अपने प्रभु की ओर पलट आएं, महान प्रभु ने क़यामत की निकटता के संकेतों के बारे में सूचना देते हुए कहा:

﴿فَهَلۡ يَنظُرُونَ إِلَّا ٱلسَّاعَةَ أَن تَأۡتِيَهُم بَغۡتَةٗۖ فَقَدۡ جَآءَ أَشۡرَاطُهَاۚ فَأَنَّىٰ لَهُمۡ إِذَا جَآءَتۡهُمۡ ذِكۡرَىٰهُمۡ﴾

अब क्या वे लोग बस क़यामत की प्रतीक्षा कर रहे है कि वह उनपर अचानक आ जाए? उसके लक्षण तो सामने आ ही चुके है। (मुहम्मद: 18)

अगर क़यामत की एक भी बड़ी निशानी प्रकट हो जाएगी; तो बहुत जल्द दूसरी भी उसके पीछे-पीछे आ जाएगी।

एक बड़ा मामला जिसे अल्लाह ने क़यामत के संकेतों में से निर्धारित किया है, ऐसा है कि हर नबी ने अपनी उम्मत को उससे डराया है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिस नबी को भी अल्लाह ने भेजा है उसने अपनी उम्मत को उसके प्रति सचेत किया है, पैग़ंबर नूह (उन पर शांति हो) और उनके बाद के नबियों ने भी सचेत किया है।" (सही बुख़ारी) और अंतिम नबी मुहम्मद ﷺ ने भी उसके प्रति अपनी उम्मत को सचेत किया है और कहा है: "मैं तुम्हें उससे सचेत कर रहा हूँ।" प्यारे नबी अपनी नमाज़ में उसके फ़ितने से अल्लाह की शरण माँगते थे और अपने साथियों को भी उससे शरण माँगना ऐसे ही सिखाते थे जैसे क़ुरआन की कोई सूरह सिखाते थे, साथ ही अपने साथियों को उपदेश देते और इस मामले के शीघ्र ही प्रकट होने की सूचना देते थे, श्री नव्वास बिन समआन (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "यहाँ तक कि हमें लगने लगा कि वह यहीं कहीं खजूर के बाग़ों के बीच मौजूद होगा। (सही मुस्लिम)

सलफ़ (पूर्व के विद्वान) समय-समय पर इसे याद कराते रहने का आदेश देते थे, श्री सफ़्फ़रीनी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "हर विद्वान के लिए उचित है कि वह अपने

बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के बीच दज्जाल के बारे में वर्णित हदीसों को फैलाए, विशेष रूप से हमारे आज के समय में जबकि फ़ितने सर उठा चुके हैं, परीक्षाएं बढ़ गई हैं और सुन्नतों के चिन्ह धुंधले हो गए हैं।"

दज्जाल समुद्र के एक टापू में आज भी जीवित है, मज़बूत बंधन में बंधा हुआ है, उसके हाथ घुटनों के बीच से टखनों तक होते हुए लोहे द्वारा गर्दन से जकड़े हुए हैं, उसके निकलने का समय निकट आ गया है, उसने अपने बारे में कहा था: "जल्द ही मुझे निकलने की अनुमति मिल जाएगी।" (सही मुस्लिम)

उसके निकलने का संकेत यह है कि बैसान (हौरान और फिलिस्तीन के बीच एक शहर) में खजूर के पेड़ फलदार होने के बाद फलहीन हो जाएंगे, श्री याक़ूत हमवी कहते हैं: "मैंने इस स्थान को कई बार देखा है, वहाँ बस दो ही खजूर के पेड़ फलहीन देखे थे।"

दज्जाल के निकलने का एक संकेत यह है कि तबरिया झील का पानी का समाप्त हो जाएगा, आजकल उसका पानी कम हो चुका है और लगातार कम ही होता जा रहा है।

उसके निकालने का एक संकेत यह है कि -शाम के शहर- ज़ुग़र के झरने का पानी समाप्त हो जाएगा, वहाँ के निवासी उस झरने के पानी से खेती-बाड़ी नहीं कर पाएंगे।

सबसे पहले वह यहूदिया से निकलेगा, जोकि खुरासान की धरती पर असफहान शहर में स्थित एक मोहल्ला है, जब वह निकलेगा तो उसके साथ यहूदिया के सत्तर हज़ार यहूदी होंगे और उसके अपने सुरक्षाकर्मी और नौकर चाकर भी होंगे।

वह एक लाल एंव विशाल व लंबा तड़ंगा युवक होगा, चौड़ा माथा, जिसमें कुछ झुकाओ होगा, घुंघराले घने बाल होंगे, काना होगा, उसकी आंख फूले हुए अंगूर जैसी होगी, श्री तमीम दारी (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने उसका वर्णन करते हुए कहा: "वह आकार में सबसे विशाल और बहुत मज़बूती से बंधा हुआ था, ऐसा व्यक्ति हमने कभी नहीं देखा।" प्यारे नबी ﷺ अपने विवरण में फ़रमाते हैं: "आदम की रचना से क़यामत कायम होने तक दज्जाल से बड़ी कोई रचना नहीं है।"

प्यारे नबी ﷺ ने उसकी विशेषताएं बताई हैं ताकि जब वह निकले तो लोग उसे पहचान लें, और जान लें कि वास्तव में वह दज्जाल ही है, संसार का प्रभु नहीं है जैसा कि उसका दवा होगा। चूंकि दज्जाल इसी उम्मत में निकलेगा; इसलिए प्यारे नबी ﷺ ने उसका ऐसा विवरण बताया है जिसका उल्लेख किसी अन्य नबी ने नहीं किया, प्यारे नबी ने फ़रमाया: "मैं तुम्हें उसके विषय में ऐसी बात बताऊँगा जो किसी भी नबी ने अपनी उम्मत को नहीं बताई, तुम जानते हो

कि वह काना है और अल्लाह काना नहीं है।" (सही बुख़ारी)

धर्म की दयनीय स्थिति और ज्ञान से विमुखता की हालत में उसका उत्थान होगा; ताकि मोमिन काफ़िर से अलग हो जाए और आज्ञाकारी संदेह करने वालों के बीच से छट कर सामने आ जाए, फिर दज्जाल दावा करेगा कि वह समस्त संसार का प्रभु है, अल्लाह द्वारा उसके साथ असाधारण चीजें पैदा किए जाने के कारण, बंदे उसके फ़ितने में फंस जाएंगे।

उसका एक फ़ितना यह होगा कि वह एक व्यक्ति की हत्या करेगा फिर उसे -अल्लाह की ईच्छा से- जिवित भी कर देगा, दूसरे को तलवार मारकर दो टुकड़े कर देगा, फिर हत्या के बाद उसे बुलाएगा तो मृत व्यक्ति उसकी ओर हँसता मुसकुराता चला आएगा, एक व्यक्ति को सर की मांग पर आरी चलाकर दोनों टांगों के बीच तक चीर देगा यहां, फिर दज्जाल उन दोनों टुकड़ों के बीच चलेगा और कहेगा: खड़े हो जाओ तो वह सीधा खड़ा हो जाएगा, एक व्यक्ति को उसके दोनों हाथ पैर से पकड़ कर उसे अपने पास मौजूद आग में डाल देगा, समझा तो जाएगा कि उसे आग में फेंका गया है, जबकि वास्तव में उसे जन्नत में डाला गया होगा; क्यूंकि दज्जाल की जन्नत आग होगी और आग जन्नत होगी।

उसके साथ दो नदियाँ बह रही होंगी, एक दिखने में श्वेत पानी की होगी और दूसरी दिखने में भड़कती हुई आग की होगी, प्यारे नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "अगर कोई उन्हें पाए तो भड़कती आग की तरह दिखने वाली नदी पर चला जाए और आंखें बंद करके सर झुका कर उसमें से पी ले; क्योंकि वह ठंडा पानी होगा।" (सही मुस्लिम)

वह आकाश को बरसने का आदेश देगा; तो वह बरसने लगेगा, धरती को उगाने का आदेश देगा; तो वह उगाने लगेगी, खंडहर ज़मीन से गुजरेगा और कहेगा कि अपने खज़ाने निकाल दे; तो उसके खज़ाने उसके पीछे-पीछे चल पड़ेंगे, इब्नूल-अरबी (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "यह सब बहुत ही भयावह मामला है।"

धरती में उसकी चाल बड़ी तेज गति की होगी, प्यारे नबी ने अपने कथन में उसे इस प्रकार बयान किया है कि वह "आंधी के आगे चलने वाले बादल की भांति होगी।" (सही मुस्लिम)

दज्जाल धरती पर चालीस दिन रहेगा, एक दिन एक साल के समान होगा, एक दिन एक महीने के समान होगा, एक दिन सप्ताह के समान होगा और शेष दिन तुम्हारे सामान्य दिनों के समान होंगे। वह मक्का मदीने के अलावा हर बस्ती में प्रवेश करेगा; क्योंकि उनके प्रत्येक द्वार पर फ़रिश्ते पहरा दे रहे होंगे, जब भी वह उनमें प्रवेश करना चाहेगा; हाथ में नंगी तलवार लिए एक फ़रिश्ता उसका सामना करेगा और उसे दूर कर देगा।

मदीने के अलावा सारी बस्तियाँ दज्जाल से घबरा जाएंगी, लेकिन मदीने में दज्जाल का दबदबा और भय प्रवेश नहीं कर सकेगा।

चूंकि अल्लाह ने मक्का मदीने को विशेष रूप से दज्जाल से सुरक्षित रखा है, इसलिए शूकराने के तौर पर इन दोनों पवित्र शहरों के निवासियों का दायित्व बनता है कि वे इनको अल्लाह की आज्ञाकारिता से आबाद रखें। जब वह मदीना में दाखिल होने से रोक दिया जाएगा; तो -उहुद पहाड़ के पश्चिम में मौजूद- जुर्फ की दलदल में उतरेगा और वहाँ पर अपना झंडा गाड़ेगा। उसकी ओर निकलने वालों में अधिकांश महिलाएं होंगी। मदीना अपने निवासियों समीट तीन बार भूकंप से कांप उठेगा जिसके कारण हर मुनाफिक और काफ़िर दज्जाल की ओर निकल भागेगा।

प्रत्येक युग और स्थान में सबसे उत्तम लोग वही रहे हैं जो किसी बुराई को देखकर उसका खंडन करते हैं, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِٱلْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ﴾

तुम एक उत्तम समुदाय हो, जो लोगों के समक्ष लाया गया है। तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो। (आल-इमरान: 110)

जब वह मदीने के पास ठहरेगा तो एक युवक उसके पास आएगा और उसके प्रभुत्व के दावे का और उसकी मक्कारी का खंडन करेगा, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "वह लोगों में सबसे उत्तम होगा या सबसे उत्तम लोगों में से होगा, फिर वह कहेगा: मैं गवाही देता हूँ कि तू वही दज्जाल है जिसके बारे में अल्लाह के रसूल ﷺ ने हमें सूचना दी थी।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

प्यारे नबी ﷺ के निधन से मुस्लिमों का बहुत बड़ा घाटा हुआ है; क्योंकि अगर आप जीवित होते; तो हमारे लिए दज्जाल के विरुद्ध पर्याप्त होते; प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "यदि वह मेरे जीवनकाल में ही निकलता है, तो तुम्हारे स्थान पर मैं स्वयं उसका विरोधी हूँगा।" (सही मुस्लिम)

लेकिन प्यारे नबी ﷺ के निधन के बाद हर मुस्लिम स्वयं दज्जाल के विरुद्ध लड़ने वाला है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "और यदि वह मेरे जाने के बाद निकलता है, तो हर व्यक्ति स्वयं उसका विरोधी होगा। और अल्लाह हर मुस्लिम के लिए मेरा उत्तराधिकारी है। (सही मुस्लिम)

उससे बचाव का एक साधन: अल्लाह और उसके गुणों की पहचान के साथ धार्मिक

ज्ञान है, क्योंकि दज्जाल काना होगा और हमारा पवित्र प्रभु काना नहीं है, अल्लाह को इस संसार में कोई नहीं देख सकता और दज्जाल को लोग देखेंगे, दज्जाल की दो आँखों के बीच काफ़िर लिखा होगा जिसे हर पढ़ा लिखा और अनपढ़ व्यक्ति पढ़ लेगा, इस्लाम के महान विद्वान श्री इब्ने-तैमिया (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "ईमान वाले के लिए विशेष रूप से फितनों के समय, वह चीज़ भी स्पष्ट हो जाती है जो दूसरे के लिए नहीं होती।"

फितनों से भागना और उनसे दूर रहना भी -अल्लाह की इच्छा से- दज्जाल से बचाव का साधन है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने दज्जाल के बारे में सुना उसे चाहिए कि उससे दूर ही रहे; क्योंकि अल्लाह की क़सम व्यक्ति उसके पास यह सोचकर चला तो जाएगा कि वह ईमान वाला है; लेकिन उसके साथ भेजे गए संदेहों के कारण वह भी उसका अनुसरण करने लगेगा।" (सनन अबू-दाऊद)

धर्म को मज़बूती से थाम लेने में ही दज्जाल से मुक्ति है; क्योंकि उसके अनुयायी ईमान वाले नहीं होंगे, इसी प्रकार उससे प्रभु की अधिक से अधिक शरण माँगना भी सुरक्षा और शांति है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई नमाज़ में तशह्हुद में बैठे; तो उसको चाहिए कि चार चीजों से अल्लाह की शरण माँगे, कहे: हे अल्लाह! मैं जहन्नम की यातना से तेरी शरण चाहता हूँ, क़ब्र की यातना से तेरी शरण चाहता हूँ, जीवन और मृत्यु के फ़ितने से तेरी शरण चाहता हूँ और काने दज्जाल के फ़ितने से तेरी शरण चाहता हुँ।" (सही मुस्लिम) श्री ताऊस (अल्लाह उन पर रहम करे) नमाज़ में यह दुआ ना पढ़ने पर अपने बेटे को नमाज़ दोहराने का आदेश देते थे।

सम्मानित क़ुरआन प्रत्येक फ़ितने से बचाव की बुनियाद है, जो दज्जाल के प्रकट होने के बारे में सुनेगा और उसे सूरह कह्फ़ की दस आयतें याद होंगी; तो -अल्लाह के हुक्म से- उसकी रक्षा की जाएगी, जो दज्जाल को देखेगा उसे चाहिए कि उस पर सूरह कह्फ़ की प्रारंभिक आयतें पढ़ें, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "तुम में से जो उसे पाएगा उसे चाहिए कि उस पर सूरह कह्फ़ की प्रारंभिक आयतें पढ़ दे।" (सही मुस्लिम)

जब उसके अनुयायी बढ़ जाएंगे और उसका फितना फैल जाएगा; तो पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) दिमश्क़ शहर के पूर्वी मीनार पर उतरेंगे, फिर अल्लाह के बंदे उनके आसपास एकत्रित हो जाएंगे, फिर जब दज्जाल बैतूल-मुकद्दस की ओर मुड़ रहा होगा तो पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) उसका पीछा करेंगे और उसे फिलिस्तीन में लुद्द शहर के द्वार के पास उससे जा मिलेंगे, पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) को देख कर दज्जाल नमक की तरह पिघलने लगेगा, पैग़ंबर ईसा (उन पर शांति हो) उससे भिड़ जाएंगे और उसे अपनी बरछी से मार डालेंगे।

फिर हे मुस्लिमो!

अल्लाह का वचन सत्य है, क़यामत आने वाली है, उसमें कोई संदेह नहीं है, उसका आना तीव्र गति से होगा, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क़यामत जिस व्यक्त आएगी एक व्यक्ति ऊँटनी का दूध दुह रहा होगा, तो बर्तन अभी उसके मुंह तक नहीं पहुँचेगा कि क़यामत आ जाएगी। दो व्यक्ति एक दूसरे को कपड़ा बेच रहे होंगे, अभी वे सौदा पूरा भी नहीं कर पाएंगे कि क़यामत आ जाएगी, एक व्यक्ति हौज़ में लेप चढ़ा रहा होगा वह हौज़ से निकल भी नहीं पाएगा कि क़यामत आ जाएगी।" (सही मुस्लिम)

यूँ तो एक मुस्लिम हर समय और युग में अच्छे कर्मों में पहल करने वाला होता है, लेकिन जब धर्म अजनबी बन जाए और फ़ितने बहुत बढ़ जाएं; तो वह और अधिक पाबंदी और प्रचुरता के साथ अच्छे कर्मों का पालन करने लगता है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "छ चीजों से पहले पहले अच्छे कर्म में लग जाओ: सूरज का पश्चिम से निकलना, धुआँ, दज्जाल, (बात करने वाला) जानवर, किसी की विशेष रुकावट (मौत) और सार्वजनिक मामला (क़यामत)।" (सही मुस्लिम)

प्यारे नबी ﷺ का आज्ञापालन बंदे के लिए समृद्धि और कठिनाई; दोनों हालतों में सुरक्षा है, जब श्री तमीम दारी और उनके साथियों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने दज्जाल को देखा था; तो उसने उनसे कुछ प्रश्न पूछे थे: उसने हमारे नबी ﷺ के बारे में भी पूछा था कि "उसने क्या किया? सहाबा ने कहा: वह मक्का से निकल गए हैं और यसरिब (मदीने) में अपना ठिकाना बना लिया है, दज्जाल ने पूछा: क्या अरबों ने उससे लड़ाई की है? उन्होंने कहा: हाँ, तो दज्जाल ने कहा: तो उसने उनके साथ क्या किया? तो उन्होंने उसे सूचना दी कि: उन्हें अपने निकट के अरबों पर विजय प्राप्त हो गई है और सारे लोग उनके अधीन हो गए हैं, दज्जाल ने उनसे कहा: क्या ऐसा ही हुआ है? तो उन्होंने कहा: हाँ, दज्जाल ने कहा: उनके लिए उसके अधीन होना ही भला है।" (सही मुस्लिम)

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।

﴿اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ﴾

निकट आ गया लोगों का हिसाब और वे हैं कि असावधान कतराते जा रहे हैं। (अल-अंबिया: 1)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।।।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की प्रशंसा है उसके उपकार पर और उसका धन्यवाद है उसकी विशेष सहायता व कृतज्ञता पर। मैं अल्लाह को सम्मान अर्पित करने हेतु गवाही देता हूँ कि कोई पूजनीय नहीं है सिवाय उसी के, जिसका कोई साझी नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और रसूल हैं, अधिकाधिक अल्लाह की शांति हो उन पर और उनके परिवार और साथियों पर।

हे मुस्लिमो!

अगरचे दज्जाल का मामला बहुत भयावह है; परंतु अच्छे कर्मों में दिखावा; प्यारे नबी ﷺ के निकट अपनी उम्मत के प्रति उससे भी अधिक भयानक है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की सूचना न दूँ जो मेरे निकट तुम्हारे लिए काने दज्जाल से भी अधिक भयानक है? लोगों ने कहा: क्यूं नहीं? तो आपने फ़रमाया: छिपा हुआ शिर्क, यह कि व्यक्ति नमाज़ के लिए खड़ा हो, फिर लोगों की नज़र को अपनी ओर होता देख नमाज़ को सुंदर बनाने लगे।" (मुस्नद अहमद) शेख़ सुलेमान (अल्लाह उन पर दया करे) ने तैसीरुल-अज़ीज़ अल-हमीद में कहा है: "दिखावा इतना अधिक भयानक इसलिए है; क्योंकि वह गुप्त होता है, उसकी उत्सुकता का भाव मज़बूत होता है और शैतान व उकसाने वाले नफ़्स द्वारा उसे मन में सुंदर बनाए जाने के कारण, उससे मुक्ति पाना बहुत काठिन होता है।" जबकि एक मोमिन जहाँ अपने कर्म को प्यारे नबी ﷺ के अनुसरण द्वारा सुधारता है; वहीं उसमें एक अल्लाह के लिए निय्यत को शुद्ध बना कर उसे सफल व स्वीकार्य बनाता है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर दया और सलाम भेजने का आदेश दिया है।।।

अंतिम दिन: प्रतिफल का दिन[1]

समस्त प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसके अनुग्रह से सत्यमार्ग वालों ने सत्यमार्ग प्राप्त किया और जिसके न्याय से भटकने वाले भटक गए, उससे उसके कर्मों के विषय में प्रश्न नहीं किया जा सकता, जबकि लोगों से प्रश्न होगा, मैं उस पवित्र प्रभु की प्रशंसा करता हूँ, एक भक्त की प्रशंसा जो अपने प्रभु को उन समस्त चीज़ों से पवित्र घोषित करती है जो अन्यायी लोग कहते हैं।

मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूज्य प्रभु नहीं है, एक है, उसका कोई साझी नहीं है, ऐसी गवाही जिससे अच्छे लोग संतुष्ट हुए।

मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद अल्लाह के भक्त और उसके सच्चे और अमानतदार दूत हैं। अल्लाह की शांति हो आप पर, आपके परिवार और उन साथियों पर जो आपके पदचिन्हों को मज़बूती से थामे रहे और आपके मार्ग पर चलते रहे।

अम्मा बा'द:

मैं आप सबको और स्वयं को अल्लाह से डरने की वसिय्यत करता हूँ, वही कल की मुक्ति और सदा का सुख है।

हे मुस्लिमो!

अंतिम दिन को सत्य मानना ईमान की उन बुनियादों में से एक है जिनकी ओर पैग़ंबरों ने बुलाया है, पैगंबरों ने अपनी उम्मतों को वादे के दिन की खबर पहुँचाई, तथा उन्हें जन्नत की शुभ सूचना दी और जहन्नम से सचेत किया, अल्लाह की पुस्तक में परहेज़गार लोगों का जो गुण सबसे पहला आया है वह ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाना है:

﴿ذَٰلِكَ ٱلۡكِتَٰبُ لَا رَيۡبَۛ فِيهِۛ هُدٗى لِّلۡمُتَّقِينَ * ٱلَّذِينَ يُؤۡمِنُونَ بِٱلۡغَيۡبِ﴾

वह किताब यही है, जिसमें कोई सन्देह नहीं, मार्गदर्शन हैं डर रखनेवालों के लिए, जो ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाते हैं। (अल-बक़रह: 2-3)

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 21/01/1420 हिजरी को दिया गया।

पैग़ंबर आदम (उन पर शांति हो) को धरती की ओर उतारते समय अल्लाह ने उनसे कहा था:

﴿فِيهَا تَحۡيَوۡنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنۡهَا تُخۡرَجُونَ﴾

धरती पर ही तुम्हें जीना है, वहीं तुम्हें मरना है और उसी में से तुमको निकाला जाएगा। (अल-आ'राफ: 25)

पैग़ंबर नूह (उन पर शांति हो) ने अपनी उम्मत को प्रतिफल के दिन से चेताया और उस दिन के आगमन तथा घटना को इंगित करने वाले उदाहरण बयान किए, अत: उन्होंने कहा:

﴿وَٱللَّهُ أَنۢبَتَكُم مِّنَ ٱلۡأَرۡضِ نَبَاتٗا ۝ ثُمَّ يُعِيدُكُمۡ فِيهَا وَيُخۡرِجُكُمۡ إِخۡرَاجٗا﴾

और अल्लाह ने तुम्हें धरती से विशिष्ट प्रकार से विकसित किया, फिर वह तुम्हें उसमें लौटाएगा और तुम्हें बाहर भी निकालेगा। (नूह: 17-18)

पैग़ंबर शुऐब (उन पर शांति हो) ने अपनी उम्मत से कहा था:

﴿ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱرۡجُواْ ٱلۡيَوۡمَ ٱلۡأٓخِرَ وَلَا تَعۡثَوۡاْ فِي ٱلۡأَرۡضِ مُفۡسِدِينَ﴾

अल्लाह की इबादत करो, अंतिम दिन की आशा रखो और धरती में बिगाड़ फैलाते मत फिरो।" (अल-अंकबूत: 36)

इस जीवन में व्यक्ति की आयु अत्यंत कम और इस नश्वर संसार में उसके दिन गिने-चुने हैं, जबकि धरती पर उसकी आवश्यकताएं अनंत और उसकी आशाएं बहुत लंबी हैं, वह जब यहाँ से प्रस्थान करेगा तब भी उसका मन आवश्यकताओं से भरा होगा और जिस धरती से वह प्रस्थान कर रहा होगा उसी पर उसकी बहुत सी आशाएं रह जाएंगी और एक ऐसा दिन आएगा जब जीवन और जीवित प्राणी समाप्त हो जाएंगे, महान अल्लाह ने कहा:

﴿كُلُّ شَيۡءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجۡهَهُۥ﴾

हर चीज़ नाशवान है सिवाय उसके स्वरूप के। (अल-क़सस: 88)

फिर ऐसा युग आएगा जिसमें अल्लाह बंदों को लौटाएगा, उन्हें पुनर्जीवित करके उठाएगा और उन्हें अपने सामने खड़ा करके जो कर्म उन्होंने दुनिया में आगे भेजे होंगे उन सब पर जवाबदेह ठहराएगा। उस दिन बंदों को बड़ी भयावहता का सामना होगा, उस भयावहता से केवल वही लोग बच पाएंगे जिन्होंने ईमान और अच्छे कर्मों द्वारा उस दिन की तय्यारी की होगी

और अंत में बंदों को निवास स्थान; अर्थात: स्वर्ग या नरक में ले जाया जाएगा।

यही दिन क़यामत (पुनरुत्थान) का दिन होगा, ऐसा दिन जो दिलों पर दस्तक देगा और कानों को इस प्रकार बजाएगा कि उन्हें लगभग बहरा ही करके छोड़ेगा, एक महामारी का दिन जो हर बड़े से बड़े मामले को अपनी चपेट में ले लेगा और लोगों को अपने आतंक से अभिभूत कर देगा:

﴿هَلۡ أَتَىٰكَ حَدِيثُ ٱلۡغَٰشِيَةِ﴾

क्या तुम्हें उस छा जाने वाली चीज़ की ख़बर पहुँची है? (अल-ग़ाशिया: 1)

बंदे उस दिन पछताएंगे और लज्जित होंगे:

﴿وَأَنذِرۡهُمۡ يَوۡمَ ٱلۡحَسۡرَةِ إِذۡ قُضِيَ ٱلۡأَمۡرُ وَهُمۡ فِي غَفۡلَةٖ وَهُمۡ لَا يُؤۡمِنُونَ﴾

उन्हें पछतावे के दिन से डराओ, जबकि मामले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उनका हाल यह है कि वे ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और ईमान नहीं ला रहे। (मरयम: 39)

व्यक्ति कहेगा:

﴿يَٰحَسۡرَتَىٰ عَلَىٰ مَا فَرَّطتُ فِي جَنۢبِ ٱللَّهِ وَإِن كُنتُ لَمِنَ ٱلسَّٰخِرِينَ﴾

"हाय, अफ़सोस उसपर! जो कोताही अल्लाह के हक़ में मैंने की। और मैं तो परिहास करनेवालों में ही सम्मिलित रहा।" (अल-ज़ुमर: 56)

कुफ़्र वालों का पछतावा उस समय अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच जाएगा, जब सरदार और अनुयायी अपने नेताओं से पल्ला झाड़ लेंगे:

﴿وَقَالَ ٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُواْ لَوۡ أَنَّ لَنَا كَرَّةٗ فَنَتَبَرَّأَ مِنۡهُمۡ كَمَا تَبَرَّءُواْ مِنَّاۗ كَذَٰلِكَ يُرِيهِمُ ٱللَّهُ أَعۡمَٰلَهُمۡ حَسَرَٰتٍ عَلَيۡهِمۡۖ وَمَا هُم بِخَٰرِجِينَ مِنَ ٱلنَّارِ﴾

वे लोग जो उनके पीछे चले थे कहेंगे: काश! हमें एक बार (फिर संसार में) लौटने का मोका मिलता तो जिस तरह आज ये हमसे विरक्त हो रहे हैं, हम भी इनसे विरक्त हो जाते। इस प्रकार अल्लाह उनके कर्मों को उनके लिए हृदयविदारक बनाकर दिखाएगा और वे आग से निकल न सकेंगे। (अल-बक़रह: 167)

उस दिन खूब आवाज़ें लगाई जाएंगी, हिसाब और प्रतिफल के लिए हर इंसान को उसके

नाम के साथ बुलाया जाएगा, जन्नत वाले नरक वालों को आवाज़ देंगे और नर्क वाले जन्नत वालों को पुकारेंगे, और आराफ़ वाले इनको और उनको आवाज़ देंगे:

﴿ذَٰلِكَ يَوۡمٞ مَّجۡمُوعٞ لَّهُ ٱلنَّاسُ وَذَٰلِكَ يَوۡمٞ مَّشۡهُودٞ﴾

वह एक ऐसा दिन होगा, जिसमें सारे ही लोग एकत्र किए जाएँगे और वह एक ऐसा दिन होगा, जिसमें सब कुछ आँखों के सामने होगा। (हूद: 103)

वह परस्पर लाभ-हानि का दिन होगा, जन्नत वाले नर्क वालों को हानि पहुँचा देंगे; क्योंकि ये लोग स्वर्ग में प्रवेश करके उन चीज़ों को ले लेंगे जो अल्लाह ने जहन्नम वालों के लिए जन्नत में तय्यार की थीं, अत ये (ईमान वाले) स्वर्ग में अविश्वासियों के हिस्से के वारिस बन जाएंगे, इस प्रकार शुभ वचन और चेतावनी पूरी हो जाएगी, समस्त मामले और सीनों में छिपी बातें स्पष्ट हो जाएंगी, वह एक ऐसा दिन है जिसमें क़ब्रें तितर-बितर हो जाएंगी और जो कुछ सीनों में होगा बाहर आ जाएगा, यह अविश्वासियों के लिए कठिन दिन होगा, सरल बिल्कुल नहीं होगा, उस दिन मनुष्य ने जो कुछ भी आगे भेजा होगा या पीछे छोड़ा होगा सब के बारे में बता दिया जाएगा।

हे मुस्लिमो!

अभी लोग लोग अपने धन और आजीविका को लेकर विवाद और झगड़े में ही पड़े होंगे; कि अचानक सूर (विशाल भोंपू) में फूंक मार दी जाएगी, जिसके नतीजे में पृथ्वी पर मौजूद "प्रत्येक व्यक्ति अपनी गर्दन की एक साइड झुका रहा होगा तथा दूसरी साइड उठा रहा होगा" अर्थात: आकाश से आने वाली आवाज़ को सुनने के प्रयास में अपनी गर्दन का एक सिरा झुका रहा होगा और दूसरा सिरा उठा रहा होगा, मगर उसे अपनी वसिय्यत लिखने या परिवार के पास लौटने तक की मोहलत नहीं मिलेगी, महान अल्लाह ने कहा:

﴿مَا يَنظُرُونَ إِلَّا صَيۡحَةٗ وَٰحِدَةٗ تَأۡخُذُهُمۡ وَهُمۡ يَخِصِّمُونَ ۞ فَلَا يَسۡتَطِيعُونَ تَوۡصِيَةٗ وَلَآ إِلَىٰٓ أَهۡلِهِمۡ يَرۡجِعُونَ﴾

वे तो बस एक प्रचंड चीत्कार की प्रतीक्षा में हैं, जो उन्हें इस आवस्था में आ पकड़ेगी जबकि वे झगड़ते होंगे, फिर न तो वे कोई वसिय्यत कर पाएँगे और न अपने घरवालों की ओर लौट ही सकेंगे। (यासीन: 49-50)

"सूर (विशाल भोंपू) की आवाज़ को सबसे पहले एक व्यक्ति सुनेगा जो अपने ऊंट के

हौज़ पर लेप चढ़ा रहा होगा, कहते हैं कि वह बेहोश हो जाएगा, फिर अन्य लोग भी बेहोश हो जाएंगे", हदीस में है: "दो व्यक्तियों ने कपड़ा फेला रखा होगा, अभी वे सौदा पूरा करके उसे समेट भी नहीं पाएंगे कि क़यामत आ जाएगी, एक व्यक्ति अपनी ऊँटनी का दूध लेकर आ रहा होगा, अभी उसे पी भी नहीं पाएगा कि क़यामत आ जाएगी, एक व्यक्ति अपना हौज़ तय्यार कर रहा होगा, अभी वह उससे पानी पीला भी नहीं सकेगा कि क़यामत आ जाएगी, और व्यक्ति निवाला अपने मुंह की ओर उठा रहा होगा, अभी वह उसे खा भी नहीं पाएगा कि क़यामत आ जाएगी।" (सही बुख़ारी)

हे अल्लाह के बंदो!

सूर एक सींग है जिसमें फूंक मारी जाएगी और सूर वाला फ़रिश्ता उसमें फूंक मारने के लिए उसी समय से सज्य है जब अल्लाह ने उसकी रचना की थी, वह अर्श (प्रभु के सिंहासन) की ओर नज़र गड़ाए हुए खड़ा है कि कहीं पलक झपकने से पहले आदेश न दे दिया जाए, प्यारे नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "मुझे कैसे चैन आ सकता है जबकि सींग वाला फरिश्ता सींग को अपने मुंह में ले चुका है, उसने माथा झुका दिया है और अपना कान अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा में लगा दिया है, अब वह बस फूंकने के आदेश की प्रतीक्षा कर रहा है, आदेश आते ही फूंक मार देगा, मुस्लिमों ने कहा: हे अल्लाह के रसूल! (ऐसी विकट स्थिति में) हमें क्या कहना चाहिए? तो प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: यह कहा करो: अल्लाह! हमारे लिए पर्याप्त है वह उत्तम कार्यसाधक है, हमने अपने प्रभु अल्लाह पर भरोसा किया।" (सुनन तिर्मिज़ी)

हे मुस्लिमो!

क़यामत शुक्रवार को आएगी, मनुष्य एवं जिन्न के अलावा सभी सृष्टि प्रति शुक्रवार को सुबह से सूर्योदय तक क़यामत घटने के भय से डरी सहमी रहती है, जब अल्लाह बंदों को वापस लौटाना और उन्हें जीवित करना चाहेगा तो इस्राफ़ील को आदेश देगा; तो वह सूर में फूंक मरेंगे जिससे आत्माएं अपने शरीरों में वापस आ जाएंगी और लोग संसार के प्रभु के लिए उठ खड़े होंगे:

﴿وَنُفِخَ فِي ٱلصُّورِ فَإِذَا هُم مِّنَ ٱلۡأَجۡدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمۡ يَنسِلُونَ﴾

और नरसिंघा में फूँक मारी जाएगी। फिर अचानक वे क़ब्रों से निकलकर अपने रब की ओर चल पड़े हैं। (यासीन: 51)

बेहोशी से सबसे पहले होश में आने वाले और सबसे पहले जिनकी कब्र खुलेगी वह

हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ होंगे, बेहोशी के सूर के बाद अल्लाह आसमान से पानी बरसाएगा जिससे बंदों के शरीर सब्जियों की तरह उगेंगे, टेलबो (Tailbone) के अलावा मनुष्य की हर चीज़ सड़ जाती है, उसी से क़यामत के दिन सृष्टि की संरचना होगी।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण चाहता हूँ

﴿وَأَنذِرۡهُمۡ يَوۡمَ ٱلۡأٓزِفَةِ إِذِ ٱلۡقُلُوبُ لَدَى ٱلۡحَنَاجِرِ كَٰظِمِينَۚ مَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ حَمِيمٖ وَلَا شَفِيعٖ يُطَاعُ﴾

और उन्हें निकट आ जाने वाली (क़यामत के) दिन से सावधान कर दो, जबकि हृदय कंठ को आ लगे होंगे और वे उसे दबा रहे होंगे। ज़ालिमों का न कोई घनिष्ट मित्र होगा और न ऐसा सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए। (ग़ाफ़िर: 18)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।।।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अम्मा बा'द, हे मुस्लिमो!

प्रतिफल के दिन अल्लाह समस्त बंदों को एकत्रित करेगा और इस जमावड़े में पहले और बाद के सभी लोग एक समान हो जाएंगे:

﴿قُلۡ إِنَّ ٱلۡأَوَّلِينَ وَٱلۡأٓخِرِينَ ۞ لَمَجۡمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَٰتِ يَوۡمٖ مَّعۡلُومٖ﴾

कह दो, "निश्चय ही अगले और पिछले भी एक नियत समय पर इकट्ठे कर दिए जाएँगे, जिसका दिन ज्ञात और नियत है। (अल-वाक़िआ: 49-50)

बंदों का अंत चाहे किसी भी स्थिति में हुआ हो -समुद्र के अंधकार में, दरिंदों के पेट में या धरती के पाताल में- महान अल्लाह सबको वापस लाने पर सक्षम है:

﴿أَيۡنَ مَا تَكُونُواْ يَأۡتِ بِكُمُ ٱللَّهُ جَمِيعًاۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ﴾

जहाँ कहीं भी तुम होगे अल्लाह तुम सबको एकत्र करेगा। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है। (अल-बक़रह: 148)

महान अल्लाह के ज्ञान ने लोगों को घेर रखा है, चाहे जहाँ भी उनकी मृत्यु हुई हो या जहाँ भी उनका अंत हुआ हो; सभी को एकत्रित किया जाएगा, किसी को भी भुलाया नहीं जाएगा और ना ही कोई मनुष्य हश्र के मैदान में पीछे रहेगा, महामहिम प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَحَشَرۡنَٰهُمۡ فَلَمۡ نُغَادِرۡ مِنۡهُمۡ أَحَدٗا﴾

और हम उन्हें इकट्ठा करेंगे तो उनमें से किसी एक को भी न छोड़ेंगे। (अल-कह्फ़: 47)

पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿إِن كُلُّ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ إِلَّآ ءَاتِي ٱلرَّحۡمَٰنِ عَبۡدٗا * لَّقَدۡ أَحۡصَىٰهُمۡ وَعَدَّهُمۡ عَدّٗا﴾

आकाशों और धरती में जो कोई भी है; एक बन्दे के रूप में रहमान के पास आनेवाला है, उसने उनका आकलन कर रखा है और उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है। (मरयम: 93-94)

इसलिए ईश्वर से डरो, अंतिम दिन को अपने मन में बिठाओ, उसकी स्मृति को अपनी जीभ पर रखो, ईमान और अच्छे कर्मों के साथ उसकी तय्यारी करो, जितना चाहो जी लो; लेकिन जान रखो कि एक दिन तुम्हें मरना ज़रूर है, जिससे चाहो प्रेम कर लो; मगर सत्य यह है कि तुम उस से जुदा होने वाले हो, जितना चाहो कर्म कर लो; तुम्हें उन सब का प्रतिफल मिल कर रहेगा, अपने तक़वे को पाथेय बना लो; क्योंकि यात्रा बहुत दूर की है, बोझ हल्का कर लो; क्योंकि बाधा कठिन है, श्री यह्या बिन मुआज़ (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "धन्य है वह व्यक्ति जिसने दुनिया छोड़ दी इससे पहले कि दुनिया उसे छोड़ती, कब्र में प्रवेश करने से पहले ही उसका निर्माण कर लिया और प्रभु की मुलाक़ात से पहले ही उसे प्रसन्न कर लिया।"

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर दया और सलाम भेजने का आदेश दिया है।।

क़यामत की भयावहता[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसे कि डरना चाहिए और एकांत में और लोगों के बीच उस की निगरानी का ख़याल रखो।

हे मुस्लिमो!

इस जीवन में लोग लापरवाह हैं, यहाँ पर उनकी आशा लंबी चोड़ी है, इस लिए मन को परिणाम की याद दिलाकर नियंत्रित करना आवश्यक है, ताकि इस संसार द्वारा परलोक को संवारा जा सके और भविष्य के लिए वर्तमान का सदुपयोग किया जा सके। अल्लाह ने अंतिम दिन पर विश्वास को ईमान के स्तंभों में से एक स्तम्भ निर्धारित किया है, वह दिन आएगा जब प्रभु के इस वचन को सत्य सिद्ध करते हुए सृष्टि नष्ट हो जाएगी:

﴿كُلُّ مَنۡ عَلَيۡهَا فَانٖ﴾

धरती पर मौजूद प्रत्येक व्यक्ति नाशवान है। (अल-रहमान: 26)

फिर एक दिन वह भी आएगा जब अल्लाह बंदों को लोटाएगा और क़ब्रों से पुनर्जीवित करके उठाएगा।

जिस व्यक्ति को सबसे पहले पुनर्जीवित कर उठाया जाएगा और जिसकी क़ब्र सबसे पहले खुलेगी वह हमारे नबी मुहम्मद ﷺ हैं, बंदों को इस हाल में एकत्रित किया जाएगा कि वे

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 30/07/1421 हिजरी को दिया गया।

नंगे पैर, नंगे सर और खतने के बिना होंगे:

﴿كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُۥ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَآ ۚ إِنَّا كُنَّا فَٰعِلِينَ﴾

जिस प्रकार पहले हमने सृष्टि का आरंभ किया था उसी प्रकार हम उसकी पुनरावृत्ति करेंगे। (अल-अंबिया: 104)

बंदों को वस्त्र पहनाया जाएगा, सबसे पहले जिस व्यक्ति को वस्त्र पहनाया जाएगा वह पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) होंगे, सद्गुणी लोगों को प्रतिष्ठित वस्त्र पहनाया जाएगा और बुरे लोगों को तारकोल -पिघले हुए तांबे- और खुजली वाले कवच पहनाए जाएंगे, सृष्टि को इस धरती से अलग एक धरती के मैदान में इकट्ठा किया जाएगा। श्रीमती आइशा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने पूछा: हे अल्लाह के रसूल! फिर लोग कहाँ होंगे? तो आपने फ़रमाया: "सिरात[1] पर होंगे।" (सही मुस्लिम) दूसरे शब्दों में है: "वह पुल से पहले अंधकार में होंगे।"

हश्र की भूमि एक सफेद तथा बंजर भूमि होगी, उसमें किसी के लिए कोई चिन्ह नहीं होगा, उस पर कोई हराम खून नहीं बहाया गया होगा, न उस पर कोई पाप किया गया होगा, निगाह उन सब को पार कर जाएगी और पुकारने वाला उन सब सुना देगा, वह दिन बड़ा तेवर वाला और अत्यंत क्रूर होगा, जिसके बारे में काफ़िर कहेंगे:

﴿هَٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ﴾

यह तो एक कठिन दिन है! (अल-क़मर: 8)

बंदों ने ऐसा दिन कभी नहीं देखा होगा, अल्लाह ने उसे भारी और कठिन बताया, जिससे नवजात शिशु के बाल भी सफेद हो जाएंगे:

﴿فَذَٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ عَسِيرٌ﴾

तो जिस दिन ऐसा होगा वह दिन बड़ा ही कठोर होगा (अल-मुद्दस्सिर: 9)

स्तनपान कराने वाली महिला अपने शिशु से बेसुध हो जाएगी और गर्भवती महिला का गर्भपात हो जाएगा।

एक ऐसा दिन जिसमें विवेक आश्चर्यचकित होंगे और दिमाग़ अनुपस्थित हो जाएंगे,

(1) जहन्नम के ऊपर से गुज़रने वाला एक पुल जो बाल से अधिक बारीक और तलवार से अधिक तेज़ होगा।

मनुष्य अपने सबसे चहीते लोगों अर्थात: माता पिता, भाई, पत्नी और बच्चों से भी दूर भागेगा और पापी संव्य को बचाने के लिए अपने सबसे प्रिय लोगों को भी आग में झोंकना गवारा कर लेगा:

﴿يُبَصَّرُونَهُمْۚ يَوَدُّ ٱلْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِى مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيهِ ۞ وَصَٰحِبَتِهِۦ وَأَخِيهِ ۞ وَفَصِيلَتِهِ ٱلَّتِى تُـْٔوِيهِ ۞ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنجِيهِ﴾

हालाँकि वे एक-दूसरे को दिखा दिए जाएंगे। अपराधी चाहेगा कि किसी प्रकार वह उस दिन की यातना से छूटने के लिए अपने बेटों, अपनी पत्नी, अपने भाई और अपने उस परिवार को जो उसको आश्रय देता है, और उन सभी लोगों को जो धरती में रहते है, फ़िदया (मुक्ति-प्रतिदान) के रूप में दे डाले फिर वह उसको छुटकारा दिला दें। (अल-मआरिज: 11-14)

पृथ्वी हिला दी जाएगी, उसे एक ही झटके में चूर चूर कर दिया जाएगा, फिर चमड़े की भांति उसे फैला दिया जाएगा, फिर वह ऐसा समतल मैदान बन जाएगी जिसमें कोई टेढ़ापन या टीला नहीं होगा, अल्लाह उसे पकड़ेगा और अपनी उंगली द्वारा थाम लेगा।

पहाड़ों को चला दिया जाएगा, उनके टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएंगे और वे छिन्न भिन्न हो जाएंगे, वे रेत के एक भव्य टीले में बदल जाएंगे, और धुनके हुए रंग-बिरंग के ऊन जैसे हो जाएंगे, देखने वाले को ऐसा प्रतीत होगा कि वहाँ कुछ हैं, लेकिन वह एक मृगतृष्णा के सिवा कुछ नहीं होगा:

﴿وَسُيِّرَتِ ٱلْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا﴾

और पहाड़ चलाए जाएंगे, तो वे बिल्कुल मरीचिका होकर रह जाएँगे। (अल-नबा: 20)

पहाड़ अपने स्थान से हटा दिए जाएंगे और पृथ्वी समतल बना दी जाएगी जिसमें न ऊंचाई होगी न गहराई:

﴿لَّا تَرَىٰ فِيهَا عِوَجًا وَلَآ أَمْتًا﴾

तुम उसमें न कोई सिलवट देखोगे और न ऊँच-नीच। (ताहा: 107)

समुद्र को बहा दिया जाएगा, भड़का दिया जाएगा और आग बनाकर दहका दिया जाएगा।

आकाश फट जाएगा, डगमगाएगा और अशांत होगा; तब वह कमज़ोर और दुर्बल हो

जाएगा, और रंग बदलने लगेगा:

﴿فَإِذَا ٱنشَقَّتِ ٱلسَّمَآءُ فَكَانَتۡ وَرۡدَةٗ كَٱلدِّهَانِ﴾

फिर जब आकाश फट जाएगा और लाल चमड़े की तरह लाल हो जाएगा। (अल-रहमान: 37)

आकाश की खाल उतार दी जाएगी, तब कोई आवरण या छिपाव न रहेगा। हमारा प्रभु उसे अपने दाहिने हाथ से इस प्रकार लपेटेगा जैसे जैसे पंजी में पन्ने लपेटे जाते हैं, वह उसे एक उंगली से थमेगा।

सूर्य को लपेट दिया जाएगा, एकत्रित कर दिया जाएगा, उसकी रोशनी चली जाएगी, और चंद्र को ग्रहण लग जाएगा:

﴿فَإِذَا بَرِقَ ٱلۡبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ ٱلۡقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ ٱلشَّمۡسُ وَٱلۡقَمَرُ﴾

तो जब निगाह चौंधिया जाएगी, और चन्द्रमा को ग्रहण लग जाएगा, और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठे कर दिए जाएंगे। (अल-क़ियामह: 7-9)

खिलते झिलमिलाते तारे धुंधले हो जाएंगे, वे टूट कर बिखर जाएंगे, पृथ्वी अपना चिराग़ बुझने और रोशनी खत्म हो जाने के कारण अन्धकारमय हो जाएगी।

दस माह की गाभिन ऊंटनियाँ बेकार छोड़ दी जाएंगी, जानवरों को इकट्ठा किया जाएगा, सृष्टि एक दूसरे पर चढ़ दौड़ेगी, जो वहाँ लोगों को देखेगा वह सोचेगा कि वे नशे में हैं, लेकिन वे नशे में नहीं होंगे, परंतु अल्लाह की यातना कड़ी होगी।

आँखें फटी की फटी रह जाएंगी, दिल गले तक आजाएंगे, फ़रिश्ते प्राणियों के साथ कतार में खड़े तेज दृष्टि से देख रहे होंगे, यह एक महान घटना होगी, एक भयानक दस्तक होगी, पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ कहते हैं: "मैं क़यामत के दिन अपने स्थान की संकीर्णता से अल्लाह की शरण में आता हूँ।" (सुनन नसई)

उस दिन हर प्राण को ज्ञात हो जाएगा कि वह क्या लेकर आया है, हाथ से अवसर निकल जाने पर मनुष्य पछताएगा, सीने की गुप्त चीज़ों को बुरी तरह से पकड़ लिया जाएगा और उनमें जो कुछ है वह सामने बिखेर दिया जाएगा, सो जो भी उनमें गुप्त था प्रकाश में आ जाएगा, जो कुछ भी छिपाया गया था उसे खोल कर रख दिया जाएगा, एक भयावह चुप्पी होगी, न कोई बात उसमें हलचल पैदा करेगी, न कोई बहाने बाज़ी उस चुप्पी को तोड़ सकेगी:

﴿هَٰذَا يَوۡمُ لَا يَنطِقُونَ ۞ وَلَا يُؤۡذَنُ لَهُمۡ فَيَعۡتَذِرُونَ﴾

यह वह दिन होगा कि वे कुछ बोल नहीं रहे होंगे, और न उन्हें अनुमति ही दी जाएगी कि बहाना बना सकेंगे। (अल-मुरसलात: 35-36)

वहाँ सफेद, उज्ज्वल, चमकते दमकते, हँसते मुसकुराते और ताज़गी से भरपूर चेहरे होंगे, जबकि कुछ अन्य चेहरे भी होंगे जो काले, उतरे हुए, धूल से अटे हुए, कलौंस से भरे और थके हुए होंगे। उस दिन ईश-भय वालों को प्रभु के सामने अतिथि दल के रूप में लाया जाएगा, जबकि अपराधियों को इस अवस्था में हाँका जाएगा कि उनकी आंखें (भय के मारे) नीली हो रही होंगी।

सूरज लोगों के सिरों के इतना निकट पहुँच जाएगा कि उसके और लोगों के बीच केवल एक मील का फासला रह जाएगा, परम दयालु (प्रभु) के सिंहासन की छाया के अलावा किसी की छाया नहीं होगी, इसलिए कुछ लोग छाया लेने वाले होंगे जबकि कुछ सूर्य की तपिश से तप रहे होंगे, कौमें एक दूसरे को धक्का देंगी, उनके पांव लड़खड़ाएंगे, उनकी गर्दनें टूट जाएंगी और पसीना भूमि में सत्तर हाथ तक बह पड़ेगा। यह पसीना धरती पर, फिर श्रेणीबद्ध रूप से लोगों के शरीरों पर जमा हो जाएगा, उनमें से कुछ के टखनों तक पहुँचेगा तो कुछ की गर्दनों तक, सो उनपर दुख छा जाएगा, प्राण व्याकुल हो उठेगा और लोग भय के मारे घुटने टेक देंगे

﴿وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٖ جَاثِيَةٗ﴾

और तुम देखोगे कि हर क़ौम ने घुटने टेक दिए हैं। (अल-जसिया: 28)

प्यारे नबी ﷺ कहते हैं: "लोग ऐसे दुख और संकट का अनुभव करेंगे जिसकी उनमें क्षमता और सहनशक्ति नहीं होगी।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

अवज्ञाकारियों को आज्ञापालन में अपनी लापरवाही पर अत्यंत खेद व दुख होगा, वे अत्यंत पछतावे के कारण अपने हाथों को दांतों से काटने लगेंगे, महामहिम प्रभु का कथन है:

﴿وَيَوۡمَ يَعَضُّ ٱلظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيۡهِ يَقُولُ يَٰلَيۡتَنِي ٱتَّخَذۡتُ مَعَ ٱلرَّسُولِ سَبِيلٗا﴾

उस दिन अत्याचारी अपने हाथ चबाएगा। कहेगा: "ऐ काश! मैंने रसूल के साथ मार्ग अपनाया होता! (अल-फ़ुरक़ान: 27)

पापी अपने आप से, अपने प्रियजनों से और अपने दोस्तों से नफरत करेगा, हर प्रेम जो धर्म पर आधारित नहीं था, दुश्मनी में बदल जाएगा, व्यक्ति अपने अंगों से भी झगड़ा करने

लगेगा, अहंकारी धूलकणों की तरह एकत्रित किए जाएंगे और लोग उन्हें तुच्छ समझ कर रौंदते हुए निकल जाएंगे, उस दिन अल्लाह टखने से नीचे कपड़ा रखने वाले से बात भी नहीं करेगा, न उसकी ओर देखेगा, न उसे शुद्ध करेगा और उसके लिये दुखद यातना होगी।

क़यामत के दिन हर विश्वासघाती के बट पर एक झंडा लगाया जाएगा और कहा जाएगा: यह अमुक के पुत्र अमुक का विश्वासघात है। जो बिना किसी अधिकार के दूसरे की भूमि अधिग्रहण करता है; क़यामत के दिन उसे सात भूमि तक नीचे धंसा दिया जाएगा। क़यामत के दिन इस संसार का अत्याचार कई गुना बढ़ जाएगा। "अत्याचार क़यामत के दिन अँधेरों के रूप में होगा।" अधिकार नष्ट नहीं होंगे, बल्कि प्रत्येक उत्पीड़क से उत्पीड़ितों को बदला दिलाया जाएगा, यहाँ तक कि जानवरों के बीच भी प्रतिकार का फैसला किया जाएगा।

उस दिन का सबसे बुरा व्यक्ति: "दो चेहरों वाला आदमी होगा, जो इनके पास एक चेहरा लेकर जाता है और उनके पास दूसरा चेहरा लेकर जाता है।" और "जिसने किसी मोमिन की दुनिया की कोई परेशानी दूर की होगी, अल्लाह उसकी क़यामत के दिन की परेशानी को दूर करेगा। जिसने किसी अभावग्रस्त व्यक्ति के साथ आसानी बरती होगी, अल्लाह दुनिया एवं आख़िरत में उसके साथ आसानी करेगा। जिसने किसी मुसलमान के दोष एवं अवगुण को छिपाया होगा, अल्लाह तआला दुनिया और आख़िरत में उसके अवगुण एवं दोष को छिपाएगा।"

न्याय करने वाले लोग परम दयालु (प्रभु) के दाएं हाथ पर प्रकाश के मंच पर होंगे, प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु अवस्था के अनुसार पुनर्जीवित किया जाएगा; अत: जो कोई एहराम में मरेगा उसे तल्बिया पढ़ते हुए पुनर्जीवित किया जाएगा, जो ईश्वर के पक्ष में लड़ते हुए घायल हुआ होगा वह इस अवस्था में आएगा कि उसका रंग तो खून का रंग होगा लेकिन गंध कस्तूरी की गंध होगी, मुअज़्ज़िन गण की गर्दन सबसे लंबी होगी, जहाँ जहाँ तक उसकी आवाज़ पहुँचती होगी वहाँ की हर चीज़ क़यामत के दिन उसके हक़ में गवाही देगी, जिसके बाल इस्लाम के अनुसरण में पक गए; उसके लिए एक प्रकाश होगा, लोगों के बीच फैसला संपन्न होने तक हर व्यक्ति अपने सदक़े (दान) की छाया में होगा।

सिरात एक फिसलन तथा सरकने वाला मार्ग है; कोई उससे साफ़ बचकर निकल जाएगा, कोई ज़ख्मी हो जाएगा तो कोई वहीं आग में ढेर हो जाएगा।

न्याय पर आधारित तराज़ू होगा, जिसमें कोई विकृति नहीं होगी, उसमें एक कण के भार की भी गणना होगी:

﴿فَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ خَيۡرٗا يَرَهُۥ * وَمَن يَعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ شَرّٗا يَرَهُۥ﴾

अतः जो कोई कणभर भी नेकी करेगा, वह उसे देख लेगा,और जो कोई कणभर भी बुराई करेगा, वह भी उसे देख लेगा। (अल-ज़लज़लह: 7-8)

"अल्हम्दुलिल्लाह" (समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है) तराज़ू को भर देगा, "सुबहानल्लाहि व बिहम्दिहि, सुबहानल्लाहिल अज़ीम" (अल्लाह पाक है अपनी प्रशंसा समेत, पाक है अल्लाह जो बड़ा महान है) ये दो वाक्य; तराज़ू में बड़े भारी होंगे, प्यारे नबी ﷺ से पूछा गया: "वह चीज़ क्या है जो लोगों को सबसे अधिक जन्नत में प्रवेश दिलाएगी? तो आपने फ़रमाया: अल्लाह का भय और सुंदर व्यवहार।" (सुनन तिर्मिज़ी)

मुड़े हुए पत्र फैला दिए जाएंगे, कितनी ही विपत्तियाँ हैं जिन्हें तुम भूल चुके हो?! कितने ही पाप हैं जिन्हें छिपा चुके हो? (लेकिन क़यामत के दिं सब सामने आ जाएगा) जबकि किताब पढ़ी जाएगी, अंग बोलेंगे, फरिश्ते उपस्थित होंगे और ईश्वर सभी कार्यों का गवाह होगा, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَلَا تَعۡمَلُونَ مِنۡ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيۡكُمۡ شُهُودًا إِذۡ تُفِيضُونَ فِيهِۚ﴾

और तुम लोग जो काम भी करते हो हम तुम्हें देख रहे होते हैं, जब तुम उसमें लगे होते हो। (यूनुस: 61)

जब अल्लाह जानवरों के बीच निर्णय की प्रकिरया समाप्त कर देगा; तो बंदों के बीच निर्णय का कार्य शुरू कर देगा, सारी उम्मतों के बीच सबसे पहले इस उम्मत के बीच फ़ैसला होगा, यही उम्मत सर्वप्रथम सिरात को पार करेगी, यही सबसे पहले स्वर्ग में प्रवेश करेगी, प्यारे नबी ﷺ कहते हैं: "हम (संसार में तो) अंतिम हैं, पर क़यामत के दिन प्रथम होंगे।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) एक वर्णन में है: "सब जीवों से पहले हमारे बीच फ़ैसला किया जाएगा।" (सही मुस्लिम)

अल्लाह उस महान स्थिति में अपने भक्त मुहम्मद ﷺ को एक विशाल हौज़ देकर सम्मानित करेगा, जिसकी लंबाई चौड़ाई एक महीने की दूरी के समान होगी, उसका पानी दूध से अधिक सफेद, शहद से अधिक मीठा और कस्तूरी से अधिक सुगंधित होगा, उस में तुम आकाश के तारों के बराबर सोने और चाँदी के लोटे देखोगे, जो व्यक्ति उस में से एक बार पी लेगा; उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी, प्यारे नबी ﷺ की उम्मत के कुछ लोग आपके पास आएंगे; लेकिन बीच में बाधा डाल दी जाएगी, आप कहेंगे: "ये लोग मेरी उम्मत के हैं! तो कहा

जाएगा: आप नहीं जानते कि आपके बाद इन लोगों ने कैसी नई प्रथा घड़ ली थी, तो आप कहेंगे: मेरे बाद जिसने धर्म में छेड़छाड़ की वह दूर रहे वह दूर ही रहे।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

इन भयावहताओं से मुक्ति केवल अल्लाह की दया और उसके बाद अच्छे कर्मों से ही संभव है, लापरवाह व्यक्ति उस दिन आवश्य पछताएगा, जब माफ़ी माँगना कुछ काम नहीं आएगा, जिसमें केवल अल्लाह की ओर से ही क्षमा की आशा होगी। तुम्हारा जीवन लंबा हो या छोटा; यह तो तय है कि तुम्हारा अंत या तो स्वर्ग होगा या नरक।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ।

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّ وَعۡدَ ٱللَّهِ حَقّٞۖ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ ٱلۡحَيَوٰةُ ٱلدُّنۡيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِٱللَّهِ ٱلۡغَرُورُ﴾

ऐ लोगो! निश्चय ही अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाल दे और न वह धोखेबाज़ (शैतान) अल्लाह के विषय में तुम्हें धोखा दे। (फ़ातिर: 5)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।।।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अम्मा बा'द, हे मुस्लिमो!

क़यामत के दिन वह व्यक्ति निर्धन होगा जो नमाज़, रोज़ा और ज़कात के साथ आएगा, लेकिन साथ ही उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर झूटा आरोप लगाया होगा, किसी का माल हड़प किया होगा, किसी का रक्त बहाया होगा और किसी को मारा होगा; अतः उसकी कुछ नेकियाँ इसे दे दी जाएंगी और कुछ नेकियाँ उसे दे दी जाएंगी। फिर अगर उसके ऊपर जो हक़ हैं, उन्हें अदा करने से पहले ही उसकी नेकियाँ समाप्त हो जाएंगी, तो हक़ वालों के कुछ गुनाह उसके ऊपर डाल दिए जाएंगे, फिर उसे आग में फेंक दिया जाएगा।

श्री सालेह मुर्री (अल्लाह उनपर दया करे) कहते हैं: "मैं दोपहर को कब्रिस्तान गया, फिर मैंने कब्रों की ओर देखा तो ऐसा लगा जैसे सब शांत लोग हैं, मैंने कहा: पवित्र है वह प्रभु सड़ने गलने की लंबी अवधि के बाद भी तुम्हें पुनर्जीवित कर देगा, तो उन गड्ढों के बीच एक गड्ढे से आवाज़ आई: हे सालेह!

﴿وَمِنْ ءَايَٰتِهِۦٓ أَن تَقُومَ ٱلسَّمَآءُ وَٱلْأَرْضُ بِأَمْرِهِۦ ۚ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ ٱلْأَرْضِ إِذَآ أَنتُمْ تَخْرُجُونَ﴾

और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश से क़ायम हैं। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारकर धरती से बुलाएगा, तो अचानक ही तुम निकल पड़ोगे। (अल-रूम: 25)

कहते हैं कि: मैं बेहोश होकर गिर पड़ा।"

श्री हसन बसरी (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "दो दिन और दो रातें ऐसी हैं कि उन जैसी रातों और उन जैसे दिनों के बारे में सृष्टि ने कभी नहीं सुना है, एक रात जो क़ब्र वालों

पर बीतती है, उस से पहले ऐसी रात कभी नहीं बितती, दूसरी वह रात जिसकी सुबह क़यामत के साथ रोशन होगी। एक दिन तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से शुभ-सूचक आएगा, या तो स्वर्ग की शुभ-सूचना देगा या नरक की, एक दिन ऐसा होगा जब तुम्हें तुम्हारा कर्म-पत्र दिया जाएगा, या तो तुम्हारे दाएं हाथ में दिया जाएगा या तुम्हारे बाएं हाथ में।"

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर आशीर्वाद और शांति भेजने का आदेश दिया है...

क़दर (नियति) पर ईमान

तवक्कुल (निर्भरता)[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा मांगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं, सलाम व शांति हो उन पर, उनके परिवार पर और उनके पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसे कि डरना चाहिए, क्योंकि जो व्यक्ति अपने प्रभु से डरेगा, वह ऊंचाई पाएगा और जो उससे मुँह मोड़ेगा उसका जीवन संकीर्ण होगा।

हे मुस्लिमो!

सृष्टि में अधिकतम सुखी वह व्यक्ति है जो ईश्वर के प्रति वंदना में सबसे बढ़कर होता है, एक भक्त ईश्वर के प्रति जितना अधिक विनम्र और मोहताज होता है वह उतना ही प्रभु के क़रीब तथा उसके और उसके बंदों के यहाँ सम्मानित होता है, बंदा लाभ की प्राप्ति और हानि से बचाओ में आत्मनिर्भर नहीं हो सकता, उसे अपने निर्माता से मदद मांगने की ज़रूरत होती है, जबकि पवित्र अल्लाह आवश्यकता से स्वतंत्र और दूसरों से निस्पृह है, उस के अलावा सब उसी के मोहताज हैं, बंदों के पाप बहुत हैं, अल्लाह की सहायता और क्षमा के बिना उनको इन पापों से मुक्ति नहीं मिल सकती। दिखावा, अहंकार, ईर्ष्या और अल्लाह पर भरोसा न करने जैसे; हृदय से संबधित कई महापाप हैं जिनमें एक व्यक्ति पड़ जाता है और उसे इसका आभास तक नहीं होता, कुछ स्पष्ट छोटे पापों से तो वह बचने की कोशिश भी करता है, मगर इन महान पापों से बेपरवाह ही रहता है।

केवल साधन किसी व्यक्ति की इच्छाएं पूरी करने के लिए अपर्याप्त हैं, कभी बंदा यह सोचकर कोई द्वार खटखटाता है कि वहाँ से कुछ लाभ मिल जाएगा, लेकिन वहाँ से शुद्ध क्षति के सिवा कुछ हाथ नहीं आता। शक्तिशाली व दयालु प्रभु पर निर्भरता ही इस प्रस्थिति से मुक्ति

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 10/06/1424 हिजरी को दिया गया।

दिला सकती है, इसी लिए हमारे प्रभु ने तवक्कुल (निर्भरता) के महत्व को बढ़ाया है, इसे धर्म के उच्च स्थानों में से एक निर्धारित किया है और उसे अपने कथन में इबादत से जोड़ा है:

﴿فَٱعۡبُدۡهُ وَتَوَكَّلۡ عَلَيۡهِۚ﴾

अतः उस की इबादत करो और उसी पर निर्भर रहो। (हूद: 123)

और उसे अपने प्रेम प्राप्ति का कारण बनाया है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُتَوَكِّلِينَ ﴾

निस्संदेह अल्लाह निर्भर रहने वालों से प्रेम करता है। (आल-इमरान: 159)

और उसे ईमान की प्राप्ति के लिए शर्त बनाया है, चुनांचे फ़रमाया:

﴿وَعَلَى ٱللَّهِ فَتَوَكَّلُوٓاْ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ﴾

और अल्लाह ही पर निर्भर रहो, यदि तुम ईमानवाले हो।" (अल-माइदह: 23)

यह महान गरिमा तथा महान प्रभाव वाला स्थान है, संसार के प्रभु की ओर से एक दायित्व है, इसमें परम दयालु प्रभु की संतुष्टि है, यह शैतान से सुरक्षा है, इसका स्थान सबसे व्यापक और सबसे समावेशी है, अल्लाह के निकट सबसे मज़बूत और सबसे प्रिय मार्ग है, अल्लाह ने अपने दूत को भी इसका आदेश दिया है, चुनांचे फ़रमाया:

﴿وَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۚ وَكَفَىٰ بِٱللَّهِ وَكِيلٗا ﴾

और अल्लाह पर निर्भर रहो, अल्लाह निर्भरता के लिए काफी है। (अल-अहज़ाब: 3)

संदेशवाहक गण निर्भर रहने वालों के इमाम और उनके आदर्श हैं, महान ईश्वर ने पैग़ंबर नूह (उन पर शांति हो) के कथन का उल्लेख करते हुए कहा:

﴿إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيۡكُم مَّقَامِي وَتَذۡكِيرِي بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ فَعَلَى ٱللَّهِ تَوَكَّلۡتُ﴾

यदि मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों द्वारा नसीहत करना तुम्हें भारी हो गया है; तो मेरी निर्भरता अल्लाह पर है। (यूनुस: 71)

प्रभु के परम मित्र पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿رَّبَّنَا عَلَيۡكَ تَوَكَّلۡنَا وَإِلَيۡكَ أَنَبۡنَا وَإِلَيۡكَ ٱلۡمَصِيرُ﴾

ऐ हमारे रब! हमने तुझी पर निर्भर हुए, तेरी ही ओर पलटे और अंत में तेरी ही ओर लौटना हैं। (अल-मुमतहिना: 4)

पैग़ंबर हूद (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿إِنِّي تَوَكَّلۡتُ عَلَى ٱللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمۡۚ مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ ءَاخِذُۢ بِنَاصِيَتِهَآۚ﴾

मेरी निर्भरता तो अल्लाह पर है, जो मेरा रब है और तुम्हारा भी रब है। चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है, उसकी चोटी तो उसी के हाथ में है। (हूद: 56)

पैग़ंबर याक़ूब (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿إِنِ ٱلۡحُكۡمُ إِلَّا لِلَّهِۖ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُۖ وَعَلَيۡهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ ٱلۡمُتَوَكِّلُونَ﴾

आदेश तो बस अल्लाह ही का चलता है। उसी पर मैंने निर्भर हुआ और निरभरों को उसी पर निर्भर होना चाहिए। (यूसुफ़: 67)

पैग़ंबर शुऐब (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿وَمَا تَوۡفِيقِيٓ إِلَّا بِٱللَّهِۚ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَإِلَيۡهِ أُنِيبُ﴾

मेरा काम बनना तो अल्लाह ही की सहायता से संभव है। उसी पर मेरी निर्भरता है और उसी की ओर मैं पलटता हूँ। (हूद: 88)

अल्लाह के पैग़ंबरों (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿وَمَا لَنَآ أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى ٱللَّهِ وَقَدۡ هَدَىٰنَا سُبُلَنَاۚ وَلَنَصۡبِرَنَّ عَلَىٰ مَآ ءَاذَيۡتُمُونَاۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ ٱلۡمُتَوَكِّلُونَ﴾

आख़िर हमें क्या हो गया है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमें हमारे मार्ग दिखाए हैं? (इब्राहीम: 12)

फिरऔनी संघ के मोमिन व्यक्ति ने कहा:

﴿وَأُفَوِّضُ أَمۡرِيٓ إِلَى ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَصِيرُۢ بِٱلۡعِبَادِ﴾

मैं तो अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ। निस्संदेह अल्लाह की दृष्टि सब बन्दों पर है। (ग़ाफ़िर: 44)

ईश-दूतत्व और क़ुरआन अवतीर्ण के शुभारंभ में निर्भरता का आदेश है और यह बताया गया है कि इस से बंद द्वार खुलते हैं:

﴿ٱقۡرَأۡ وَرَبُّكَ ٱلۡأَكۡرَمُ﴾

पढ़ो, और तुम्हारा रब बड़ा ही उदार है। (अल-अलक़: 3)

अल्लाह ने इसे ईमान वालों का एक ऐसा गुण बनाया जिसके माध्यम से वे दूसरों से अलग होते हैं:

﴿إِنَّمَا ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ٱلَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَجِلَتۡ قُلُوبُهُمۡ وَإِذَا تُلِيَتۡ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتُهُۥ زَادَتۡهُمۡ إِيمَٰنٗا وَعَلَىٰ رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُونَ﴾

ईमानवाले तो वही लोग हैं कि जिनके दिल अल्लाह की याद के समय काँप उठते हैं। और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं; तो वे उनके ईमान को और अधिक बढ़ा देती हैं और वे अपने रब पर निर्भर होते हैं। (अल-अंफ़ाल: 2)

अल्लाह पर निर्भर बंदों पर शैतान का कोई नियंत्रण नहीं होता, महान प्रभु ने फ़रमाया:

﴿إِنَّهُۥ لَيۡسَ لَهُۥ سُلۡطَٰنٌ عَلَى ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَلَىٰ رَبِّهِمۡ يَتَوَكَّلُونَ﴾

शैतान का उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर निर्भर रहते हैं। (अल-नह्ल: 99)

अल्लाह पर निर्भरता अल्लाह की यातना से रुकावट का कारण है, जैसा कि पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿قُلۡ أَرَءَيۡتُمۡ إِنۡ أَهۡلَكَنِيَ ٱللَّهُ وَمَن مَّعِيَ أَوۡ رَحِمَنَا فَمَن يُجِيرُ ٱلۡكَٰفِرِينَ مِنۡ عَذَابٍ أَلِيمٖ * قُلۡ هُوَ ٱلرَّحۡمَٰنُ ءَامَنَّا بِهِۦ وَعَلَيۡهِ تَوَكَّلۡنَاۖ فَسَتَعۡلَمُونَ مَنۡ هُوَ فِي ضَلَٰلٖ مُّبِينٖ﴾

कहो, "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि अल्लाह मुझे और उन्हें भी, जो मेरे साथ हैं, विनष्ट ही कर दे या वह हम पर दया करे, आख़िर इनकार करनेवालों को दुखद यातना से कौन

पनाह देगा? कह दो "वह रहमान (अत्यंत दयालू) है, उसी पर हम ईमान लाए हैं और उसी पर हम निर्भर हुए, तो शीघ्र ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि खुली गुमराही में कौन पड़ा हुआ है।" (अल-मुल्क: 28-29)

यह जन्नत में प्रवेश को सुनिश्चित करता है, पवित्र प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ ٱلْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَـٰرُ خَـٰلِدِينَ فِيهَا ۚ نِعْمَ أَجْرُ ٱلْعَـٰمِلِينَ ۞ ٱلَّذِينَ صَبَرُوا۟ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ﴾

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें हम जन्नत की ऊपरी मंज़िल के कक्षों में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उसमें सदैव रहेंगे। क्या ही अच्छा प्रतिदान है कर्म करनेवालों का! जिन्होंने धैर्य से काम लिया और जो अपने रब पर निर्भर होते हैं। (अल-अंकबूत: 58-59)

बल्कि निष्ठा के साथ अल्लाह पर निर्भर लोग अपने प्रभु की जन्नत में बिना हिसाब किताब के प्रवेश करेंगे, जैसा कि उनके पैग़ंबर ने अपने इस कथन में उल्लेख किया है: "ये ऐसे लोग होंगे जो कभी झाड़ फूंक नहीं करवाते, आग से दाग़ नहीं लगाते, अपशगुन नहीं लेते और केवल अपने प्रभु पर ही भरोसा रखते हैं। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

प्यारे नबी ﷺ ने श्री अब्दुल्लाह बिन अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को अल्लाह पर भरोसा रखने की वसिय्यत की जबकि अभी वह बच्चे ही थे; ताकि उनके मन में प्रारंभिक जीवन से ही ईमानी सिद्धांत जड़ पकड़ ले, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "हे बालक! मैं तुम्हें कुछ शब्द सिखाता हूँ, अल्लाह (के प्रावधान) की रक्षा करो अल्लाह तुम्हारी रक्षा करेगा, अल्लाह (के प्रावधान) की रक्षा करो तुम उसे अपने समक्ष पाओगे, जब तुम्हें माँगना हो तो अल्लाह से मांगो, जब तुम्हें सहायता की आवश्यकता हो तो अल्लाह से सहायता माँगो।" (सुनन तिर्मिज़ी)

श्री इब्नुल-क़य्यिम (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "तवक्कुल (अल्लाह पर निर्भरता) ईमान और एहसान की सभी श्रेणियों और इस्लाम के सभी कार्यों की नींव है, इन सब के बीच इसका स्थान वही है जो एक शरीर में सिर का है।"

तवक्कुल (निर्भरता) में मन की शांति, स्थिति की स्थिरता और बुरे लोगों की साजिशों का प्रतिकार होता है, यह सबसे मजबूत साधनों में से एक है जिसके द्वारा एक बंदा लोगों के असहनीय कष्ट और अन्याय को दूर कर सकता है और इसी के द्वारा बंदा दूसरे लोगों के हाथों में मौजूद चीज़ों पर राल टपकाने से बच जाता है। इमाम अहमद से निर्भरता के बारे में पूछा गया

तो उन्होंने कहा: "यह लोगों से मायूस हो जाना है और उनकी ओर ललचाई नज़रों से न देखना है।"

अल्लाह को छोड़कर किसी अन्य पर निर्भरता आत्म अपमान और हीनता है, एक प्राणी का दूसरे प्राणी से माँगना एक मोहताज का दूसरे मोहताज से मांगना है, प्यारे नबी ﷺ फ़रमाते हैं: "जान लो कि अगर समस्त लोग तुम्हें किसी चीज़ का लाभ पहुँचाने पर एकत्रित हो जाएं तो वे तुम्हें उतना ही लाभ पहुँचा सकते हैं जितना अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है, इसी तरह समस्त लोग अगर तुम्हें किसी चीज़ द्वारा नुकसान पहुँचाने पर एकत्रित हो जाएं तो वे उतना ही नुकसान पहुँचा सकते हैं जितना अल्लाह ने तुम्हारे प्रति लिख दिया है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

जब हृदय अल्लाह को छोड़कर किसी और की तरफ आकर्षित हो जाता है; तो अल्लाह उसे उसी के हवाले कर देता है, फिर वह विफल रह जाता है, प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "जो किसी चीज़ का सहारा लेता है; उसे उसी के हवाले कर दिया जाता है।" (सुनन तिर्मिज़ी)

इस्लाम के विद्वान श्री इब्ने-तैमियह (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "जिसने भी सृजित प्राणी से आशा लगाई या उस पर भरोसा किया; उसे निराशा ही हाथ आई, जो व्यक्ति भी ईश्वर के अलावा किसी अन्य कारण के चलते किसी वस्तु से प्यार करेगा; वह उसे हानि ही देगी, यह विचार तथा सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात होता है।" लेकिन किसी प्राणी से आशा न रखने का मतलब यह भी नहीं है कि तुम लोगों के साथ कठोरता से पेश आने लगो, उनसे सदाचार खत्म कर दो और उनके कष्ट को बर्दाश्त करना ही छोड़ दो; हाँ, अल्लाह के लिए उनके साथ भलाई करो, उनसे किसी आशा के प्रति भलाई मत करो, जैसे तुम उन से नहीं डरते वैसे ही उन से आशा भी मत रखो, लोगों के प्रति अल्लाह से आशा रखो, और अल्लाह के प्रति लोगों से आशा मत रखो।

हे मुसलिमो!

जीविका सृष्टिकर्ता के हाथ में है, अत: उसमें से जो तुम्हारा था वह तुम्हारी निर्बलता के बावजूद तुम्हारे पास आया, जो किसी और का था तुम अपनी शक्ति से भी उसे प्राप्त नहीं कर सके, अल्लाह की जीविका को किसी लालची का लालच तुम्हारी ओर नहीं ला सकता, और न किसी नफरती की नफरत उसे तुमसे दूर हटा सकती है।

प्रत्येक की जीविका बँटी हुई है -चाहे नेक हो या पापी, मोमिन हो या काफ़िर-, महान अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزۡقُهَا﴾

धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह पर है। (हूद: 6)

बहुत से जानवरों की कमज़ोरी और भरण-पोषण के प्रयास में उनकी असमर्थता के बावजूद, जीविका उन तक पहुँचा दी जाती है, महान प्रभु ने कहा:

﴿وَكَأَيِّن مِّن دَآبَّةٍ لَّا تَحۡمِلُ رِزۡقَهَا ٱللَّهُ يَرۡزُقُهَا وَإِيَّاكُمۡ﴾

कितने ही चलनेवाले जीवधारी हैं, जो अपनी रोज़ी उठाए नहीं फिरते। अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी! (अल-अंकबूत: 60)

कभी अल्लाह कमाई या कमाई के बिना भी जीविका प्रदान कर देता है, लेकिन विडंबना यह है कि लोग अल्लाह पर कम ही निर्भर होते हैं और जी जान से प्रत्यक्ष साधनों के साथ खड़े रहते हैं। अगर वे दिल से अल्लाह पर निर्भरता की प्राप्ति कर लेते; तो अल्लाह थोड़े से साधन के साथ भी उन तक उनकी आजीविका पहुँचा देता, जैसे पक्षियों को सुबह शाम बाहर घूमने-फिरने मात्र से ही भरण-पोषण प्रदान करता है –यह भी एक प्रकार की खोज और प्रयास है। लेकिन यह एक आसान प्रयास है-, प्यारे नबी ﷺ ने कहा: "यदि तुमने अल्लाह पर उसी तरह भरोसा किया होता जिसका वह हकदार है; तो वह तुम्हें उसी प्रकार जीविका प्रदान करता जैसे वह पक्षियों को जीविका देता है, वे सुबह को खाली पेट निकलते हैं और शाम को भरपेट वापस आते हैं।" (मुसनद अहमद)

अल्लाह ने जिस जीविका की गारंटी तुम्हें दे राखी है, उसके बारे में चिंता करके अपना समय बर्बाद मत करो, जब तक आयु शेष रहेगी जीविका भी आती रहेगी। श्री हसन बसरी (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "जब मुझे पता चला कि मेरी जीविका कोई दूसरा नहीं खा सकता; तो मेरे मन को संतुष्टि मिल गई।"

हे मुसलिमो!

अल्लाह ने मामलों की नियति के लिए समय सीमा तय की है और उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए साधन निर्धारित किए हैं, कभी ऐसा भी होता है कि संसार के मामले और उसकी सजावट एक आलसी व्यक्ति के हाथ में आ जाती है, और मेहनती व्यक्ति वंचित रह जाता है, असमर्थ पा जाता है और कर्मठ चूक जाता है। साधनों की ओर आकर्षण तौहीद (एकेश्वरवाद) में कमी है, साधनों के माध्यम को मिटा देना बुद्धि में कमी है और जिन साधनों का आदेश दिया गया है उनसे मुँह मोड़ना धर्म का अपमान है, बंदे का दिल अल्लाह पर निर्भर होना चाहिए न कि साधनों पर, हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ निरभरों में सबसे उत्तम हैं, आपने साधनों की उपेक्षा नहीं की, आप उहुद के दिन दो ढालों के बीच प्रकट हुए, आपने हिजरत (प्रवास) के मार्ग पर

मार्गदर्शन के लिए एक मार्गदर्शक की सहयता ली और अहज़ाब के युद्ध में खाई खोदी।

निर्भरता का अर्थ है: साधनों को अपनाना, दिल से साधन सृजित करने वाले (प्रभु) पर निर्भर होना और विश्वास करना कि सभी साधन उसके हाथ में हैं, यदि वह चाहे तो उनके प्रभाव को खत्म भी कर सकता है, चाहे तो उनके प्रभाव को उलटा भी कर सकता है और यदि वह चाहे तो साधनों के सामने ऐसी बाधाएं और रुकावटें भी स्थापित कर सकता है जो उन्हें प्रभवहीन करदें, तौहीद और निर्भरता वाला व्यक्ति साधनों से संतुष्ट नहीं होता, न उनसे आशा रखता है, और उन्हें बेकार भी नहीं छोड़ता है और नकारता भी नहीं है, बल्कि वह साधनों के निर्माता व आयोजक; पवित्र प्रभु की ओर देखते हुए उनके साथ खड़ा होता है।

जब निर्भरता मज़बूत होती है और आशा बड़ी होती है, तो अल्लाह राहत की अनुमति दे देता है, प्रभु के परम मित्र पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने अल्लाह पर निर्भरता और उसके आज्ञापालन में अपनी पत्नी हाजर और उनके नन्हे दूध पीते शिशु; पैग़ंबर इस्माईल को घाटी में छोड़ दिया, जहाँ न तो कोई आभासी था न कोई साथी, न आसपास कोई फसल थी, न कोई थन वाला पशु, सो अल्लाह ने उन्हें अपनी देखभाल से घेर लिया, छोटा लड़का पैग़ंबर बन गया, अल्लाह ने उन्हे सहनशीलता, धैर्य और अपने वादे के प्रति वफ़ादारी, नमाज़ की पाबंदी और उसका आदेश देने के सारे गुणों का वर्णन किया, धन्य जल ज़मज़म पैग़ंबर इब्राहीम की इसी निर्भरता के फलों में से एक है।

जब इसराईल की सन्तान में क्लेश बहुत बढ़ गया और फिरऔन ने अपने सिपाहियों समेत उनका पीछा कर उन्हें घेर लिया एवं उनके सामने समुद्र आ गया:

﴿قَالَ أَصۡحَٰبُ مُوسَىٰٓ إِنَّا لَمُدۡرَكُونَ﴾

तो पैग़ंबर मूसा के साथियों ने कहा, "हम तो पकड़े गए!" (अल-शुअरा: 61)

तब अल्लाह की मदद पर भरोसा करने वाले अल्लाह के पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿كَلَّآۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهۡدِينِ﴾

"कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा।" (अल-शुअरा: 62)

तब अल्लाह ने उन्हें समुद्र पर मारने की आज्ञा दी, इस प्रकार समुद्र सूखी सड़क बन गया और प्रत्येक भाग एक बड़े पहाड़ के समान हो गया।

पैग़ंबर यूनुस (उन पर शांति हो) को समुद्र की गहरइयों और अंधेरों में एक मछली ने निगल लिया था, अतः वो अपने स्वामी की ओर पलटे और अपनी ज़रूरत उसके सामने रख दी:

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ।" (अल-अंबिया: 87)

फिर वह बीमार अवस्था में खुले मैदान में फेंक दिए गए, और कपड़ों के बिना भी अकेले में नष्ट नहीं हुए।

पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) की माँ ने अल्लाह पर भरोसा और उसका आज्ञापालन करते हुए अपने बेटे मूसा को नदी में फेंक दिया, तो वो प्रभु के निकटवर्ती और दृढ़ निश्चयी पैग़ंबरों में से एक हो गए।

पैग़ंबर याक़ूब (उनपर शांति हो) को बताया गया कि तुम्हारे बेटे को एक भेड़िया खा गया है, तो उन्होंने अपना मामला अल्लाह को सौंप दिया और उससे एकांत में प्राथना की, तो अल्लाह ने दुख और अलगाव की लंबी अवधि के बाद उनके बेटे को भाई सहित उनके पास लौटा दिया।

जब स्थिति संकीर्ण हो गई, दायरा सीमित हो गया और श्रीमती मरयम (उनपर शांति हो) की बोलती बंद हो गई; तो महानता और महिमा वाले प्रभु पर विश्वास बढ़ गया, प्रभु के प्रति शुद्धता और उस पर भरोसे के अलावा कुछ नहीं बचा, तो श्रीमती मरयम ने नवजात शिशु की ओर इशारा किया कि इससे बात कर लो:

﴿قَالُواْ كَيۡفَ نُكَلِّمُ مَن كَانَ فِي ٱلۡمَهۡدِ صَبِيّٗا﴾

तो वे कहने लगे: हम उससे कैसे बात करें जो अभी पालने में पड़ा हुआ एक बच्चा है? (मरयम: 29)

उसी समय अल्लाह ने शिशु को बोलने की क्षमता दे दी:

﴿قَالَ إِنِّي عَبۡدُ ٱللَّهِ ءَاتَىٰنِيَ ٱلۡكِتَٰبَ وَجَعَلَنِي نَبِيّٗا﴾

उसने कहा: मैं अल्लाह का बंदा हूँ। उसने मुझे किताब दी है और मुझे नबी बनाया है। (मरयम: 30)

हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ अपने साथी के साथ एक बंजर पहाड़ में, एक सुनसान डरावनी गुफा में अपनी क़ौम से छिपे हुए थे, साथी का डर अंत को पहुँचा और कहा: "हे ईश्वर के दूत! यदि उनमें से कोई अपने पैरों की ओर देख ले; तो हमें अपने पैरों के नीचे ही देख लेगा, तो प्यारे नबी ﷺ ने -अपने प्रभु पर पूर्ण भरोसा करते हुए- फ़रमाया: "हे अबू बक्र! उन दो के बारे में क्या सोचते हो, जिनका तीसरा अल्लाह है?" (सही बुखारी व सही मुस्लिम) इसलिए अल्लाह ने आपको समर्थन और सहायता भेजी और अदृश्य सैनिक प्रदान किए, अत: भीड़ शांत हो गई, सुरक्षा प्राप्त हुई, हिजरत (प्रवास) पूरी हो गई और संदेश गतिवान हो गया।

यदि दिन तुम्हारे लिए कठिन हो जाएं, क्लेश के घेरे तुम्हें घेर लें, तो अल्लाह से ही आशा करो, प्रार्थना के हाथ उठाओ और अपने आप को सृष्टिकर्ता के आगे डाल दो, अपनी आशा उसी से जोड़ दो और मामले को परम दयालु के हवाले कर दो, प्राणियों के साथ संबंध तोड़ कर महान प्रभु को पुकारो, प्रार्थना स्वीकृति के समय की तलाश में रहो -जैसे सजदा और रात का अंतिम पहर-। यदि निर्भरता और आशा मजबूत है, दिल प्रार्थना में एकजुट है तो दुआ अस्वीकार नहीं होगी:

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

या वह जो व्यग्र की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है? (अल-नम्ल: 62)

अत: मामला अपने स्वामी प्रभु को सौंप दो।

अल्लाह शक्तिशाली है, जो भी उससे सुरक्षा चाहता है उसे अपमानित नहीं करता, जो भी उसकी शरण लेता है उसे नष्ट नहीं करता, संकट जब अपनी सीमा पर होता है वहीं संकट से राहत होती है, आसानी कठिनाई के साथ जुड़ी हुई है, तुम समृद्धि में अपने प्रभु को जानो वह कठिनाई में तुम्हें पहचानेगा।

﴿حَسْبُنَا ٱللَّهُ وَنِعْمَ ٱلْوَكِيلُ﴾

अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त है, वह सर्वोत्तम कार्यसाधक है।

इस कथन को प्रभु के दो परम मित्रों (पैग़ंबर इब्राहीम और पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ) ने विपरीत परिस्थिति में कहा था।

जो कोई किसी चीज़ की प्राप्ति के विषय में अल्लाह पर निर्भरता में सच्चा होगा, वह

अवश्य उसे प्राप्त कर लेगा, जो भी अपने मामले उसे सौंप देगा; वह उसकी चिंताओं के लिए पर्याप्त हो जाएगा, जो उस पर पूर्ण रूप से निर्भर होगा; वह उसे किसी और के हवाले नहीं करेगा, बल्कि स्वयं उसकी देखभाल करेगा:

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ﴾

जो अल्लाह पर निर्भर होगा तो अल्लाह उसके लिए काफ़ी होगा। (अल-तलाक़: 3)

अपने प्रभु के प्रति तुम्हारा अच्छा विचार और उस पर आशा के अनुपात में ही उस पर तुम्हारी निर्भरता होगी; इसलिए अपनी शिकायतों का केंद्र केवल प्रभु को बनाओ, श्री फ़ुज़ैल (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "अल्लाह की क़सम! यदि तुम समस्त सृष्टि से निराश हो जाओ, यहाँ तक कि तुम्हें उनसे किसी भी चीज़ की चाहत न रहे; तो तुम्हारा स्वामी प्रभु तुम्हारी सारी चाहतें पूरी कर देगा।"

पवित्र प्रभु सक्षम है, एक कण भी उसकी अनुमति के बिना नहीं हिलता, कोई घटना उसकी इच्छा के बिना नहीं घटती और एक पत्ता भी उसके ज्ञान के बिना नहीं गिरता:

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ * ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ * وَتَقَلُّبَكَ فِى ٱلسَّٰجِدِينَ﴾

और उस प्रभुत्वशाली और दयावान पर भरोसा रखो, जो तुम्हें देख रहा होता है, जब तुम खड़े होते हो, और सजदा करनेवालों के बीच तुम्हारी चलत-फिरत को भी वह देखता है। (अल--शुअरा: 217-219)

श्री इब्राहीम खव्वास (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "इस आयत के बाद बंदे के लिए उचित नहीं है कि वह अल्लाह को छोड़कर किसी और की शरण प्राप्त करे।"

जो व्यक्ति अल्लाह के अलावा किसी और से जुड़ता है, उसके ज्ञान, बुद्धि, उपचार और ताबीज पर ध्यान केंद्रित करता है या उसकी शक्ति और क्षमता पर निर्भर होता है; तो अल्लाह उसे उसी के हवाले कर देता है और उससे अपनी सहायता उठा लेता है। तैसीर अल-अज़ीज़ अल-हमीद पुस्तक में आया है: "यह ग्रंथ के प्रमाणों और अनुभवों के माध्यम से ज्ञात होता है।"

सबसे बढ़कर लाभ वाली कमाई: अल्लाह की पर्याप्तता पर भरोसा और उस के प्रति अच्छा विचार है, जो कोई सोचता है कि ईश्वर का वरदान उसकी अवज्ञा और पाप करके भी वैसे ही हासिल किया जा सकता है; जैसे उसकी आज्ञा का पालन और उसकी वंदना करके हासिल होता है, समझता है कि यदि वह अल्लाह के लिए कुछ छोड़ देगा; तो अल्लाह उसे उससे बेहतर मुआवजा नहीं देगा, उसका ख्याल है कि जो व्यक्ति अल्लाह के लिए कुछ करता

है; अल्लाह उसे उससे उत्तम चीज़ प्रदान नहीं करेगा, या विचार रखता है कि यदि वह अल्लाह पर अपनी निर्भरता के प्रति सच्चा होगा; तो अल्लाह उसे निराश कर देगा और उसकी माँग पूरी नहीं करेगा; तो ऐसा व्यक्ति अल्लाह के बारे में बुरा विचार रखता है, इस कुविचार से केवल वही सुरक्षित है; जो अल्लाह को जानता है, उसके नामों और गुणों को पहचानता है और उसकी बुद्धि और प्रशंसा के कारणों से अच्छी तरह आवगत है।

श्री इब्नुल-क़य्यिम (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "अधिकतर लोग बल्कि ईश्वर की इच्छा अनुसार कुछ को छोड़ कर, समस्त लोग अल्लाह के बारे में असत्य और बुरा सोचते हैं। आदम की अधिकांश संतान मानती है कि वे ईश्वर की चाहत से कहीं अधिक के हकदार हैं, जो भी अपने मन के भीतर खोज करेगा और छिपे रहस्यों के ज्ञान में प्रवेश करेगा वह इस विचार को वहाँ छुपा देख लेगा। बुद्धिमान और स्वयं के प्रति शुभचिंतक व्यक्ति को इसका ध्यान रखना चाहिए, उसे अल्लाह से तौबा करनी चाहिए और अपने प्रभु के प्रति अपने बुरे विचारों के लिए हर समय क्षमा माँगनी चाहिए और अगर बुरा विचार रखना ही है तो संव्य के प्रति बुरा विचार रखना चाहिए अल्लाह के प्रति नहीं।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण मैं आता हूँ।

﴿وَٱذۡكُرِ ٱسۡمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلۡ إِلَيۡهِ تَبۡتِيلٗا ۞
رَّبُّ ٱلۡمَشۡرِقِ وَٱلۡمَغۡرِبِ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَٱتَّخِذۡهُ وَكِيلٗا﴾

और अपने रब के नाम का जाप किया करो और सबसे कटकर उसी के हो रहो। वह पूर्व और पश्चिम का रब है, उसके सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, अतः तुम उसी को अपना कार्यसाधक बना लो। (अल-मुज़म्मिल: 8-9)

अल्लाह मुझे और आप को पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की विशेष सहायता और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अम्मा बा'द, हे मुस्लिमो!

बंदे की निर्भरता तब तक वैध नहीं है जब तक उसकी तौहीद (एकेश्वरवाद) वैध नहीं है, उसके एकेश्वरवाद की शुद्धता के समान ही उसकी निर्भरता की वैधता है। जब भी बंदा अल्लाह के अलावा किसी अन्य की ओर मुड़ता है, तो यह कार्य उसके दिल की शाखाओं में से एक शाखा पर अपना कब्ज़ा जमा लेता है, अतः उस शाखा के नष्ट होने की मात्रा अनुसार उसकी निर्भरता भी काम होती जाती है।

जिसे कोी सख्त ज़रूरत पेश आती है और वह अपनी ज़रूरत सृष्टि के पास ले जाता है; तो उसकी ज़रूरत पूरी नहीं होगी। जो सबसे शक्तिशाली बनने का सुख पाना चाहता है; उसे अल्लाह पर निर्भर हो जाना चाहिए और जो सबसे धनी बनने का सुख पाना चाहता है; तो उसे अपने हाथों की चीज़ों से अधिक भरोसा अल्लाह के हाथ कि चीज़ों पर होना चाहिए।

संतोष और निर्भरता ने नियति को घेर रखा है, निर्भरता उसके घटित होने से पहले है, जबकि संतोष उसके घट जाने के बाद है, संतोष निर्भरता का फल है और निर्भरता की आत्मा अपने समस्त मामलों को अल्लाह के आगे डाल देना है, श्री दाउद बिन सुलैमान (अल्लाह उनपर दया करे) कहते हैं: "मोमिन की धर्मपरायणता तीन चीजों से प्रमाणित होती है: जो नहीं मिला है उसके प्रति अल्लाह पर उत्तम निर्भरता, जो मिल गया है उस पर संतुष्टि और जो हाथ से निकल गया उस पर अच्छा धैर्य।"

बंदा अल्लाह को जितना अधिक जानता होगा, अल्लाह पर उसकी निर्भरता भी उतनी ही मज़बूत होगी, और निर्भरता की मज़बूती और कमज़ोरी; ईमान की मज़बूती और कमज़ोरी पर निर्भर करती है।

जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करता है, उसे राहत प्राप्ति की जल्दी नहीं मचानी चाहिए,

क्योंकि अल्लाह ने खुद पर निर्भर व्यक्ति के लिए अपनी पर्याप्तता का उल्लेख किया है, हो सकता है इससे भरोसा के समय शीघ्र पर्याप्तता का भ्रम होता हो, लेकिन जान लेना चाहिए कि अल्लाह ने हर चीज के लिए एक नियति और समय निर्धारित कर रखा है, इसलिए निर्भर व्यक्ति को जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए और यह नहीं कहना चाहिए कि मैंने भरोसा रखा और प्रार्थना की, लेकिन मैंने कुछ भी नहीं देखा। ईश्वर अपने मामले को पूरा करने वाला है, उसने हर चीज़ का एक समय निर्धारित कर रखा है।

अल्लाह ही चुनने और व्यवस्था करने में अद्वितीय है, अल्लाह के द्वारा अपने बंदे का प्रबंधन बंदे द्वारा स्वयं के प्रबंधन से बेहतर है, वह बंदे की तुलना में उसके प्रति अधिक दयालु है।

तो जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें कुछ ऐसा करने की आज्ञा दी है जिसकी शुरुआत उसने स्वयं से की है, अर्थात: पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ पर दरूद व सलाम भेजना।

अल्लाह के प्रति अच्छा विचार[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं। वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे वह भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके सेवक और दूत हैं। सलाम व शांति हो आप पर, आप के परिवार और आप के पवित्र साथियों पर।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे डरना चाहिए और इस्लाम के सबसे मज़बूत कड़े को थामे रहो।

हे मुस्लिमो!

तौहीद भक्तों पर अल्लाह का अधिकार है, इसी के साथ अल्लाह ने अपने दूत भेजे और अपनी पुस्तकें उतारीं। तौहीद की वास्तविकता है: अल्लाह को इबादत (पूजा/वंदना) के साथ एक मानना। हर ऐसे कथन और कर्म का नाम इबादत है जिस से अल्लाह प्रेम करता और प्रसन्न होता है, चाहे वो कथन और कर्म बाहरी हो या आंतरिक; क्योंकि मन की भी एक विशेष भक्ति होती है, उसकी भक्ति अंगों की भक्ति से अधिक महत्वपूर्ण, सर्वाधिक और स्थायी होती है, अत: ईमान में शामिल होने के लिहाज़ से, मन के कर्म अंगों के कर्मों से अधिक श्रेष्ठता रखते हैं।

जो ईमान; ज्ञान और गुणवत्ता के रूप में दिल के अंदर स्थापित होता है वही अभीष्ट मूल है, प्रत्यक्ष क्रियाएं उसकी पूरक और पालनकर्ता होती हैं, वे (क्रियाएं) दिल के कर्म की मध्यस्थता के बिना सटीक और स्वीकार्य नहीं हैं, क्योंकि दिल के कर्म इबादत की आत्मा और मूल होते हैं, यदि प्रत्यक्ष कर्म उससे रहित हैं, तो वे बिना आत्मा के मृत शरीर की तरह हैं। दिल के सुधार से पूरे शरीर का सुधार होता है, नबी ﷺ ने कहा: "शरीर में एक मांस का टुकड़ा है, यदि वह ठीक है; तो पूरा शरीर ठीक रहता है और यदि यह खराब हो जाता है; तो पूरा शरीर

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 18/04/1439 हिजरी को दिया गया।

खराब हो जाता है। और वह टुकड़ा दिल है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

भक्तों की एक दूसरे पर वरीयता, उनके दिल में जो कुछ है उसके आधार पर ही होती है, उसी के आधार पर कर्मों की वरीयता होती है, वही अपने भक्तों के लिए प्रभु के ध्यान का केंद्र हैं, नबी ﷺ ने कहा: "अल्लाह आपके शरीर और आपके रूप को नहीं देखता, लेकिन वह आपके दिल और आपके कार्यों को देखता है।" (सही मुस्लिम)

दिल के सबसे महत्वपूर्ण कर्मों में से एक: अल्लाह के बारे में अच्छा विचार रखना है; यह इस्लाम के दायित्वों तथा तौहीद के अधिकारों और कर्तव्यों में से एक है। इसका व्यापक अर्थ है: हर वह विचार जो अल्लाह की हस्ती, उसके नामों और गुणों की पूर्णता के अनुरूप हो। यह अल्लाह को जानने और पहचानने की एक शाखा है, यह अल्लाह की दया, महिमा, परोपकारिता, क्षमता, ज्ञान और उसके अच्छे चुनाव की प्रचुरता को जानने पर आधारित है; क्यूंकि जब इन सबकी पूरी जानकारी होती है, तभी आवश्यक रूप से बंदे का अपने अल्लाह के बारे में अच्छा विचार बनता है, और कभी यह अच्छा विचार अल्लाह के कुछ नामों और गुणों (के प्रभाव) को देखने से भी उत्पन्न होता है।

अल्लाह के नामों और गुणों के अर्थ की वास्तविकता जिसके दिल में स्थापित हो जाती है; उसे अल्लाह के प्रत्येक नाम और गुण के हिसाब से अल्लाह के प्रति अच्छा विचार हासिल हो जाता है; क्योंकि (अल्लाह की) प्रत्येक विशेषता की एक विशेष भक्ति होती है और उसी से संबंधित एक अच्छा विचार भी।

अल्लाह की पूर्णता, महिमा, सुंदरता, और अपनी रचना पर उसकी उदारता; उस शक्तिशाली हस्ती के बारे में अच्छा विचार रखने पर मजबूर करते हैं, इसी प्रकार अल्लाह ने अपने भक्तों को आज्ञा दी है:

﴿وَأَحۡسِنُوٓاْۛ إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلۡمُحۡسِنِينَ﴾

और अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ। निस्संदेह अल्लाह अच्छे से अच्छा काम करनेवालों को पसंद करता है। (अल-बक़रह: 195)

श्री सुफ़यान सौरी (उन पर अल्लाह की दया हो) ने कहा: "अल्लाह के बारे में अच्छा गुमान रखा करो।"

इस के महान स्थान के कारण ही नबी ﷺ ने मृत्यु से पहले इस पर बहुत ज़ोर दिया था, श्री जाबिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि: मैंने मृत्यु से तीन दिन पहले अल्लाह के दूत ﷺ

को फ़रमाते हुए सुना: "तुम में से प्रत्येक व्यक्ति को इस दशा में मौत आनी चाहिए कि वह सर्वशक्तिमान अल्लाह के बारे में अच्छा गुमान रखता हो।" (सही मुस्लिम)

अल्लाह ने अपने विनम्रतापूर्वक अधीन रहने वाले बंदों की अपने प्रति अच्छा विचार रखने पर प्रशंसा की है, उसने उन के लिए इबादत को आसान और सहायक बनाकर शीघ्र शुभ सन्देश का प्रबंध कर दिया है, महामहिम अल्लाह ने कहा:

﴿وَٱسۡتَعِينُواْ بِٱلصَّبۡرِ وَٱلصَّلَوٰةِۚ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى ٱلۡخَٰشِعِينَ ۞ ٱلَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَٰقُواْ رَبِّهِمۡ وَأَنَّهُمۡ إِلَيۡهِ رَٰجِعُونَ﴾

धैर्य और नमाज़ से मदद लो, और निस्संदेह यह (नमाज़) बहुत कठिन है, किन्तु उन लोगों के लिए कठिन नहीं है जो विनम्र होते हैं; जो समझते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की ओर पलटकर जाना है। (अल-बक़रह: 45-46)

चूँकि रसूलों (उन पर शांति हो) ने ईश्वर के प्रति अपने ज्ञान में उच्च स्थान प्राप्त कर रखा था; इसलिए उन्होंने रब के प्रति अच्छे विचार के कारण अपने मामलों को भी उसी के हवाले कर दिया था। अत: पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने श्रीमती हाजर और उनके पुत्र इस्माईल (उन पर शांति हो) को काबे के पास छोड़ दिया था, उस समय मक्का में कोई नहीं था, वहाँ पानी भी नहीं था। इब्राहीम (उन पर शांति हो) जब जाने के लिए मुड़े तो हाजर भी उनके पीछे हो लीं और कहा: "हे इब्राहीम! आप हमें इस घाटी में छोड़कर कहाँ जा रहे हैं जहाँ कोई मनुष्य या कुछ भी नहीं है? वह बार बार कहती रहीं, इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने उनकी एक न सुनी, तब हाजर ने कहा: क्या अल्लाह ने आपको ऐसा करने की आज्ञा दी है? इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने कहा: हाँ, तो हाजर ने कहा: फिर वह हमें नष्ट नहीं होने देगा।" (सही बुख़ारी) तो उसके बाद जो हुआ वो ईश्वर के प्रति उनके अच्छे विचार का परिणाम था, चुनांचे वहाँ एक धन्य पानी का झरना फूट पड़ा, काबा आबाद हुआ, हाजर की स्मृति अमर हो गई, इस्माईल (उन पर शांति हो) नबी बने और उन्ही के वंशज में अंतिम नबी और दूतों के इमाम मुहम्मद ﷺ आए।

पैग़ंबर याक़ूब (उन पर शांति हो) ने अपने दो बेटों को खो दिया, लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया और अपने मामले को ये कहते हुए अल्लाह के हवाले कर दिया:

﴿إِنَّمَآ أَشۡكُواْ بَثِّي وَحُزۡنِيٓ إِلَى ٱللَّهِ﴾

मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूँ। (यूसुफ़: 86)

इस दौरान उनका मन अल्लाह के प्रति अच्छे विचार से भरा रहा, (उनका विचार था) कि अल्लाह ही सबसे उत्तम रक्षक है, उन्होंने कहा था:

﴿عَسَى ٱللَّهُ أَن يَأۡتِيَنِي بِهِمۡ جَمِيعًاۚ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلۡعَلِيمُ ٱلۡحَكِيمُ﴾

बहुत संभव है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। वह तो सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (यूसुफ़: 83)

उन्होंने अपने बेटों को भी इसी का आदेश दिया और कहा :

﴿يَٰبَنِيَّ ٱذۡهَبُواْ فَتَحَسَّسُواْ مِن يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَاْيۡـَٔسُواْ مِن رَّوۡحِ ٱللَّهِۖ إِنَّهُۥ لَا يَاْيۡـَٔسُ مِن رَّوۡحِ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡقَوۡمُ ٱلۡكَٰفِرُونَ﴾

ऐ मेरे बेटो! जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ और अल्लाह की सदयता से निराश न हो। अल्लाह की सदयता से तो केवल कुफ़्र करने वाले ही निराश होते हैं। (यूसुफ़: 83)

बनी-इस्राईल को असहनीय पीड़ा हुई, मगर संकट की विषमता के बावजूद अल्लाह के प्रति उनका अच्छा विश्वास ही आशा की किरन और निकलने का रास्ता था, सो पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) ने अपनी क़ौम से कहा:

﴿ٱسۡتَعِينُواْ بِٱللَّهِ وَٱصۡبِرُواْۖ إِنَّ ٱلۡأَرۡضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَن يَشَآءُ مِنۡ عِبَادِهِۦۖ وَٱلۡعَٰقِبَةُ لِلۡمُتَّقِينَ﴾

अल्लाह से सम्बद्ध होकर सहायता प्राप्त करो और धैर्य से काम लो। धरती अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है, उसका वारिस बना देता है। और अंतिम परिणाम तो डर रखनेवालों ही के लिए है। (अल-आराफ़: 128)

पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) और उनकी क़ौम के लिए स्थिति गंभीर हो गई, क्यूंकि उनके सामने समुद्र और पीछे फिरऔन और उसकी सेना थी, ऐसे समय

﴿قَالَ أَصۡحَٰبُ مُوسَىٰٓ إِنَّا لَمُدۡرَكُونَ﴾

मूसा के साथियों ने कहा, "हम तो पकड़े गए!" (अल-शुअरा: 61)

तो (ऐसी स्थिति में भी) अल्लाह से वार्तालाप करने वाले नबी का उत्तर अल्लाह के प्रति उनके विशाल विश्वास और सर्वशक्तिमान रब के बारे में उनकी अच्छी राय की गवाही देता है:

﴿قَالَ كَلَّآۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهۡدِينِ﴾

उसने कहा: कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा। (अल-शुआरा: 61)

फिर ऐसी ईश-वाणी आई जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी:

﴿فَأَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱضۡرِب بِّعَصَاكَ ٱلۡبَحۡرَۖ فَٱنفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرۡقٖ كَٱلطَّوۡدِ ٱلۡعَظِيمِ ٭ وَأَزۡلَفۡنَا ثَمَّ ٱلۡأٓخَرِينَ ٭ وَأَنجَيۡنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُۥٓ أَجۡمَعِينَ ٭ ثُمَّ أَغۡرَقۡنَا ٱلۡأٓخَرِينَ﴾

तब हमने मूसा की ओर प्रकाशना की: "अपनी लाठी सागर पर मार।" तो वह फट गया और (उसका) प्रत्येक टुकड़ा एक बड़े पहाड़ की भाँति हो गया। और हम दूसरों को भी निकट ले आए। हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे, बचा लिया। और दूसरों को डूबो दिया। (अल-शुअरा: 63-66)

अल्लाह की भक्ति और उसके प्रति अच्छे विचार के विषय में लोगों में सबसे महान: हमारे नबी मुहम्मद ﷺ हैं, आपको आपकी क़ौम ने पीड़ा दी तो आपने अल्लाह के वादे और उसके धर्म की विजय पर भरोसा किए रखा। आपसे पहाड़ के फ़रिश्ते ने कहा: यदि आप चाहें तो उन (शत्रुओं) को दो पहाड़ों के बीच पीस दूँ! तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: बल्कि मुझे आशा है कि इनकी कोख से ऐसी औलाद निकलेगी जो एक अल्लाह की इबादत करेगी और उसके साथ किसी को साझी नहीं बनाएगी। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

अत्यंत कठिन और घोर संकट में भी हमारे नबी ﷺ रब के प्रति अच्छे विचार को नहीं त्यागते थे; आप को मक्का से निकाल दिया गया, रास्ते में आपने एक गुफा में शरण ली, इसलिए अविश्वासियों ने आपका पीछा किया, जब उन्होंने आपको घेर लिया, तो आपने अपने साथी से उसी अच्छे विचार की पुष्टि करते हुए कहा :

﴿لَا تَحۡزَنۡ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَنَاۖ﴾

"शोक मत करो, निस्संदेह अल्लाह हमारे साथ है।" (अल-तौबा: 40)

अबू-बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि मैं ने गुफा में नबी ﷺ से कहा था: "अगर

उन (शत्रुओं) में से कोई अपने पाऊँ की ओर देख ले तो अपने कदमों के नीचे से हमें देख लेगा, आप ﷺ ने फ़रमाया: हे अबू बकर! उन दो मनुष्यों के प्रति तुम्हारा क्या खयाल है जिनका तीसरा अल्लाह है?" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

आप ﷺ का इतना कुछ नुकसान हुआ, पीड़ा और चौतरफा लड़ाई से आपका सामना हुआ; लेकिन इन सब बातों के बावुजूद आप इस धर्म के युगों-युगों तक क्षितिज तक पहुँचने के प्रति आश्वस्त रहे, आप कहते थे: "आवश्यक ही यह धर्म वहाँ तक पहुँचेगा जहाँ तक दिन और रात की पहुँच है, अल्लाह हर कच्चे-पक्के मकान में इस धर्म को प्रवेश दिला कर ही रहेगा, चाहे किसी सम्मानित का सम्मान हो या किसी अपमानित का अपमान।" (मुस्नद अहमद) एक देहाती ने नबी ﷺ के सामने तलवार तान दी, जबकि आप सो रहे थे, आप फ़रमाते हैं: "जब मैं बेदार हुआ तो देखा कि उसके हाथ में तलवार चमक रही है, उसने कहा: मुझसे तुम्हें कौन बचाएगा? तो मैंने तीन बार कहा: अल्लाह। फिर आप ﷺ ने उसे दंड नहीं दिया और वह व्यक्ति बैठ गया। (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) मुस्नद अहमद के वर्णन में है कि "उस देहाती के हाथ से तलवार गिर गई थी।"

नबियों के बाद, सृष्टि में अल्लाह के प्रति सबसे अधिक अच्छा विचार रखने वाले सहाबा[1] थे, अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿ٱلَّذِينَ قَالَ لَهُمُ ٱلنَّاسُ إِنَّ ٱلنَّاسَ قَدۡ جَمَعُواْ لَكُمۡ فَٱخۡشَوۡهُمۡ فَزَادَهُمۡ إِيمَٰنٗا وَقَالُواْ حَسۡبُنَا ٱللَّهُ وَنِعۡمَ ٱلۡوَكِيلُ﴾

ये वही लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा, "तुम्हारे विरुद्ध लोग इकट्ठा हो गए हैं, अतः उनसे डरो।" तो इस चीज़ ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया। और उन्होंने कहा, "हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है और वही सबसे अच्छा कार्य-साधक है।" (आल इमरान: 173)

इब्नुद-दग़िन्नह श्री अबू-बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास (अविश्वासियों के संदेश के साथ) आया कि अबू-बकर नमाज़ और क़ुरआन की तिलावत छुपाकर करें वर्ना वह उनकी शरण वापस करदें, अर्थात इब्नुद-दग़िन्नह चाहता था कि श्री अबू-बकर को रक्षा देने के प्रण से मुक्त हो जाए और क़ुरैश के अविश्वासी श्री अबू-बकर पर नियंत्रण पा लें, ऐसी स्थिति में श्री अबू-बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "मैं तुम्हारी पनाह तुम्हें वापस लौटाता हूँ और अल्लाह

(1) अंतिम नबी मुहम्मद ﷺ के साथियों को सहाबा कहा जाता है।

की शरण से संतुष्ट होता हूँ।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

श्री उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) कहते हैं: अल्लाह के दूत नबी ﷺ ने हमें दान करने का आदेश दिया, इत्तेफाक से (उस समय) मेरे पास धन भी था, तो मैंने (दिल ही दिल में) कहा: "अगर मैं किसी दिन श्री अबू-बकर से आगे निकल सकता हूँ तो आज ही उनसे आगे निकल सकता हूँ। कहते हैं कि: मैं आधा धन लेकर आ गया, कहते हैं कि: नबी ﷺ ने पूछा: अपने परिवार के लिए क्या छोड़ा है? तो मैंने कहा: इतना ही छोड़ा है (जितना लेकर आया हूँ), और श्री अबू बकर अपने पास जो कुछ था सब लेकर आ गए, जब नबी ﷺ ने उनसे पूछा कि अपने परिवार के लिए क्या छोड़ा है? तो उन्होंने जवाब दिया कि उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ आया हूँ। (सुनन अबू-दाऊद)

श्रीमती खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) दुनिया की महिलाओं की सरदार हैं, जब ईश-वाणी का आरम्भ हुआ था तो नबी ﷺ उनके पास आए और कहा: "मुझे अपनी जान खतरे में लग रही है, उस समय खदीजा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने आपसे कहा था: ऐसा कभी नहीं हो सकता, प्रसन्न रहें, अल्लाह की क़सम, अल्लाह आपको कभी अपमानित नहीं करेगा, आप तो रिश्ते निभाते हैं, सच बोलते हैं, बोझ उठाते हैं, ग़रीब की सहायता करते हैं, अतिथि का सत्कार करते और सत्य के कामों में मदद करते हैं।" (सही बुख़ारी व सहीह मुस्लिम)

उम्मत के सलफ़ (पूर्वज) भी इसी मार्ग पर चले, सुफ़यान (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "मुझे पसंद नहीं कि मेरे हिसाब (अर्थात पुण्य और पाप का बदला देने) का अधिकार मेरे माता पिता के ज़िम्मे हो, मेरा रब मेरे लिए मेरे माता पिता से भी अच्छा है"। सईद बिन जुबैर (उन पर अल्लाह की दया हो) की दुआ थी: "हे अल्लाह! मैं तुझ से तुझ पर सच्चा भरोसा और तेरे प्रति अच्छा विचार माँगता हूँ"।

जिन्नों में भी नेक बंदे हैं, अल्लाह के प्रति उनके विचार अच्छे हैं, उनको अल्लाह की ताकत और उसके अथाह ज्ञान पर विश्वास होता है। उनका कथन इस प्रकार होता है:

﴿وَأَنَّا ظَنَنَّآ أَن لَّن نُّعۡجِزَ ٱللَّهَ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَلَن نُّعۡجِزَهُۥ هَرَبًا﴾

और यह कि हमने समझ लिया कि हम न धरती में कहीं जाकर अल्लाह के क़ाबू से निकल सकते हैं, और न आकाश में कहीं भागकर उसके क़ाबू से निकल सकते हैं। (अल-जिन्न: 12)

अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे होते हैं कि अगर वे अल्लाह की क़सम खा लें तो अल्लाह

उस क़सम को पूरा कर देता है, ऐसा क़सम के कारण नहीं; बल्कि अच्छे विचार के कारण होता है। मोमिन हर समय और हर हालत में अपने रब के प्रति अच्छे विचार रखता है। और उसके सबसे अच्छे विचार अल्लाह को पुकारते और उसकी निकटता पर यक़ीन के साथ उससे बातचीत करते समय होते हैं; कि वह दुआ करने वालों की दुआ कबूल करता और आशा रखने वाले को निराश नहीं करता है।

तौबा (पश्चाताप) करने वाले व्यक्ति का अपने रब के प्रति अच्छा विचार तौबा कबूल होने के कारणों में से एक है। नबी मुहम्मद ﷺ अपने रब से वर्णित करते हुए फरमाते हैं: "मेरे भक्त ने पाप किया है, फिर उसे ज्ञान हुआ कि उसका एक प्रभु है जो पाप को क्षमा भी करता है और उस पर पकड़ भी करता है, (हे भक्त) अब तू जो चाहे कर; मैंने तुझे क्षमा कर दिया है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

कठिनाइयों और संकटों के समय अच्छे विचार खुलकर सामने आते हैं और बुरे विचार छट जाते हैं। उहुद के मैदान में स्थिरता ईमान वाले बंदों की पहचान थी, जबकि उनके अतिरिक्त लोग अल्लाह के प्रति जाहिलिय्यत वाले विचार में पड़ गए थे। अहज़ाब के युद्ध में भी अल्लाह के प्रति विचार अनेक हो गए थे, अल्लाह ने एक दल के बारे में कहा:

﴿هُنَالِكَ ٱبْتُلِىَ ٱلْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا۟ زِلْزَالًا شَدِيدًا ۞ وَإِذْ يَقُولُ ٱلْمُنَٰفِقُونَ وَٱلَّذِينَ فِى قُلُوبِهِم مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥٓ إِلَّا غُرُورًا﴾

उस समय ईमानवाले आज़माए गए और पूरी तरह हिला दिए गए। और जब कपटाचारी और वे लोग जिनके दिलों में रोग था कहने लगे: "अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वादा किया था वह तो धोखा मात्र था।" (अल-अहज़ाब: 11-12)

जहाँ तक सहाबा (रज़ियल्लाहु अनहुम) की बात है तो वे यक़ीन कर चुके थे कि ये संकट अल्लाह की ओर से एक परीक्षा है जिसके पीछे सफलता और राहत है, अल्लाह ने इन्ही के बारे में कहा है:

﴿وَلَمَّا رَءَا ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلْأَحْزَابَ قَالُوا۟ هَٰذَا مَا وَعَدَنَا ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ وَصَدَقَ ٱللَّهُ وَرَسُولُهُۥ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّآ إِيمَٰنًا وَتَسْلِيمًا﴾

और जब ईमानवालों ने सैन्य दलों को देखा तो वे पुकार उठे: "यह तो वही चीज़ है, जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था। और अल्लाह और उसके रसूल ने

सच कहा था।" इस चीज़ ने उनके ईमान और आज्ञाकारिता ही को बढ़ाया। (अल-अहज़ाब: 22)

अल्लाह के प्रति अच्छा विचार ही संकट, पीड़ा, और चिंता के समय बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता होता है; अतः वे तीन लोग जो पीछे रह गए थे उन पर आई (विकट) प्रस्थिति को केवल अल्लाह के प्रति उनके अच्छे विचार ने ही हटाया था, अल्लाह फ़रमाता है:

﴿وَعَلَى ٱلثَّلَٰثَةِ ٱلَّذِينَ خُلِّفُواْ حَتَّىٰٓ إِذَا ضَاقَتۡ عَلَيۡهِمُ ٱلۡأَرۡضُ بِمَا رَحُبَتۡ وَضَاقَتۡ عَلَيۡهِمۡ أَنفُسُهُمۡ وَظَنُّوٓاْ أَن لَّا مَلۡجَأَ مِنَ ٱللَّهِ إِلَّآ إِلَيۡهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيۡهِمۡ لِيَتُوبُوٓاْ إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ﴾

और उन तीनों पर भी अल्लाह मेहरबान हुआ जो पीछे छोड़ दिए गए थे, यहाँ तक कि जब धरती विशाल होते हुए भी उन पर तंग हो गई, उनके प्राण उन पर दूभर हो गए और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई शरण नहीं मिल सकती, मिल सकती है तो उसी के यहाँ। फिर उसने उन पर कृपा-दृष्टि की ताकि वे पलट आएँ। निस्संदेह अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, अत्यन्त दयावान है। (अल-तौबा: 118)

अल्लाह शक्तिशाली और समर्थ है, उसकी मदद अपने भक्तों और निकटवर्ती मित्रों के लिए है, उसके सिवा कोई प्रबल नहीं, उसकी मदद पर भरोसा; यक़ीन का हिस्सा है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِن يَنصُرۡكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡۖ وَإِن يَخۡذُلۡكُمۡ فَمَن ذَا ٱلَّذِي يَنصُرُكُم مِّنۢ بَعۡدِهِۦۗ﴾

यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता करे, तो कोई तुम पर प्रभावी नहीं हो सकता। और यदि वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उसके पश्चात तुम्हारी सहायता कर सके। (आल इमरान: 160)

वह पवित्र हस्ती दयालु और कृपालु है, जिसने भी उस पर विश्वास किया, अच्छे कर्म किए और उसकी दया की प्राप्ति की आशा की; उसने उसे पा लिया। नबी ﷺ फरमाते हैं: "जब अल्लाह ने सृष्टि की रचना की तो अपनी किताब में लिख दिया - वह किताब अर्श (सिंहासन) के ऊपर उसी के पास है- कि मेरी दया मेरे क्रोध से आगे है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम)

जिस का जीवन भी संकुचित हो गया है; रब के प्रति उसका अच्छा विचार बहुतायत और राहत है, नबी ﷺ ने कहा: "जो भी भुखमरी से पीड़ित है और अपनी भुखमरी को लोगों के सामने पेश करता है; उसकी भुखमरी दूर नहीं होगी, इसी प्रकार जो भुखमरी से पीड़ित है और

अपनी भुखमरी को अल्लाह के सामने पेश करता है, तो अल्लाह उसे तत्काल या देर से जीविका अवश्य प्रदान करेगा।" (सुनन तिर्मिज़ी)

ज़ुबैर बिन अव्वाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपने पुत्र अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा: "हे मेरे पुत्र! यदि तुम उधार चुकाने में असमर्थ हो जाओ तो मेरे स्वामी से सहायता माँग लो। पुत्र कहता है: अल्लाह की क़सम उनके कहने का तात्पर्य मैं नहीं समझ पाया, तो मेंने उनसे पूछा: पिता जी! आपका स्वामी कौन है? उन्होंने कहा: अल्लाह। फिर कहते हैं: अल्लाह की क़सम मैं कभी भी उनके उधार के संकट में पड़ा; तो इस तरह दुआ की : हे ज़ुबैर के स्वामी उनका उधार चुका दे, तो वह (रब) चुकाता रहा।" (सही बुख़ारी)

वह पवित्र हस्ती क्षमा करने और देने में पर्याप्त है, जो भी उसकी निस्पृहता, उदारता और क्षमा के प्रति उसके बारे में अच्छा विचार रखता है वह (अल्लाह) उसकी माँग पूरी करता है। वह पवित्र ईश्वर निकटवर्ती आकाश में हर रात तीसरे पहर उतरता है और कहता है: "है कोई मुझे पुकारने वाला कि मैं उसकी सुनूँ? है कोई मुझसे माँगने वाला कि मैं उसे दूँ? है कोई क्षमा याचना करने वाला कि मैं उसे क्षमा कर दूँ?" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) उस पवित्र हस्ती के दोनों हाथ भरे हैं, "खर्च करने से उसमें कोई कमी नहीं आती, वो दिन रात लगातार लुटाता रहता है।"

अल्लाह तौबा कबूल करने वाला है, वह अपने भक्तों की तौबा पर आनन्दित होता है, रात में अपना हाथ फैलाता है ताकि दिन का पापी पश्चाताप कर सके, और दिन में अपना हाथ बढ़ाता है ताकि रात का पापी पश्चाताप कर सके। ये उसके गुणों की पूर्णता ही है कि वो अपने दरबार में आने वालों को वापस नहीं करता। बंदे को सबसे अधिक, अपने रब के प्रति अच्छे विचार की आवश्यकता उस समय होती है जब उसकी मृत्यु निकट आ जाती है और वो दुनिया को अलविदा कहकर अपने रब की ओर जाने लगता है, नबी ﷺ कहते हैं: "आप में से प्रत्येक व्यक्ति को अपने रब के प्रति अच्छा विचार रखने की हालत में ही मौत आनी चाहिए।" (सही मुस्लिम)

इस इबादत (अर्थात: अल्लाह के प्रति अच्छे विचार) में अल्लाह की आज्ञा का पालन और भक्ति की पूर्ति होती है, बंदे के लिए वही है जो वह अपने रब के प्रति सोचता है, नबी ﷺ ने कहा: "अल्लाह सर्वशक्तिमान कहता है: मैं वैसा ही हूँ जैसा मेरा भक्त मेरे बारे में विचार रखता है, जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) श्री इब्ने-मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "एक भक्त अल्लाह के बारे में अच्छा विचार रखता है तो अल्लाह उसे उसके विचार अनुसार देता है; क्यूंकि सारी अच्छाई उसी पवित्र हस्ती के

हाथ में है।"

जब बंदे को अपने रब पर नेक विचार रखने की खूबी मिलती है; तो ईश्वर उसके लिए धर्म में अच्छाई का एक बड़ा द्वार खोल देता है, श्री इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "उस हस्ती की क़सम जिसके अलावा कोई पूजनीय नहीं है! एक ईमान वाले बंदे को अल्लाह के प्रति अच्छे विचार से बेहतर कुछ नहीं दिया गया।"

लोगों के कर्म रब के प्रति उनके विचार की मात्रा अनुसार होते हैं, सो मोमिन ईश्वर के प्रति भला सोचता है, फिर भले कर्म करता है। रही बात अविश्वासी की; तो वह ईश्वर के प्रति बुरा विचार रखता है, फिर बुरे कर्म करता है। इस इबादत में इस्लाम की सुंदरता और ईमान की पूर्णता है, ये इबादत अपने स्वामी के लिए स्वर्ग का मार्ग है, यह एक हार्दिक पूजा (दिल की इबादत) है जो अल्लाह पर विश्वास और भरोसे को जन्म देती है। श्री इब्नुल-क़य्यिम (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अपने रब के प्रति तुम्हारा जितना अच्छा विचार और अच्छी आशा होगी; तुम्हें उस पर उतना ही भरोसा होगा, इसी लिए कुछ (विद्वानों) ने भरोसे को अल्लाह के प्रति अच्छे विचार से परिभाषित किया है, सत्य तो यह है कि अल्लाह के प्रति अच्छा विचार उस पर भरोसे की ओर आमंत्रित करता है, क्यूंकि जिसके प्रति आपके विचार ही बुरे हों उस पर भरोसे की कल्पना ही नहीं की जा सकती, इसी प्रकार जिससे कोई आशा न हो उस पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।"

दिल की शांति, अल्लाह की ओर झुकाव और उसके सामने पश्चाताप करना अल्लाह के प्रति अच्छे विचार के प्रभावों में से एक है। ईमान के बाद, सीने को खोलने और विस्तार देने वाला साधन; अल्लाह पर भरोसे और उससे आशा से बढ़ कर कुछ नहीं, इसमें कुछ ऐसा है जो अपने लोगों को आशावाद की ओर आमंत्रित करता है, नबी ﷺ कहते हैं: "कोई छुआछूत नहीं, कोई अपशकुन नहीं, हाँ मुझे शुभ-शकुन (आशावाद) पसंद है।" (सही बुख़ारी व सही मुस्लिम) श्री अल-हलीमी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "अपशकुन लेना अल्लाह के प्रति बुरे विचार (का प्रतीक) है और शुभ-शकुन अल्लाह के प्रति अच्छे विचार (का प्रतीक) है।"

अल्लाह के प्रति शुभ विचार; उदारता और साहस के पथ पर, शुभ विचारक का सहायक होता है और उसे शक्ति प्रदान करता है। श्री अबू-अब्दुल्लाह साजी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: "जिसने अल्लाह पर भरोसा रखा उसने अपनी ताकत सुरक्षित कर ली, यही सबसे अच्छा प्रावधान और एक उत्कृष्ट सामान है।" श्री सलमा बिन दीनार (उन पर अल्लाह की दया हो) से कहा गया: "हे अबू हाज़िम! तुम्हारा धन क्या है? उन्होंने कहा: अल्लाह पर भरोसा और

जो कुछ लोगों के हाथों में है उससे निस्पृहता।"

जो अपने रब के प्रति अच्छा विचार रखता है उसका हृदय उदार और अल्लाह के कथन पर विश्वास रखते हुए धन के प्रति दानशील हो जाता है:

﴿وَمَآ أَنفَقۡتُم مِّن شَيۡءٖ فَهُوَ يُخۡلِفُهُۥۖ﴾

और जो कुछ भी तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। (सबा: 39)

श्री सुलैमान दारानी (उन पर अल्लाह की दया हो) कहते हैं: जो अपनी आजीविका में अल्लाह पर भरोसा रखता है; अल्लाह उसके अच्छे व्यवहार में बढ़ोतरी देता है, तत्पश्चात उसे सहनशीलता प्रदान करता है, उसका दिल खर्च करने में दानशील हो जाता है और नमाज़ में शैतानी वसवसा कम हो जाता है।"

अल्लाह के प्रति अच्छा विचार रखने वाला अल्लाह के पास मौजूद चीज़ों में आशा, उसके वचन पर भरोसे और उसके अनुग्रह की उम्मीद में भलाई के मार्ग पर दौड़ा चला जाता है, जैसा कि अल्लाह के कथन में आया है:

﴿وَمَا يَفۡعَلُواْ مِنۡ خَيۡرٖ فَلَن يُكۡفَرُوهُۗ﴾

जो नेकी भी वे करेंगे, उसकी अवमानना न होगी। (आल इमरान: 115)

अल्लाह अपने बंदों के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वे उसके विषय में सोचते हैं, प्रतिफल कर्म के प्रकार के अनुरूप मिलता है, सो जो भी अच्छा सोचता है उसके लिए अच्छा होता है और जो अच्छाई के अतिरिक्त सोचता है वो नुकसान उठाता है, नबी ﷺ ने कहा: "सर्वशक्तिमान अल्लाह ने कहा: मैं वैसा ही हूँ जैसा मेरा बंदा मेरे बारे में सोचता है, तो वह जो चाहे मेरे बारे में विचार रखे; जिसने मेरे प्रति अच्छे विचार रखे उसके लिए अच्छा है और जो मेरे बारे में बुरा विचार रखता है उसके लिए बुरा है।" (मुस्नद-अहमद)

जब बंदा अल्लाह के प्रति अच्छा विचार रखेगा तो अल्लाह उसे कभी भी निराश नहीं करेगा। क़यामत के दिन अपने रब के प्रति अच्छे विचार रखने वाले कहेंगे:

﴿هَآؤُمُ ٱقۡرَءُواْ كِتَٰبِيَهۡ ۝ إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَٰقٍ حِسَابِيَهۡ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٖ رَّاضِيَةٖ ۝ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٖ﴾

"लो पढ़ो, मेरा कर्म-पत्र! मैं तो समझता ही था कि मुझे अपना हिसाब मिलनेवाला है।" अतः वह उच्च जन्नत में सुख और आनन्दमय जीवन में होगा। (अल-हाक़्क़ा: 19-22)

फिर, हे मुस्लिमो!

अल्लाह उदार, विशाल, शक्तिशाली और महान है, वह जब कुछ चाहता है तो कहता है: "हो जा", फिर वह हो जाता है। उसने अपनी पुस्तक (क़ुरआन) के संरक्षण और अपने धर्म की मदद वादा किया है, और परिणाम को परहेज़गारों के हक में आरक्षित कर दिया है, वह जिसे चाहता है बिना हिसाब किताब प्रदान करता है और जो उसकी शरण में आता है उसके कष्ट दूर कर देता है।

अल्लाह के बारे में जिसका ज्ञान बढ़ता है; अल्लाह पर उसका विश्वास भी बढ़ जाता है, जो उसके प्रति कुविचार रखता है; वह उसके नामों और गुणों की पूर्णता से अनभिज्ञ होने के कारण ऐसा करता है, यह जाहिलिय्यत वालों की विशेषताओं में से एक है। पवित्र अल्लाह का कथन है:

﴿يَظُنُّونَ بِٱللَّهِ غَيۡرَ ٱلۡحَقِّ ظَنَّ ٱلۡجَٰهِلِيَّةِۖ﴾

वे अल्लाह के विषय में ऐसा ख़याल कर रहे थे, जो सत्य के सर्वथा प्रतिकूल, अज्ञान (काल) का ख़याल था। (आल इमरान: 154)

अल्लाह के नामों और गुणों पर ईमान के कुछ फल: उसके बारे में अच्छा विचार, उस पर भरोसे और मामलों को उसके हवाले करने की सूरत में मिलते हैं।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ

﴿فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ﴾

तो तुम समस्त संसार के प्रभु के बारे में क्या विचार रखते हो? (अल-साफ़्फ़ात: 87)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र कुरआन के प्रति आशीर्वाद दे...

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की तोफ़ीक़ और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह के प्रति अच्छे विचार की वास्तविकता कर्म की अच्छाई में प्रकट होती है, यह एहसान (कर्म की शुद्धता व सुंदरता) के साथ उपयोगी है, अपने रब के प्रति सबसे अच्छे विचार वाले लोग ही: अल्लाह के सबसे आज्ञाकारी होते हैं, जब भी भक्त अपने प्रभु के बारे में अच्छा सोचता है; उसका कर्म भी अवश्य अच्छा होता है, जिसका कर्म बुरा होता है; उसके विचार भी बुरे होते हैं। जब अच्छे विचार के साथ साथ पाप भी हो रहा हो; तो वो अल्लाह की चाल से निडरता[1] का प्रतीक है, अच्छा विचार अगर विचारक को आज्ञाकारिता पर प्रोत्साहित करे; तो यह लाभकारी होता है और जब दिल में ये (अच्छा विचार) घट जाता है; तो अंगों से पाप प्रकट होते हैं।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर दरूद और सलाम भेजने का हुक्म दिया है।।।

(1) अल्लाह की चाल से निडरता एक बहुत घातक बीमारी है, जिसके रहते इंसान सही मानों में मोमिन नहीं बन सकता।

भलाई अल्लाह के निर्णय में है[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह (ईश्वर) के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है।

और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद उसके भक्त और दूत हैं, सलाम व शांति उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर हो।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो जैसे कि डरना चाहिए, क्यूंकि धर्मपरायणता उन चीज़ों में सबसे सुंदर है जिन्हें तुम प्रकट करते हो और उन चीज़ों में सबसे श्रेष्ठ है जिन्हें तुम गुप्त रखते हो।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने स्वयं को अति सुंदर नाम दिए और अति उत्तम गुणों से युक्त किया, उसने सृष्टि की रचना की और उसे मज़बूत बनाया, उसने ब्रह्मांड की रचना की और उसे अनोखा बनाया, उसने राज किया और सशक्त राज किया, उसके ज्ञान और इच्छा के बिना, न गतिशील वस्तु गति पकड़ती है, न स्थिर चीज़ स्थिर होती है। वह निर्णय लेता है और उसके निर्णय पर कोई प्रश्न नहीं उठा सकता, वह फैसला करता है उसके फैसले को कोई फेर नहीं सकता, वह शक्तिशाली है उसे किसी कार्य से रोका नहीं जा सकता, बहुत ही महान और विशाल है, उससे उसके कर्मों के प्रति नहीं प्रश्न नहीं हो सकता, हाँ, लोगों से प्रश्न होगा। इसके बावजूद, पवित्र प्रभु अत्यंत दयालु है, सृष्टि उसकी दया के प्रभावों के बीच ही चलती फिरती व उठती बेठती है, एक माँ अपने बच्चे पर जितनी दयावान होती है उससे कहीं बढ़कर वह दयावान है, आभारी है, जो व्यक्ति उसके लिए कुछ छोड़ देता है; वह उसे और अधिक देता है, वह अपने बंदों पर मेहरबान है, वह लोगों की ओर अनुग्रह भेजता है, जबकि उन्हें इसका एहसास भी नहीं होता, रज़्ज़ाक़

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 12/04/1429 हिजरी को दिया गया।

(जीविका दाता) एवं फत्ताह (खोलने वाला) है, उसने अपने बंदों के लिए आकाश और धरती से जीविका के द्वार खोल दिए हैं:

﴿قُلۡ مَن يَرۡزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ قُلِ ٱللَّهُۗ﴾

कहो: तुम्हें आकाशों और धरती से रोज़ी कौन देता है? कह दो: अल्लाह देता है। (सबा: 24)

उदार है, देता है और खूब बढ़ा कर देता है, उसके और उसकी सृष्टि के बीच कोई भी पर्दा नहीं है।

बंदा दुर्बल और दरिद्रता से ग्रस्त है, जल्दबाज़ी का दुर्गुण रखता है, अज्ञानता से ढका हुआ है, नहीं जानता कि कल क्या होगा, न ही वह कहाँ मरेगा?

﴿وَٱللَّهُ أَخۡرَجَكُم مِّنۢ بُطُونِ أُمَّهَٰتِكُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ شَيۡـٔٗا وَجَعَلَ لَكُمُ ٱلسَّمۡعَ وَٱلۡأَبۡصَٰرَ وَٱلۡأَفۡـِٔدَةَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ﴾

अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओ के पेट से इस दशा में निकाला कि तुम कुछ जानते न थे। और उसने तुम्हें कान, आँखें और दिल दिए, ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ। (अल-नह्ल: 78)

पवित्र प्रभु अपने बंदों के प्रति दयालु और कृपालु है, उसने उन्हें आदेश दिया है कि वे अपने मामले उसे सौंप दें, उस पर निर्भर रहें और उसके बंटवारे पर संतुष्ट रहें।

अल्लाह के निर्णय और नियति पर ईमान रखना; ईमान के स्तंभों में से एक है, प्यारे नबी ﷺ अपने साथियों को विश्वास और उनके प्रति अल्लाह के चुनाव पर संतोष के साधन ऐसे ही सिखाते थे, जैसे आप उन्हें क़ुरआन की सूरह सिखाते थे, क्यूंकि परोक्ष और ईश-बुद्धि गुप्त होती है, श्री जाबिर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कहा: "अल्लाह के दूत हमें सभी मामलों में इस्तिखारा (प्रभु से अच्छे निर्णय की दुआ) सिखाते थे, ठीक वैसे ही जैसे आप हमें क़ुरआन की सूरह सिखाते थे।" (सही बुखारी) अल्लाह बंदे के लिए जो निर्णय लेता है वह उस से अधिक उत्तम है जो बंदा अपने लिये चाहता है; क्योंकि प्रभु बंदे पर संव्य से अधिक दयालु है, अल्लाह बंदे के लिए जो संग्रहित करता है वह बंदे के अपने प्रिय कार्य से अधिक श्रेष्ठ होता है, भले ही उसका मन इसके विपरीत की लालसा रखता हो, प्यारे नबी ﷺ ने कहा: "मोमिन का मामला बड़ा अनोखा है, उसका पूरा मामला अच्छा ही होता है, यह विशेषता एक मोमिन के अलावा किसी को प्राप्त नहीं है, यदि उसके साथ भला होता है तो वह प्रभु का आभारी होता है, यह

उसके लिए अच्छा है, और यदि उसके साथ बुरा होता है तो वह धैर्य रखता है, और यह भी उसके लिए अच्छा ही है।" (सही मुस्लिम)

मुस्लिम पर जो भी विपत्तियाँ और दुख आते हैं, अल्लाह उनके माध्यम से केवल उसे आज़मा रहा होता है ताकि उसे परिष्कृत कर सके, उसकी परीक्षा लेता है, ताकि उसे प्रदान करे और उस से कुछ रोक लेता है ताकि उसे बुलंद करे; क्योंकि कभी घृणास्पद चीज़ किसी प्रिय चीज़ का माध्यम बन जाती है और कभी प्रिय चीज़ भी घृणास्पद चीज़ का कारण बन जाती है, पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ وَأَنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ﴾

अल्लाह जनता है जबकि तुम नहीं जानते। (अल-बक़रह: 216)

अल्लाह ने परीक्षा द्वारा अपने बंदे के लिए कितने ही ऊंचे स्थान और उपहारों का निर्णय लिया है जबकि बंदे को उसके बारे में पता भी नहीं था?! पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) को वृद्ध होने के बाद पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) का उपहार दिया गया, जो उनको बहुत ही प्रिये थे; फिर अल्लाह ने उन्हें परीक्षण के तौर पर इस्माईल का वध करने की आज्ञा दी, अतः अल-खलील (प्रभु के परम मित्र) ने वध करने के के विषय में अल्लाह की आज्ञा का पालन किया; तो अंतित भलाई उन्ही के लिए थी, परन्तु अल्लाह ने उनके पुत्र को वध से बचा लिया, फिर पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) ने उनके साथ काबा बनाया, अल्लाह ने पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) के साथ पैग़ंबर इसहाक (उन पर शांति हो) का उपहार दिया और इसहाक के बाद याकूब दिया, फिर हर नबी श्री इब्राहीम खलील (उन पर शांति हो) के वंशज में ही आया।

पैग़ंबर इस्माईल (उन पर शांति हो) की माँ हाजर (उन पर शांति हो) को उनके पति पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने उनके शिशु के साथ, ईश्वर के आदेश से, मक्का की एक निर्जन व सूनसान घाटी में छोड़ दिया था, वह नष्ट होने की कगार पर पहुंच गई, वहाँ न जल था न आश्रय, इसलिए वह दो पहाड़ों के बीच दौड़ती रहीं, देखती रहीं: "क्या कोई दिख रहा है?" लेकिन उन्हें कोई नज़र नहीं आया, तो भलाई उसी में थी जिसे अल्लाह ने उनके लिए चुना था, अत: श्री जिबरील (उन पर शांति हो) उतरे और उन्होंने ज़मीन पर अपना पंख मारा, तो ज़मज़म एक झरना बनकर प्रकट हो गया, जिस के पानी को हज उमरे के यात्री व अन्य आज भी पीते हैं, और वे सफ़ा मरवा के बीच दौड़ भी लगाते हैं जैसे श्रीमती हाजर दौड़ी थीं। यह श्रीमती हाजर की अल्लाह पर निर्भरता ही थी जिसकी बरकत से यह सब मुमकिन हुआ।

पैग़ंबर यूसुफ (उनपर शांति हो) एक दयालु और स्नेही पिता की देखरेख में रहते थे, जो

भाइयों के संग खेल कूद के लिए यूसुफ़ के बाहर जाने को लेकर चिंतित रहते थे, एक दिन उनके भाइयों ने पिता जी से कहा:

﴿أَرۡسِلۡهُ مَعَنَا غَدٗا يَرۡتَعۡ وَيَلۡعَبۡ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ﴾

कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए कि वह कुछ चर-चुग ले और खेल कूद ले। उसकी रक्षा के लिए तो हम हैं ही।" (यूसुफ़: 12)

फिर उस देखभाल और दयालुता के बीच से यूसुफ़ को खींच लिया जाता है, फिर यूसुफ पितात्व के स्नेह और भाईचारे की नम्रता से वंचित हो जाते हैं और उन्हें अकेले एक कुंए में फेंक दिया जाता है, फिर अल्लाह उन्हें उच्च वंश, सौंदर्य और यौवन प्रदान करता है, कुंए से बचने के बाद एक महिला उन्हें भटकाना चाहती है; तो बुराई की ओर आकर्षित करने वाले समस्त साधनों की उपस्तिथि के बावजूद वो जवाब देते हैं:

﴿مَعَاذَ ٱللَّهِۖ إِنَّهُۥ رَبِّيٓ أَحۡسَنَ مَثۡوَايَۖ﴾

अल्लाह की पनाह! मेरे स्वामी ने मुझे अच्छा स्थान दिया है, (में उसके साथ ग़द्दारी नहीं कर सकता।) (यूसुफ: 23)

तब अल्लाह ने उनकी प्रशंसा को अमर कर दिया, उन्हें युवा पवित्रता और अकेले में अल्लाह के भय का एक आदर्श बना दिया, कुएँ की घटना के बाद उन्हें ईश-दूतत्व प्रदान किया, राज्य के खज़ाने उनके अधीन कर दिए और उनके नाम पर पवित्र कुरआन की एक सूरह अवतीर्ण कर दी जो क़यामत के दिन तक पढ़ी जाती रहेगी।

पैग़ंबर अय्यूब (उन पर शांति हो) रोग से ग्रस्त हो जाते हैं और उनके साथी उनसे दूर हो जाते हैं, इसी अवस्था में उनकी संतान मृत्यु को प्राप्त हो जाती है, परंतु अल्लाह ने अपनी कृपा से उनके लिए शिफ़ा और वरदान को संग्रहित कर रखा था, अतः उन्हें परीक्षा से मुक्ति मिलती है और अल्लाह उतनी ही संख्या में उनको और संतान प्रदान करता है और उन्हें धैर्यवानों के लिए एक आदर्श बना देता है।

﴿وَأَيُّوبَ إِذۡ نَادَىٰ رَبَّهُۥٓ أَنِّي مَسَّنِيَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ ۝
فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ فَكَشَفۡنَا مَا بِهِۦ مِن ضُرّٖۖ وَءَاتَيۡنَٰهُ أَهۡلَهُۥ وَمِثۡلَهُم مَّعَهُمۡ رَحۡمَةٗ مِّنۡ عِندِنَا وَذِكۡرَىٰ لِلۡعَٰبِدِينَ﴾

और अय्यूब पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि "मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और तू सबसे बढ़कर दयावान है।" अतः हमने उसकी सुन ली और जिस तकलीफ़ में वह पड़ा था उसको दूर कर दिया, और हमने उसे उसके परिवार के लोग दिए और उनके साथ उनके जैसे और भी दिए अपने यहाँ दयालुता और एक उपासकों के लिए एक स्मृति के रूप में। (अल-अंबिया: 83-84)

पैग़ंबर यूनुस (उन पर शांति हो) को नाव से निकाल कर समुद्री लहरों के हवाले कर दिया जाता है, उन्हें एक बड़ी मछली निगल लेती है, लेकिन अल्लाह ने उन्हें नष्ट होने से बचा लिया और अपनी निगरानी के साथ उनकी देखभाल की, मछली के पेट में कई दिन ठहरने के बाद मछली ने उन्हें समुद्री तट पर डाल दिया, अल्लाह ने वहाँ एक बेलदार पेड़ उगा दिया और उन्हें एक लाख से अधिक आबादी का पैग़ंबर बनाया, उन पर सभी लोग ईमान लाए; तो अल्लाह ने उन सब को एक निर्धारित समय तक जीवनदान दिया, सो पैग़ंबर यूनुस की परीक्षा उनके लिए, उनकी कौम के लिए और उनके बाद के पीड़ितों के लिए अच्छी साबित हुई, कोई भी अल्लाह को पुकारता है; तो अल्लाह उसे अवश्य संकट से मुक्ति देता है, पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿وَذَا ٱلنُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَٰضِبًا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادَىٰ فِي ٱلظُّلُمَٰتِ أَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۞ فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ وَنَجَّيۡنَٰهُ مِنَ ٱلۡغَمِّۚ وَكَذَٰلِكَ نُنجِي ٱلۡمُؤۡمِنِينَ﴾

और ज़ुन्नून (मछलीवाले) पर भी दया दर्शाई। याद करो जबकि वह अत्यन्त क्रुद्ध होकर चल दिया और समझा कि हम उसे तंगी में न डालेंगे। अन्त में उसनें अँधेरों में पुकारा, "तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ। तब हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसे ग़म से छुटकारा दिया। इसी प्रकार तो हम मोमिनों को छुटकारा दिया करते है। (अल-अंबिया: 87-88)

पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ फ़रमाते हैं: "मछली वाले पैग़ंबर की दुआ जब वह मछली के पेट में थे; यह थी:

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

"तेरे अलावा कोई पूज्य प्रभु नहीं है, पवित्र है तेरी हस्ती, निश्चित ही मैं अन्याय करने वालों में से था।"

जब भी कोई मुस्लिम व्यक्ति किसी भी विषय में इस दुआ के माध्यम से अल्लाह को पुकारता है; तो अल्लाह अवश्य उसकी पुकार का जवाब देता है।" (सुनन-तिर्मिज़ी)

पैग़ंबर ज़करिय्या (उन पर शांति हो) को एक लंबी अवधि तक संतान से वंचित रखा गया, उनकी हड्डियाँ दुर्बल हो गईं, बुढ़ापे के कारण उनका सर सफेद हो गया, उन्होंने दुआ द्वारा अल्लाह से गुहार लगाई, इस विलंब का परिणाम यह हुआ कि फरिश्तों ने उन्हें आवाज़ लगाई कि अल्लाह आपको एक शिशु की शुभ सूचना देता है और उस बच्चे का नाम रखने वाला भी अल्लाह ही है, उसने उसे एक ऐसा नाम दिया है जो इससे पहले किसी प्राणी को नहीं मिला:

﴿يَٰزَكَرِيَّآ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَٰمٍ ٱسۡمُهُۥ يَحۡيَىٰ لَمۡ نَجۡعَل لَّهُۥ مِن قَبۡلُ سَمِيّٗا﴾

ऐ ज़करिय्या! हम तुझे एक लड़के की शुभ सूचना देते है, जिसका नाम यह्या होगा। हमने उससे पहले किसी को उसका हमनाम नहीं बनाया। (मरयम: 7)

उस बच्चे की माँ के गर्भवती होने से पहले ही, अल्लाह ने उसके पिता को बता दिया था कि जीवन में उसके बेटे की क्या स्थिति होने वाली है; ताकि बच्चे के सत्य मार्ग पर होने की बात सुन कर उनके मन को संतोष मिल जाए:

﴿مُصَدِّقَۢا بِكَلِمَةٖ مِّنَ ٱللَّهِ وَسَيِّدٗا وَحَصُورٗا وَنَبِيّٗا مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ﴾

वह अल्लाह के एक कलिमे की पुष्टि करनेवाला, सरदार, अत्यन्त संयमी और अच्छे लोगो में से एक नबी होगा। (आल-इमरान: 39)

पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) की माता को अल्लाह ने आदेश दिया कि वह अपने पुत्र मूसा को समुद्र में डाल दें, जबकि अभी वह दूध पीने की अवस्था में थे, प्रत्यक्ष रूप से इसमें उनका विनाश था; लेकिन अल्लाह ने उनकी रक्षा की और दूध पिलाने वाली महिलाओं को उन पर वर्जित कर दिया, फिर उन्हें दोबारा उनकी माता के पास लौटा दिया जो उन्हें दूध पिलातीं और दूध पिलाने पर पारिश्रमिक भी वसूल करतीं।

फिर पैग़ंबर मूसा (उनपर शांति हो) फिरऔन के आवासों में आनंद और समृद्धि में रहते हैं, यहाँ पर उनकी एक अन्य परीक्षा होती है, शीर्ष सरकारी अधिकारी उनकी हत्या का षड्यंत्र करते हैं, वो डरे सहमे चोकन्ने हो कर मिस्र देश से निकलते हैं और एक खाली रेगिस्तान में चलते रहते हैं, इस प्रकार एक अनजान नगर; मदयन में पहुँच जाते हैं, आसमान की ओर नज़र उठाते हैं और कहते हैं:

﴿رَبِّ إِنِّي لِمَآ أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ﴾

ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी ओर उतार दे, मैं उसका मोहताज हूँ। (अल-क़सस: 24)

तो अल्लाह ने -इस परेशानी और परीक्षण के बाद- उन्हें संदेश और नुबुव्वत (ईश-दूतत्व) प्रदान की, बिना किसी मध्यस्थ के उनसे बात की और उन्हें दृढ़निश्चयी दूतों में से चुना।

श्रीमती मरयम की माता (उनपर शांति हो) की आशा थी कि उन्हें पुत्र मिले, लेकिन अल्लाह ने उन्हें पुत्री प्रदान की; फिर उसका परिणाम अत्यधिक भलाई के रूप में सामने आया, उसी पुत्री ने एक पैग़ंबर और संदेशवाहक को जन्म दिया।

श्रीमती मरयम (उन पर शांति हो) ने अपनी अस्मिता की रक्षा की; तो अल्लाह ने उनके गर्भ में अपनी ओर से आत्मा फूंक दी, अतः अल्लाह के आदेश अनुसार वो गर्भवती हो गईं; लेकिन उस संकट की भयावहता से वो कह उठीं:

﴿يَٰلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَٰذَا وَكُنتُ نَسْيًا مَّنسِيًّا﴾

काश मैं इससे पहले ही मर जाती और भूली-बिसरी हो गई होती! (मरयम: 23)

लेकिन ईश्वर बुद्धिमान और सर्वज्ञ है, उसने इस गर्भावस्था को लोगों के लिए एक संकेत बना दिया, वो बिना पति के गर्भवती होती हैं, उस शिशु का जन्म होता है फिर वह पैग़ंबर बनता है और अल्लाह उन्हें और उनके बच्चे को क़ुरआन में अमर कर देता है:

﴿وَجَعَلْنَٰهَا وَٱبْنَهَآ ءَايَةً لِّلْعَٰلَمِينَ﴾

और हमने उसे और उसके बेटे को सारे संसार के लिए एक निशानी बना दिया। (अल-अंबिया: 91)

हमारे प्यारे नबी मुहम्मद ﷺ माता-पिता के बिना अनाथ बनकर पले बढ़े, साथ निभाने वाले भाई भी आप के पास नहीं थे; तो अल्लाह ने ही उनको शरण दी:

﴿أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَـَٔاوَىٰ﴾

क्या ऐसा नहीं कि उसने तुम्हें अनाथ पाया तो ठिकाना दिया? (अल-ज़ुहा: 6)

आपको आसमान पर चढ़ाया गया, श्री जिब्रील (उन पर शांति हो) आपके साथी बने, अल्लाह ने जन्नत में आपके लिए सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च अतिथि सत्कार का प्रबंध किया और

फ़रमाया:

﴿وَلَلۡأٓخِرَةُ خَيۡرٞ لَّكَ مِنَ ٱلۡأُولَىٰ﴾

और निश्चय ही आखिरत (अवधि) तुम्हारे लिए दुनिया से उत्तम है। (अल-ज़ुहा: 4)

आपके साथियों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने मक्का से मदीने की ओर हिजरत (प्रवास) की, वे अपने देश और अपने परिवार को छोड़कर दूसरे देश और दूसरे लोगों के पास पहुँचे; तो अल्लाह ने उन्हें धर्मवाहक बना दिया और उन्हें जन्नती लोगों में शामिल कर दिया:

﴿رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ عَنۡهُ وَأَعَدَّ لَهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي تَحۡتَهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدٗاۚ﴾

अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे उससे प्रसन्न हुए। और उसने उनके लिए ऐसे बाग़ तय्यार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे। (अल-तौबह: 100)

हिजरत के छठे वर्ष, प्यारे नबी अपने साथियों के साथ मक्का के हुदैबियह स्थान तक आए, जिनकी संख्या चौदह सौ थी, बहुदेववादियों ने उन्हें मक्का में प्रवेश से रोक दिया और इस बात पर समझौता किया कि अगले साल आएंगे, सहाबा के हृदय को पीड़ा हुई, मन दुखी हुआ, क्योंकि उन्हें काबा से निकट हो जाने के बाद उससे रोक दिया गया था, और वहाँ पहुँचने के बाद वापसी का आदेश हुआ था, परंतु उन्होंने अल्लाह के रसूल ﷺ द्वारा उस साल प्रवेश न करके वापस लौटने के आदेश को मान लिया, फिर वे अगले साल दोबारा वहाँ आए, जबकि अल्लाह ने उन्हें छूटे हुए उमरे के बदले में उमरा करा दिया था, और उन्हें शक्ति व प्रतिष्ठा प्रदान कर दी थी, अब वे दस हज़ार हो गए थे, विजय के वर्ष युद्ध के बिना ही मक्का में दाखिल हुए और लोग समुहों के रूप में इस्लाम धर्म में आने लगे, प्यारे नबी ﷺ ने काबा के आसपास की मूर्तियों को तोड़ दिया, जबकि आप क़ुरआन की आयत पाठ कर रहे थे:

﴿وَقُلۡ جَآءَ ٱلۡحَقُّ وَزَهَقَ ٱلۡبَٰطِلُۚ﴾

कह दो: सत्य आ गया और असत्य मिट गया। (अल-इसरा: 81)

और इस प्रकार धर्म चारों ओर फैल गया।

जो कोई अपनी युवावस्था में अल्लाह के आज्ञापालन पर पलेगा, स्वयं को निषिद्ध चीजों और इच्छाओं से रोकेगा; अल्लाह उसे उस दिन अपने सिंहासन की छाया में छाया देगा, जिस

दिन उसकी छाया के अलावा कोई छाया नहीं होगी।

जिसका मन उसे किसी वर्जित स्त्री की ओर आमंत्रित करता है, मगर वह ईश्वर के डर से उसे छोड़ देता है; तो अल्लाह उसे अपने सिंहासन की छाया में अपने सबसे अच्छे बंदों के साथ इकट्ठा करेगा। श्री क़तादा (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "जो व्यक्ति भी किसी निषिद्ध कार्य को करने में सक्षम होकर भी उसे केवल अल्लाह के डर से छोड़ देता है; अल्लाह उसे आख़िरत से पहले इसी दुनिया में उससे बेहतर बदला देगा।"

जो व्यक्ति अपनी दृष्टि खो देता है, फिर उस पर सब्र करता है; अल्लाह आखिरत में उसकी दोनों आँखों के बदले ऐसे अनुग्रह देगा जो किसी आंख ने नहीं देखे होंगे, प्यारे नबी ﷺ का कथन है: "महामहिम अल्लाह ने कहा: जब मैं अपने बंदे की परीक्षा उसकी दो प्रिय चीज़ों (आँखों) द्वारा लेता हूँ, फिर वह बंदा उस पर धैर्य रखता है; तो मैं उन दोनों का बदला उसे जन्नत के रूप में दूंगा।" (मुसनद अहमद)

जिस व्यक्ति को विश्वास हो जाता है कि अल्लाह अपने बंदे के लिए अच्छा ही चुनाव करता है; उसके लिए विपत्तियाँ हल्की हो जाती हैं, कठिनाइयाँ आसान हो जाती हैं और अल्लाह की दया, उदारता और शुभ चुनाव पर भरोसे के कारण उसकी परीक्षा का इनाम संग्रहित हो जाता है।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हुँ।

﴿وَعَسَىٰٓ أَن تَكۡرَهُواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ وَعَسَىٰٓ أَن تُحِبُّواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ شَرّٞ لَّكُمۡۚ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ وَأَنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ﴾

और बहुत संभव है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय लगे और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत संभव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय लगे और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (अल-बक़रह: 216)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।।।

दूसरा ख़ुतबा (उपदेश)

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की विशेष सहायता और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने अपने कुछ बंदों के लिए उच्च पदवियाँ लिखी होती हैं, लेकिन उनके कर्म उसके पात्र नहीं होते; इसलिए अल्लाह उन्हें विभिन्न प्रकार के कष्टों से पीड़ित करता है, ताकि उन्हें ऐसे पुरस्कार मिल जाएं जो उन्हें उन उच्च पदवियों और स्थानों की प्राप्ति करा सकें। जो व्यक्ति किसी मुसीबत पर धैर्य रखता है और अपने मामलों को अल्लाह के हवाले कर देता है; तो अल्लाह उसे संतुष्टि और विश्वास प्रदान करता है, उसके मामलों के परिणाम को प्रशंसनीय बना देता है। यदि अल्लाह की वर्जित चीज़ों के प्रति उसकी इच्छा प्रबल हो जाए और मन उसे करने के लिए विचलित हो, फिर भी बंदा उससे रुक जाता है; तो इस त्याग का पुरुस्कार बहुत महान होता है, इस पाप से छुटकारा पाने की राह में मन के साथ होने वाले संघर्ष का इनाम दोगुना हो जाता है और उसे उससे बेहतर चीज़ प्रदान की जाती है।

फिर जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने नबी पर रहमत और सलाम भेजने का आदेश दिया है।।।

विपत्तियों पर धैर्य रखना[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह (ईश्वर) के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है।

और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद उसके भक्त और दूत हैं, सलाम व शांति उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर हो।

अम्मा बा'द:

हे अल्लाह के बंदो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसे डरना चाहिए, क्योंकि धर्मपरायणता में अनुग्रहों की वृद्धि और संकटों से मुक्ति है।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने प्राणियों के भाग्य और उनकी अवधि को निर्धारित किया है, उनके प्रभावों और कर्मों को लिख दिया है, आजीविका और धन को उनके बीच बांट दिया है, उनकी परीक्षा लेने के लिए मृत्यु और जीवन का सृजन किया है कि लोगों में कौन कर्मों में सर्वश्रेष्ठ है। अल्लाह के निर्णय और उसकी नियति पर ईमान रखना ईमान के स्तंभों में से एक है, पृथ्वी पर अल्लाह की इच्छा और चाहत के बिना कोई गति या विश्राम नहीं है, ब्रह्मांड में जो कुछ भी है अल्लाह द्वारा लिखित भाग्य और रचना के कारण है, दुनिया कमियों तथा अपरिष्कृत चीजों से भरी पड़ी है, कठिनाइयाँ और भयावहता इसके स्वभाव में है, जैसे गर्मी और सर्दी होती है वैसे ही इस दुनिया में संकट और क्लेश होते हैं, एक बंदे को जिनका सामना करना ही करना है:

﴿وَلَنَبۡلُوَنَّكُم بِشَيۡءٖ مِّنَ ٱلۡخَوۡفِ وَٱلۡجُوعِ وَنَقۡصٖ مِّنَ ٱلۡأَمۡوَٰلِ وَٱلۡأَنفُسِ وَٱلثَّمَرَٰتِۗ

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 05/01/1422 हिजरी को दिया गया।

﴿وَبَشِّرِ ٱلصَّٰبِرِينَ﴾

और हम अवश्य ही कुछ भय से, कुछ भूख से, और कुछ जान-माल और पैदावार की कमी से तुम्हारी परीक्षा लेंगे। और धैर्यवानों को शुभ-सूचना दे दो। (अल-बक़रह: 155)

अनुग्रहों में कटौतियाँ परीक्षा है जिनके द्वारा झूठे लोगों के बीच से सत्यवादी निखर कर सामने आ जाता है:

﴿أَحَسِبَ ٱلنَّاسُ أَن يُتْرَكُوٓاْ أَن يَقُولُوٓاْ ءَامَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ﴾

क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वे इतना कह देने मात्र से छोड़ दिए जाएंगे कि "हम ईमान ले आए" और उनकी परीक्षा न की जाएगी? (अल-अंकबूत: 2)

परीक्षण से ही आत्मा को शुद्धि प्राप्त होती है और विपत्तियाँ ही पुरुष को महापुरुष बनाती हैं, श्री इब्नुल-जौज़ी (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "जो व्यक्ति किसी विपत्ति का सामना किए बिना ही, लंबे समय तक सुरक्षा और कल्याण चाहता है; वह न तो दायित्व को जानता है, न ही उसे (अल्लाह के सामने) अधीनता का एहसास है।" पीड़ा हर प्राणी को होनी ही है, चाहे वह मोमिन हो या काफ़िर, जीवन कठिनाइयों और खतरों की सवारी पर आधारित है, इस जीवन में कोई भी क्लेश और पीड़ा से मुक्ति की इच्छा नहीं रख सकता।

एक व्यक्ति के जीवन में उठते बेठते और चलते फिरते अनुग्रह तथा क्लेश का आना जाना लगा रहता है, पैग़ंबर आदम (उनपर शांति हो) को फरिश्ते सजदा करते हैं, फिर थोड़ी देर बाद ही उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया जाता है। परीक्षा तो होती ही लक्ष्यों के विपरीत और आशाओं के खिलाफ है, हर किसी को अनिवार्य रूप से उसकी कड़वाहट का घूँट लेना ही है, लेकिन कोई थोड़ी कड़वाहट झेलता है तो कोई अधिक। मोमिन की परीक्षा उसे निखारने के लिए होती है, उसे यातना देने के लिए नहीं, सुख में फ़ितने और दुख में कष्ट।

﴿وَبَلَوْنَٰهُم بِٱلْحَسَنَٰتِ وَٱلسَّيِّـَٔاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾

और हमने उन्हें अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर उनकी परीक्षा ली, कदाचित वे पलट आएं। (अल-आराफ: 168)

कभी अप्रिय प्रिय को लाता है और कभी प्रिय अप्रिय को, अत: तुम स्वयं को सुरक्षित मत समझो; हो सकता है सुख के पहलू में कोई हानी तुम्हें पहुँच जाए, निराश भी मत रहो; हो सकता है हानि की करवट से कोई सुख ही निकल आए, पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿وَعَسَىٰٓ أَن تَكۡرَهُواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۖ وَعَسَىٰٓ أَن تُحِبُّواْ شَيۡـٔٗا وَهُوَ شَرّٞ لَّكُمۡۚ وَٱللَّهُ يَعۡلَمُ وَأَنتُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ﴾

और बहुत मुमकिन है कि कोई चीज़ तुम्हें अप्रिय लगे और वह तुम्हारे लिए अच्छी हो। और बहुत संभव है कि कोई चीज़ तुम्हें प्रिय लगे और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (अल-बक़रह: 216)

इसलिए आपदाएं आने से पहले ही खुद को उनके लिए तय्यार कर लो; ताकि तुम पर उसकी चोट हल्की हो जाए, मुसीबत से घबराओ मत; अल्लाह के यहाँ विपत्तियों की अवधि सीमित होती है, और अपने कथन से क्रोध न जताओ; क्योंकि कदाचित जीभ पर प्रवाहित शब्द मनुष्य के विनाश का कारण बन सकता है।

दृढ़ संकल्प वाला मोमिन बड़ी बड़ी मुसीबतों के आगे डट जाता है, उसका दिल नहीं बदलता और उसकी जीभ शिकायतें नहीं करती। पुरुस्कार के वादे के साथ मामले को आसान बनाकर अपने लिए विपत्ति को हल्का करो, ताकि मुश्किल हालात बिना किसी शिकायत के चले जाएं। बुद्धिमान लोग संकट के प्रति सदा से दृढ़ता दिखाते रहे हैं; ताकि उन्हें विपत्तियों के साथ साथ शत्रुओं की गाली भी न सहनी पड़े; क्यूंकि जब विपत्ति शत्रु को दिखती है; तो वह प्रसन्न होता है, सो विपत्तियों और पीड़ाओं को छिपाना बड़े लोगों के लक्षणों में से एक है, इसलिए विपत्ति की लपट को बर्दाश्त करो; क्यूंकि यह शीघ्र ही खत्म हो जाएगी, अधिक से अधिक यही होगा कि कुछ दिनों के लिए धैर्य रखना पड़ेगा, मरने वाले दृढ़ता समाप्त होने के कारण ही मरे हैं, जबकि धैर्यवानों को इनाम से पुरस्कृत किया जाता है:

﴿وَلَنَجۡزِيَنَّ ٱلَّذِينَ صَبَرُوٓاْ أَجۡرَهُم بِأَحۡسَنِ مَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ﴾

जिन लोगों ने धैर्य से काम लिया उन्हें तो, जो उत्तम कर्म वे करते रहे उसके बदले में, हम अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अल-नह्ल: 96)

उनके पुण्य दोगुना हो जाते हैं:

﴿أُوْلَٰٓئِكَ يُؤۡتَوۡنَ أَجۡرَهُم مَّرَّتَيۡنِ بِمَا صَبَرُواْ﴾

ये वे लोग है जिन्हें उनका प्रतिदान दुगना दिया जाएगा, क्योंकि इन्होंने धैर्य से काम लिया। (अल-क़सस: 54)

बल्कि उनका पुण्य बे-हिसाब होता है, अल्लाह उनके साथ होता है, मदद और संकट

से मुक्ति उनके धैर्य से जुड़ी होती है।

हे पीड़ित! तुम्हारे प्रभु ने तुम्हें वंचित ही इसलिए किया है कि तुम्हें दिया जाए, तुम्हें परेशानी में ही इसलिए डाला है कि तुम्हें राहत मिले, तुम्हारी परीक्षा ही इसलिए ली है कि तुमको शुद्ध किया जाए, वह अनुग्रह द्वारा तुम्हें परीक्षा में डालता है और परीक्षा द्वारा अनुगृह देता है, इसलिए जिस जीविका की गारंटी तुम्हें दे दी गई है, उसकी चिंता करके अपना समय व्यर्थ मत करो, जब तक अवधि शेष है जीविका भी आती रहेगी, महान प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِي ٱلۡأَرۡضِ إِلَّا عَلَى ٱللَّهِ رِزۡقُهَا﴾

धरती में चलने-फिरनेवाला जो प्राणी भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है। (हूद: 6)

अगर वह अपनी बुद्धि से तुम्हारे सामने कोई रास्ता बंद करता है तो अपनी दया से वह उससे अधिक लाभकारी रास्ता खोल भी देता है।

परीक्षा से अच्छे लोगों का रुतबा ऊँचा होता है और नेक लोगों का प्रतिफल बढ़ता है, श्री सा'द बिन अबी-वक्कास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं: "मैंने कहा: हे अल्लाह के दूत! सबसे कठिन परीक्षा किन लोगों की होती है? आपने कहा: पैग़ंबर गण, फिर सदृणी लोग, फिर आदर्श से आदर्श लोग, मनुष्य की परीक्षा उसके धर्म के अनुसार होती है, यदि उसके धर्म में दृढ़ता है; तो उसकी परीक्षा बढ़ जाती है, और यदि उसके धर्म में कमज़ोरी है; तो उसके लिए आसानी कर दी जाती है, विपत्ति बंदे के पीछे उस समय तक लगी रहती है, जब तक कि वह पृथ्वी की पीठ पर किसी पाप का बोझ उठाए बिना नहीं चलने लगता।" (मुसनद अहमद)

परीक्षा का मार्ग एक कठिन मार्ग है, जिसमें पैग़ंबर आदम को कड़ी मेहनत करनी पड़ी, पैग़ंबर इब्राहीम खलील को आग में फेंका गया, पैग़ंबर इस्माईल को वध के लिए लिटा दिया गया, पैग़ंबर यूनुस को मछली के पेट में डाल दिया गया, पैग़ंबर अय्यूब को कष्ट सहना पड़ा, पैग़ंबर यूसुफ को न्यूनतम दाम के बदले बेच दिया गया, अत्याचार के कारण उन्हें कुंए में फेंक दिया गया और अन्यायपूर्वक जेल में डाल दिया गया, इसके अलावा हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ को भी सभी प्रकार के कष्ट झेलने पड़े। (समस्त पैग़ंबरों पर शांति हो)

तुम भी परीक्षा की ईश्वरीय पद्धति पर चले जा रहे हो, दुनिया किसी के लिए भी वफ़ादार नहीं रही, भले ही उसने दुनिया से बहुत कुछ प्राप्त कर लिया हो, प्यारे नबी ﷺ कहते हैं: "जिसके लिए अल्लाह अच्छा इरादा रखता है; उसे मुसीबत में डालता है।" (सही बुखारी) कुछ विद्वानों ने कहा: "जिसको भी अल्लाह ने स्वर्ग के लिए बनाया है, उसके पास सदा विपत्तियाँ आती रही हैं।"

धर्म की विपत्ति ही वास्तव में विपत्ति है, इसके अलावा अन्य विपत्तियाँ तो आशीर्वाद ही हैं, ये स्थान बढ़ाती हैं और पापों को मिटाती हैं, हर आशीर्वाद जो व्यक्ति को अल्लाह के करीब नहीं लाता वह विपत्ति ही है, पुण्य से वंचित रहने वाला ही असली पीड़ित है, इसलिए इस दुनिया में तुमने जो कुछ भी खोया है उस पर अफ़सोस मत करो, क्योंकि इसकी आपदाएँ केवल घटनाएँ हैं, इसकी बातें दुख और सूचनाएं अशांति हैं, लोग जितनी इसकी परवाह करते हैं उतना ही पीड़ित होते हैं, यहाँ जिस पर शोक किया जा रहा है वही तो खुशी है, इसके दुख इसके सुखों से उत्पन्न होते हैं और इसके दुख इसके सुखों से जुड़े हुए हैं, श्री अबू-दर्दा (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) कहते हैं: "अल्लाह के आगे दुनिया के बेकार होने का प्रमाण यह है कि अल्लाह की अवज्ञा केवल यहीं पर होती है, और इसे छोड़ कर ही प्रभु के उपहार प्राप्त होते हैं।"

इसलिए अपने आप को छूटे हुए से अधिक लाभदायक चीज़ में व्यस्त रखो है, जैसे कि किसी ग़लती को सुधारना, या किसी ग़लती के लिए माफ़ी माँगना, या परम प्रभु के द्वार पर खड़े होना। बारीकी से देखो कि कितनी तेज़ी से क्लेश नष्ट हो रहा है; दुख हल्का हो जाएगा, यदि कठिनाई की पीड़ा न होती तो आराम के क्षण की उम्मीद भी नहीं होती, लोगों के हाथ में मौजूद चीज़ों से पूरी तरह निराश हो जाओ; सबसे धनी हो जाओगे, अल्लाह से निराश मत हो; अन्यथा तुम विफल हो जाओगे, अपने साथ मौजूद अल्लाह के अपार अनुग्रहों को याद करो, उदासी को अपरिहार्य नियति पर संतोष द्वारा दूर करो, रात की लंबाई भले ही अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच जाए; मगर सुबह तो निकल कर ही रहेगी और जहाँ चिंता की सीमा समाप्त होती है वहीं से राहत का आरंभ होता है। समय एक जैसा नहीं रहता, बल्कि हर मामले के बाद दूसरा मामला आता है, कोई भी कठिनाई हो उसे आसान होना ही है, निराश मत रहो; भले ही आपदा पर आपदा आ जाए; एक कठिनाई दो आसानियों[1] पर भारी नहीं पड़ सकती, अल्लाह से प्रार्थना करो राहत तुम्हारी ओर अधिक प्रकाशमान होगी, अल्लाह को थामने वाला जब भी सब्र का जाम पीता है; उसके लिए मुक्ति का द्वारा खुल ही जाता है। पैग़ंबर याक़ूब (उन पर शांति हो) ने जब अपने पुत्र को खो दिया और उस पर एक लंबी अवधि बीत गई; तो भी राहत से निराश नहीं हुए, जब उनसे दूसरा पुत्र भी छीन लिया गया; तब भी अद्वितीय प्रभु से उनकी आशा समाप्त

(1) पवित्र कुरआन की सूरह अल-शर्ह की आयत 5-6 में इस ओर ओर इशरा मिलता है कि हर कठिनाई के साथ दो आसानियाँ होती हैं।

नहीं हुई, बल्कि उन्होंने कहा:

﴿فَصَبۡرٞ جَمِيلٞۖ عَسَى ٱللَّهُ أَن يَأۡتِيَنِي بِهِمۡ جَمِيعًا﴾

अब सुंदर धैर्य से काम लेना है! बहुत संभव है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए। (यूसुफ़: 83)

केवल हमारे रब के लिए ही प्रशंसा है और उसी से शिकायत है, यदि दिन तुम पर भारी हो जाएं, रास्ते और मार्ग तुम्हारे सामने बंद हो जाएं, तो अल्लाह के सिवा किसी और से आशा न करो कि वह तुम्हारा कष्ट दूर कर देगा और संकट समाप्त करेगा, जब अंधेरा छा जाए और रात अपने पर्दे नीचे गिरा चुकी हो, तो रात के अंधेरों में अपना चेहरा आकाश की ओर घुमाओ, विनम्रता के साथ अपने हाथों को ऊपर उठाओ, परम उदार प्रभु को पुकारो कि वो संकट से राहत दे और तुम्हारे मामलों को आसान बनाए; यदि आशा मज़बूत है और दिल प्रार्थना में दृढ़ है; तो प्रार्थना अस्वीकार नहीं होती है:

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلۡمُضۡطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكۡشِفُ ٱلسُّوٓءَ﴾

या वह जो व्यग्र की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है। (अल-नम्ल: 62)

सर्वशक्तिमान प्रभु पर निर्भर रहो, नम्र, भयभीत और झुके हृदय से उसकी ओर मुड़ो, तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जाएगा। श्री फुज़ैल बिन इयाज़ (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "यदि तुम लोगों से निराश हो जाओ और तुम्हें उनसे किसी ही चीज़ की चाहत न हो; तो तुम्हारा स्वामी प्रभु तुम्हारी हर चाहत पूरी कर देगा।"

पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने श्रीमती हाजर और अपने पुत्र इस्माइल (उन दोनों पर शांति हो) को ऐसी घाटी में छोड़ दिया जहां न हरियाली थी न पानी था, फिर श्री इस्माईल ऐसे नबी बन जाते हैं जो अपने परिवार को नमाज़ और ज़कात का आदेश देते हैं, पैग़ंबर यूनुस (उन पर शांति हो) भी कपड़ों के बिना खुले मैदान में नष्ट नहीं हुए, जो भी अपने मामले को अपने स्वामी प्रभु को सौंपेगा; वह अपनी आशा को प्राप्त कर लेगा, मछली वाले पैग़ंबर की दुआ द्वारा अधिकाधिक प्रार्थना किया करो:

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ। (अल-अंबिया: 87)

इस्लाम के विद्वान कहते हैं: "जो भी विपत्ति ग्रस्त व्यक्ति इस प्रार्थना द्वारा अल्लाह से दुआ करता है; तो अल्लाह उसकी विपत्ति को अवश्य दूर कर देता है।" श्री इब्नुल-क़य्यिम (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "इस बात का अनुभव किया गया है कि जिसने भी सात बार यह दुआ:

﴿رَبِّ إِنِّي مَسَّنِيَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ﴾

हे प्रभु मुझे बहुत तकलीफ़ पहुँची है, और तू सब दयावानों से बढ़कर दयावान है।

पढ़ी अल्लाह ने उसकी तकलीफ़ दूर कर दी।"

इसलिए अपने आप को अल्लाह के आगे डाल दो, अपनी आशा को उसी से संबंधित करो, मामले को परम दयालु प्रभु के हवाले कर दो, उससे राहत मांगो, प्राणियों के साथ संबंध तोड़ दो, प्रार्थना स्वीकृति के समय -जैसे सजदा और रात के अंतिम पहर- की तलाश में रहो, कभी भी क्लेश के समय को लंबा न समझो और अधिकाधिक प्रार्थना से उकता कर मत बेठो, क्योंकि क्लेश द्वारा तुम्हारी परीक्षा ली जा रही है और तुम्हें धैर्य व दुआ के रूप में इबादत का हुक्म है, अल्लाह की दया से निराश मत हो, भले ही क्लेश बहुत लंबा हो जाए; राहत निकट ही है, द्वार खोलने वाले प्रभु से ही माँगो; क्योंकि वही परम उदार है:

﴿وَإِن يَمۡسَسۡكَ ٱللَّهُ بِضُرّٖ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ إِلَّا هُوَۖ﴾

यदि अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में डाल दे तो उसके सिवा कोई उसे दूर करनेवाला नहीं। (यूनुस: 107)

वही है जो अपनी चाह अनुसार कार्य करने वाला है, पैग़ंबर ज़करिय्या (उन पर शांति हो) अत्यंत बूढ़े हो गए थे, फिर उन्हें श्रेष्ठ मनुष्यों और पैगंबरों में से एक पुत्र भेंट किया गया, पैग़ंबर इब्राहीम (उन पर शांति हो) को पुत्र की शुभ सूचना दी गई जबकि उनकी पत्नी अपने हाल से निराश होकर कह रही थी:

﴿ءَأَلِدُ وَأَنَا۠ عَجُوزٞ وَهَٰذَا بَعۡلِي شَيۡخًاۖ﴾

मैं कहाँ से बच्चे को जन्म दूँगी, जबकि मैं वृद्धा हूँ और ये मेरे पति भी बूढ़ें हैं? (हूद: 72)

यदि तुम्हें जीविका में देर होती दिखाई दे; तो अधिकाधिक तौबा (पश्चाताप) करो और माफ़ी माँगो; क्योंकि पाप दण्ड को अनिवार्य करता है, अगर स्वीकृति का कोई चिन्ह न देखो तो अपनी अवस्था की जाँच करो, शायद तुम्हारा पश्चाताप सच्चा न हो, इसलिए उसे सुधारो,

फिर प्रार्थना की ओर बढ़ो, क्योंकि उदार अल्लाह से बढ़कर कोई उदार और हाथ का खुला नहीं है, ग़रीबों का ख्याल रखो; क्योंकि दान विपत्ति को रोकता और दूर भगाता है।

यदि विपत्ति तुमसे दूर हो जाती है तो अल्लाह की प्रचुर प्रशंसा व स्तुति करो और जान लो कि अल्लाह के प्रकोप से संव्य को सुरक्षित समझने का धोखा महानतम विपत्तियों में से एक है; क्योंकि कभी सज़ा में देरी भी हो जाती है, सो बुद्धिमान है वह जो परिणाम को ताड़ लेता है।

सदा अल्लाह की नियति, रचना और उसकी व्यवस्था पर विश्वास करो, उसकी ओर से परीक्षा तथा उसके फैसले पर धैर्य रखो और उसके आदेश के आगे आत्म समर्पण कर दो।

मैं शापित शैतान से अल्लाह की शरण में आता हूँ

﴿قُل لَّن يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَنَا هُوَ مَوۡلَىٰنَاۚ وَعَلَى ٱللَّهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ﴾

कह दो, "हमें कुछ भी पेश नहीं आ सकता सिवाय उसके जो अल्लाह ने लिख दिया है। वही हमारा स्वामी है। और ईमानवालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (अल-तौबा: 51)

अल्लाह मुझे और आपको महान क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।।।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की विशेष सहायता और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

अम्मा बा'द, हे मुस्लिमो!

स्थितियाँ एक हाल पर स्थिर नहीं रहतीं, सुखी वह है जो धर्मपरायणता पर कायम रहता है, यदि वह धनवान हो जाए तो धर्मपरायणता उसे सुसज्जित बनाती है, यदि वह ग़रीब हो जाए तो वह उसे धनी बनाती है, यदि उस पर विपत्ति आ जाए तो वह उसे सौंदर्य देती है, तो हर हाल में धर्मपरायणता का पालन करते रहो; इस प्रकार तुम संकट में समृद्धि, बीमारी में राहत और गरीबी में निस्पृहता देखोगे।

नियति को टालने की कोई युक्ति नहीं और जो नियति में नहीं है उसे प्राप्त करने का कोई साधन नहीं। संतोष और निर्भरता नियति को घेरे हुए हैं, अल्लाह चुनाव और व्यवस्था करने में अद्वितीय है, बंदे के लिए प्रभु का प्रबंधन उसके अपने प्रबंधन से उत्तम है, प्रभु बंदे पर बंदे से अधिक दयालु है।

श्री दाउद बिन सुलैमान (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "मोमिन की धर्मपरायणता तीन चीजों से प्रमाणित होती है: जो नहीं मिला है उसके प्रति अल्लाह पर उत्तम निर्भरता, जो मिल गया है उस पर संतुष्टि और जो हाथ से निकल गया है उस पर अच्छा धैर्य।"

जो व्यक्ति अल्लाह की पसंद से संतुष्ट होता है, नियति उस पर इस अवस्था में आती है कि वह प्रशंसनीय व आभारी होता है और उस पर प्रभु की कृपा होती है, अन्यथा नियति उस पर इस अवस्था में हावी हो जाएगी कि वह दोषी और दयालुता से वंचित होगा, इसके बावजूद नियति से भागने का कोई मार्ग नहीं है, कुछ बुद्धिमान लोगों से पूछा गया: "समर्थ क्या है? उन्होंने कहा: तुम्हारी अभिलाषा का कम होना और जो पर्याप्त से संतुष्टि हो जाना।" श्री शुरैह (अल्लाह उन पर दया करे) कहते हैं: "जब भी किसी बंदे को विपत्ति में डाला गया; उसे उस विपत्ति के माध्यम से तीन आशीर्वाद प्राप्त हुए: विपत्ति उस के धर्म के प्रति नहीं थी, यह जैसी थी उससे बढ़कर नहीं हुई और अल्लाह ने उस पर उसे धैर्य दे दिया जब उसने सब्र किया।

फिर हे अल्लाह के बंदो! ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना, प्यारे नबी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर आशीर्वाद और शांति भेजो; क्यूंकि अल्लाह ने तुम्हें दया व सलाम भेजने का आदेश दिया है।।

विपत्तियों के सामने दृढ़ता[1]

समस्त प्रशंसा अल्लाह (ईश्वर) के लिए है, हम उसकी प्रशंसा करते हैं, उसी से सहायता और अपने पापों की क्षमा माँगते हैं, हम अपने प्राण और कर्म की बुराइयों से उसकी शरण चाहते हैं, वह जिसे सत्य मार्ग पर चला दे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे भटका दे उसे कोई सत्य मार्ग पर चला नहीं सकता, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं है।

और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे पैग़ंबर मुहम्मद उसके भक्त और दूत हैं, सलाम व शांति उन पर, उनके परिवार और उनके पवित्र साथियों पर हो।

अम्मा बा'द:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह से वैसे ही डरो जैसे डरना चाहिए; क्योंकि अल्लाह के डर में आशीष की बढ़ोतरी और शापों कि दूरी है।

हे मुस्लिमो!

अल्लाह ने नियति और समय सीमाओं को निर्धारित किया है, प्रभावों और कार्यों को लिख दिया है और परीक्षण के लिए आकाश धरती और मरण जीवन का सृजन किया है, पवित्र प्रभु का कथन है:

﴿وَهُوَ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرۡشُهُۥ عَلَى ٱلۡمَآءِ لِيَبۡلُوَكُمۡ أَيُّكُمۡ أَحۡسَنُ عَمَلًا﴾

वही है जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों में पैदा किया -उसका सिंहासन पानी पर था- ताकि वह तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें कर्म की स्पष्ट से कौन सबसे अच्छा है। (हूद: 7)

खतरे और कठिनाइयाँ इस संसार के स्वभाव में रख दिए गए हैं, कोई भूख से पीड़ित है, तो कोई भय से, कोई प्राणों की कमी से तो कोई धन की कमी से।

(1) यह ख़ुतबा मस्जिद-ए-नबवी में जुमे के दिन 26/01/1430 हिजरी को दिया गया।

मुश्किलों और परेशानियों के लिए समय, लिंग, स्थान या उम्र कोई मायना नहीं रखते, महामहिम प्रभु ने कहा:

﴿وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ﴾

और हम अच्छी और बुरी परिस्थितियों में डालकर तुम सबकी परीक्षा करेंगे। अन्ततः तुम्हें हमारी ही ओर पलटकर आना है। (अल-अंबिया: 35)

अच्छी-बुरी पूर्वनियति पर ईमान रखना: ईमान के स्तंभों में से एक है, मोमिन विपत्तियों और प्रचंड संकटों के समय में दृढ़ रहता है, विपत्तियों और क्लेशों से डगमगाता नहीं है, वह हर हाल में अल्लाह के निर्णय के साथ चलता है, उस पर ईमान रखता है, अपने मामलों को अल्लाह के हवाले करता है और उसी पर निर्भर रहता है।

परीक्षण महान लोगों का मार्ग रहा है, प्यारे नबी ﷺ से पूछा गया: "सबसे कठिन परीक्षा किन लोगों की होती है? आपने कहाः पैग़ंबर गण, फिर सदृणी लोग, फिर आदर्श से आदर्श लोग, मनुष्य की परीक्षा उसके धर्म के अनुसार होती है, यदि उसके धर्म में दृढ़ता है; तो उसकी परीक्षा बढ़ जाती है, और यदि उसके धर्म में कमज़ोरी है; तो उसके लिए आसानी कर दी जाती है।" ऐसा इस लिए होता है ताकि उनका पुरुस्कार पूर्ण हो और उनका रुतबा बुलंद हो। प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया: "विपत्ति बंदे के पीछे उस समय तक लगी रहती है, जब तक कि वह पृथ्वी की पीठ पर किसी पाप का बोझ उठाए बिना नहीं चलने लगता।" (मुसनद अहमद) श्री इब्ने-रजब (अल्लाह उनपर दया करे) ने कहा: "विपत्ति का मूल्य तभी पता चलेगा जब क़यामत के दिन ढक्कन खोल दिया जाएगा।"

एक मुस्लिम शक्तिशाली और महान होता है, वह विपत्तियों के सामने टूटकर बिखर नहीं जाता, प्यारे नबी ﷺ का कथन है: "मोमिन का उदाहरण पौधे की प्रथम हरी भरी बाली की तरह है, हवा उसे कभी इधर उधर झुका देती है और कभी सीधा कर देती है, जबकि मुनाफिक़ का उदाहरण देवदार के पेड़ की तरह है; वह सीधा ही खड़ा रहता है और अंततः एक ही बार में गिर जाता है।" अर्थात: वह दिखने में तो मज़बूत होता, लेकिन वास्तव में कमज़ोर होता है, एक बार में ही गिर जाता है। (सही बुखारी व सही मुस्लिम)

पैग़ंबरों (उन पर शांति हो) की पद्धति: विपत्ति के समय में शक्ति और संकट के समय में धर्म में दृढ़ता रही है, प्यारे नबी ﷺ की एक प्रार्थना इस प्रकार थी: "हे अल्लाह! मैं तुझ से इस मामले में दृढ़ता और सत्य मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प माँगता हूं।" (सुनन नासई)

पैग़ंबर इब्राहीम खलील (उन पर शांति हो) ने मूर्तियों को तोड़ डाला; तो उनके शत्रुओं ने कहा:

﴿فَأْتُواْ بِهِۦ عَلَىٰٓ أَعۡيُنِ ٱلنَّاسِ﴾

उसे लोगों की आंखों के सामने उपस्थित करो (अल-अंबिया: 61)

ताकि लोग हमारी ओर से उसे दी गई यातना देख लें, लेकिन पैग़ंबर उनसे भयभीत नहीं हुए और कहने लगे:

﴿أُفّٖ لَّكُمۡ وَلِمَا تَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِۖ﴾

धिक्कार है तुमपर, और उनपर भी, जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो! (अल-अंबिया: 67)

उन लोगों ने आग में जलाने की धमकी दी; तो पैग़ंबर इब्राहीम की अल्लाह के प्रति आशा और बढ़ गई। उन्होंने कहाः

﴿رَبِّ هَبۡ لِي مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ﴾

ऐ मेरे रब! मुझे कोई नेक संतान प्रदान कर। (अल-साफ़्फ़ात: 100)

तो अल्लाह ने उन्हें एक सहनशील बच्चे की शुभ सूचना दी। और जब उनके पिता ने उनसे कहा:

﴿يَٰٓإِبۡرَٰهِيمُ لَئِن لَّمۡ تَنتَهِ لَأَرۡجُمَنَّكَۖ﴾

ऐ इब्राहीम! यदि तू बाज़ नहीं आया तो मैं तुझपर पथराव कर दूँगा। (मरयम: 46)

तो यह सुन कर भी वह धर्म प्रचार से नहीं रुके और उनके अंदर कोई कमज़ोरी नहीं आई, उन्होंने अपने पिता से कहा:

﴿سَلَٰمٌ عَلَيۡكَۖ سَأَسۡتَغۡفِرُ لَكَ رَبِّيٓۖ إِنَّهُۥ كَانَ بِي حَفِيّٗا﴾

आप पर शांति हो, मैं आपके लिए रब से क्षमा प्रार्थना करूँगा। वह तो मुझपर बहुत मेहरबान है। (मरयम: 47)

पैग़ंबर युसूफ (उन पर शांति हो) जब जेल में थे, तब भी कोई उदासी उन्हें तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुलाने से नहीं रोक पाई थी:

﴿يَٰصَٰحِبَيِ ٱلسِّجۡنِ ءَأَرۡبَابٞ مُّتَفَرِّقُونَ خَيۡرٌ أَمِ ٱللَّهُ ٱلۡوَٰحِدُ ٱلۡقَهَّارُ﴾

ऐ कारागर के मेरे साथियो! क्या अलग-अलग बहुत-से रब अच्छे हैं या एक अकेला अल्लाह जिसका प्रभुत्व सब पर है? (यूसुफ: 39)

पैग़ंबर लूत (उन पर शांति हो) से उनकी कौम ने कहा:

﴿لَئِن لَّمۡ تَنتَهِ يَٰلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡمُخۡرَجِينَ﴾

यदि तू बाज़ नहीं आया, ऐ लूत! तो तू अवश्य ही निकाल बाहर किया जाएगा। (अल-शुअरा: 167)

तो पैग़ंबर लूत ने बड़ी मजबूती से उन्हें उत्तर दिया:

﴿إِنِّي لِعَمَلِكُم مِّنَ ٱلۡقَالِينَ﴾

मैं तुम्हारे कर्म से अत्यन्त विरक्त हूँ। (अल-शुअरा: 168)

पैग़ंबर शुऐब (उन पर शांति हो) को धमकी दी गई कि अगर वह उनके धर्म का अनुसरण नहीं करेंगे; तो उन्हें गांव से निकाल बाहर करेंगे, पैग़ंबर ने उन्हें उत्तर दिया:

﴿قَدِ ٱفۡتَرَيۡنَا عَلَى ٱللَّهِ كَذِبًا إِنۡ عُدۡنَا فِي مِلَّتِكُم بَعۡدَ إِذۡ نَجَّىٰنَا ٱللَّهُ مِنۡهَاۚ﴾

तब तो हम अल्लाह पर झूठ घड़ने वाले ठहरेंगे, यदि हम तुम्हारे पंथ में लौट आए इसके बाद कि अल्लाह ने हमें उससे मुक्ति दे दी है। (अल-आराफ़: 89)

पैग़ंबर यूनुस (उन पर शांति हो) को मछली के पेट में होने के बावुजूद कोई चिंता अपने रब के साथ संबंध रखने से नहीं रोक सकी, बल्कि वह तौहीद के साथ अपने प्रभु को पुकारते रहे:

﴿لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

तेरे सिवा कोई इष्ट-पूज्य नहीं, महिमावान है तू! निस्संदेह मैं दोषी हूँ। (अल-अंबिया: 87)

फिरऔन ने पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) पर पागलपन का आरोप लगाया और कहा:

﴿إِنَّ رَسُولَكُمُ ٱلَّذِيٓ أُرۡسِلَ إِلَيۡكُمۡ لَمَجۡنُونٞ﴾

निश्चय ही तुम्हारा यह रसूल, जो तुम्हारी ओर भेजा गया है, बिलकुल ही पागल है।

(अल-शुअरा: 27)

पैग़ंबर मूसा ने उसकी बात की ओर ध्यान नहीं दिया, बल्कि उसे तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर बुलाया और कहा: मेरा प्रभु तो वह है जो:

﴿رَبُّ ٱلۡمَشۡرِقِ وَٱلۡمَغۡرِبِ وَمَا بَيۡنَهُمَآۖ إِن كُنتُمۡ تَعۡقِلُونَ﴾

पूर्व और पश्चिम का रब है और जो कुछ उनके बीच है उसका भी रब है, यदि तुम कुछ बुद्धि रखते हो। (अल-शुअरा: 28)

जब फिरऔन ने पैग़ंबर मूसा को पराजित करने के लिए अपने जादूगरों को इकट्ठा कर लिया; तो

﴿قَالَ مَوۡعِدُكُمۡ يَوۡمُ ٱلزِّينَةِ﴾

कहा, तुम्हारे वादे का दिन सजावट का दिन है। (ताहा: 59)

अर्थात पर्व का दिन, ताकि समस्त लोग हमें देख सकें, यह बड़ी ही भयावह परिस्थिति थी, अल्लाह की मदद पर भरोसा और उनके पराजय पर विश्वास करते हुए पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) ने कहा:

﴿أَلۡقُواْ مَآ أَنتُم مُّلۡقُونَ﴾

जो कुछ तुम डालते हो, डालो। (यूनुस: 80)

जब इस्राईल की संतान ने पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) की मदद से हाथ खींच लिया, वे युद्ध से पीछे हट गए और कहने लगे:

﴿فَٱذۡهَبۡ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَٰتِلَآ إِنَّا هَٰهُنَا قَٰعِدُونَ﴾

तो तुम और तुम्हारा रब जाओ, और दोनों लड़ो, हम तो यहीं बैठे रहेंगे। (अल-माइदह: 24)

तो पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) ने अपने प्रभु का आदेश लागू करने में बिल्कुल कमज़ोरी नहीं दिखाई, बल्कि उन्होंने युद्ध लड़ा और उनके साथ उनके अनुयायियों ने भी युद्ध किया, फिर अल्लाह ने उनकी मदद की।

जब पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) मिस्र से निकले तो फिरऔन ने उनका पीछा किया,

अचानक मार्ग में समुद्र आ गया जबकि पीछे फिरऔन था, तो इस अवसर पर:

﴿قَالَ أَصۡحَٰبُ مُوسَىٰٓ إِنَّا لَمُدۡرَكُونَ﴾

मूसा के साथियों ने कहा, हम तो पकड़े गए! (अल-शुअरा: 61)

तो पैग़ंबर मूसा (उन पर शांति हो) ने अल्लाह पर ठोस व सशक्त ईमान रखते हुए कहा:

﴿كَلَّآۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهۡدِينِ﴾

कदापि नहीं, मेरे साथ मेरा रब है। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा। (अल-शुअरा: 62)

हमारे प्यारे नबी मुहम्मद ﷺ मक्का की एक घाटी में तीन साल तक कैद रहे, मगर आपने उपदेश देना बंद नहीं किया, लोगों ने आपका मज़ाक भी उड़ाया और कहा कि वह एक जादूगर, झूठा और पागल है, लेकिन आपने उनसे पीठ फेर ली और उन्होंने आपको आपके वतन मक्का से निकाल दिया:

﴿إِذۡ أَخۡرَجَهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ ثَانِيَ ٱثۡنَيۡنِ﴾

जब इनकार करनेवालों ने उसे इस स्थिति में निकाला कि वह केवल दो में का दूसरा था। (अल-तौबह: 40)

इस प्रकार आपने दूसरे नगर में जाकर अपने प्रभु के संदेश प्रचार को पूर्ण किया।

बद्र युद्ध में आप मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की बड़ी संख्या में को देखते हैं और कहते हैं: मुझे लोगों का मरण स्थल दिखा दिया गया है। उहुद युद्ध में मुस्लिमों को चोट लागी, आप युद्ध के लिए ख़ैबर गए, खाई केयुद्ध में जमाअतें आपके विरुद्ध इकट्ठी हो गईं, फिर आप मक्का को विजय करने निकल पड़े, आपने खाई केयुद्ध के बाद कहा था: "अब हम उनपर आक्रमण करेंगे, वे हम पर आक्रमण नहीं कर सकेंगे।" (सही बुखारी) हुनैन युद्ध में मुस्लिमों को चोट लागी, फिर तबूक में रोमनों पर आक्रमण किया।

अल्लाह के रसूल ﷺ का दांत तोड़ा गया, आपका सिर फोड़ा गया, आपके चेहरे पर खून बहा, यहूदियों ने आप पर जादू किया, आपको ज़हर दिया गया, अत्यधिक भूख के कारण आपको पेट पर पत्थर बांधने पड़े, आपके घर की अस्मिता पर जघन्य आरोप लगाया गया, आपकी छह संतानें मृत्यु को प्राप्त हुईं और श्रीमती फ़ातिमा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को छोड़कर आपकी कोई संतान नहीं बची; लेकिन ये सब बातें आपको लोगों को ज्ञान और प्रकाश

से लाभान्वित करने से नहीं रोक पाईं।

अल्लाह ने दूतों के धैर्य और दृढ़ संकल्प की प्रशंसा की है, चुनांचे फ़रमाया:

﴿وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا۟﴾

और जब वे धैर्यवान रहे तो हमने उनमें से ऐसे इमाम बनाए जो हमारे आदेश से मार्ग दिखाते थे। (अल-सजदह: 24)

सहाबा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को उनके घरों से निकाला गया, लेकिन इससे कमज़ोर पढ़ कर उन्होंने धर्म के समर्थन से हाथ खड़े नहीं किए; इसलिए अल्लाह ने किसरा (चोसरो) और कैसर (सीज़र) के खज़ाने उनके हाथों में दे दिए। खाई के युद्ध में उन्हें ठंड और भूख लगती है, भय के मारे दिल गले तक आ जाते हैं, मगर अल्लाह के धर्म के प्रचार की खातिर वे इस पर सब्र कर लेते हैं।

सहाबा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के ऊपर एक भयंकर विपत्ति और पड़ी, और वह थी: प्यारे नबी ﷺ की मृत्यु, आपकी मृत्यु के प्रति उनकी उदासी अल्लाह की ओर बुलाने और उसके मार्ग में संघर्ष करने की राह में रुकावट बन कर खड़ी नहीं हुई; अत: वे अपने जीवन में प्यारे नबी ﷺ के मार्ग पर चलते रहे, प्रथम खलीफा श्री अबू-बकर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने श्री उसामा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की सेना को रवाना किया, धर्म विद्रोहियों से और ज़कात रोकने वालों से युद्ध किया, अतः अल्लाह ने इस्लाम को विजयी बनाया और उसे समस्त धर्मों के ऊपर कर दिया।

फिर हे मुस्लिमो!

अल्लाह का धर्म मज़बूत है और अल्लाह उसका और उसके अनुयायियों का समर्थक है, पवित्र प्रभु ने कहा:

﴿كَتَبَ ٱللَّهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِىٓ﴾

अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही विजयी होकर रहेंगे। (अल-मुजादलह: 21)

भले ही किसी काल में मुस्लिम कमज़ोर पड़ जाएं, परंतु अगर वे अल्लाह की ओर लौट आएंगे तो वह अवश्य उनकी मदद करेगा:

﴿إِن تَنصُرُوا۟ ٱللَّهَ يَنصُرْكُمْ﴾

यदि तुम अल्लाह का समर्थन करोगे तो वह तुम्हारा समर्थन करेगा। (मुहम्मद: 7)

यदि मुस्लिम किसी परिस्थिति में टूट भी जाएं; तो भी वही विजेता रहेंगे, भले ही वे हार जाएं। मोमिन की दुर्दशा हल्की और विच्छेदित होती है, जबकि काफ़िर की दुर्दशा गंभीर और निरंतर होती है, महामहिम प्रभु ने फ़रमाया:

﴿وَلَا تَهِنُواْ وَلَا تَحۡزَنُواْ وَأَنتُمُ ٱلۡأَعۡلَوۡنَ إِن كُنتُم مُّؤۡمِنِينَ﴾

हताश और दुखी न हो, यदि तुम ईमानवाले हो, तो तुम्ही उच्चतम रहोगे। (आल इमरान: 139)

कमज़ोरों पर विजय पाकर काफ़िरों (अविश्वासियों) की ख़ुशी उनके लिए अपमान है, महामहिम प्रभु का कथन है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يُحَآدُّونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓ أُوْلَٰٓئِكَ فِي ٱلۡأَذَلِّينَ﴾

निश्चय ही जो लोग अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं वे अत्यन्त अपमानित लोगों में हैं। (अल-मुजादलह: 20)

श्री इब्नुल-क़य्यिम (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: "काफ़िर को जो शक्ति और जीत मिलती है; वह ईमान वालों की तुलना में बहुत कम है, बल्कि, उस जीत के अंदर भी अपमान, टूट और हीनता होती है, भले ही प्रत्यक्ष में कुछ और प्रतीत हो।"

अल्लाह अविश्वासियों के अन्याय को कुछ छूट दे देता है ताकि उनके पाप और पीड़ा में वृद्धि हो।

मैं शापित शैतान से अल्ला की शरण में आता हूँ

﴿وَلَا يَحۡسَبَنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَنَّمَا نُمۡلِي لَهُمۡ خَيۡرٞ لِّأَنفُسِهِمۡۚ إِنَّمَا نُمۡلِي لَهُمۡ لِيَزۡدَادُوٓاْ إِثۡمٗاۚ وَلَهُمۡ عَذَابٞ مُّهِينٞ﴾

और यह ढ़ील जो हम उन्हें दिए जाते है, इसे अधर्मी लोग अपने लिए अच्छा न समझें। यह ढील तो हम उन्हें सिर्फ़ इसलिए दे रहे है कि वे गुनाहों में और अधिक बढ़ जाएं, और उनके लिए तो अत्यंत अपमानजनक यातना है। (आल-इमरान: 178)

अल्लाह मुझे और आपको पवित्र क़ुरआन के प्रति आशीर्वाद दे।।

दूसरा ख़ुतबा

अल्लाह की स्तुति है उसके एहसान पर, उसका धन्यवाद है उस की विशेष सहायता और कृपा पर, मैं अल्लाह की शान को महान मानते हुए गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई पूजनीय नहीं है और उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके भक्त और दूत हैं, उन पर, उनके परिवार पर और उनके साथियों पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद बना रहे।

हे मुस्लिमो!

शत्रुओं के साथ परीक्षा: ईमान की समीक्षा, पुण्य में वृद्धि, बुरे कर्मों का प्रायश्चित, शहीदों का चयन, धर्म की विजय, अल्लाह की ओर मुस्लिमों की वापसी और धर्म शत्रुओं के षड्यंत्र का पर्दा फ़ाश होना है।

मुस्लिमों पर आने वाली हर विपत्ति; उनके लिए एक जागृति है, जिसमें खुद की समीक्षा करने, अल्लाह के पास लौटने, आज्ञापालन करने, दुर्बलता और मतभेद के कारणों को दूर फेंकने और अल्लाह से जीत के लिए प्रार्थना करने की प्रेरणा होती है।

तो जान लो कि अल्लाह ने तुम्हें अपने पैग़ंबर पर आशीर्वाद और शांति भेजने का आदेश दिया है।।।

विषयसूची

प्रस्तावना 5

अल्लाह पर ईमान 6

बंदे का अपने रब को पहचानना **7**

अल्लाह से डरना 18

फ़रिश्तों पर ईमान 30

फ़रिश्तों पर ईमान 31

किताबों पर ईमान 39

महान क़ुरआन 40

क़ुरआन की महानता 46

रसूलों पर ईमान 62

नबी और रसूल 63

पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ के अधिकार 72

अल्लाह और उसके नबी ﷺ की बात मानना 83

अंतिम दिन पर ईमान 95

क़यामत की निशानियाँ 96

काना दज्जाल 107

अंतिम दिन: प्रतिफल का दिन 115

क़यामत की भयावहता 123

क़दर (नियति) पर ईमान 133

तवक्कुल (निर्भरता) 134

अल्लाह के प्रति अच्छा विचार 148

भलाई अल्लाह के निर्णय में है 162
विपत्तियों पर धैर्य रखना 172
विपत्तियों के सामने दृढ़ता 182
विषयसूची 192

मुअस्ससा तलिबिल-इल्म

लिन्नशर वत्तउज़ी

00966506090448

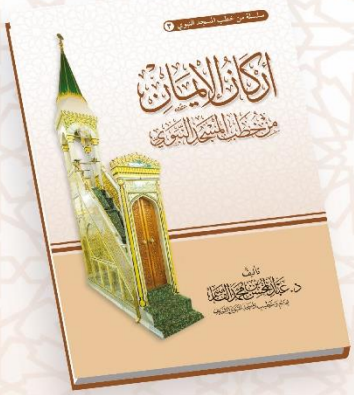

:हमारे कुछ और प्रकाशन

मस्जिद ए नबवी के उपदेशों से

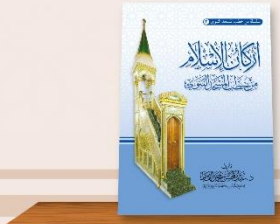

ईमान के स्तम्भ;
मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

तौहीद

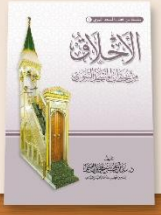

नैतिकता;
मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से

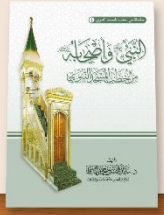

पैग़ंबर मुहम्मद और आपके सहाबा;
मस्जिद-ए-नबवी के उपदेशों से